जुज़ रफ़उल यदैन

इमाम बुखारी रह॰ की
और
जुज. रफ़उल यदैन

अल्लामा अश्शैख तक़ीयुद्दीन रह॰

सम्पादन
खाालिद गरजाखी

जुज़ रफ़उल यदैन

इमाम बुख़ारी रह॰ की

और

जुज़ रफ़उल यदैन

अल्लामा अश्शैख़ तक़ीयुद्दीन रह॰ की

सम्पादन

ख़ालिद गरजाखी

नाम किताब : जुज़ रफ़युल यदैन
लेखक : इमाम बुख़ारी
प्रकाशन : 2017 ई॰
संख्या :
ज़ेरे निगरानी सैयद शौकत सलीम
कम्पोज़िंग :
कीमात :

विषय सूची

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

भूमिका

(ख़ालिद गरजाखी)

अलहम्दु लिल्लाहि व कफ़ा व सलामुन अला इबादिहिल्लज़ी नलमुसतफ़ा। अम्मा बाद

इमाम बुख़ारी रह. का मक़ाम

इमाम मुहम्मद बिन इस्माईल बिन इबराहीम अलजुअफ़ी अलबुख़ारी रह. पूरे तौर पर हदीस के इमाम हैं। और हदीस के फ़िक़्ह के बादशाह हैं और उन की किताब सहीह बुख़ारी पूरे तौर पर क़ुरआन के बाद सबसे ज़्यादा सहीह मशहूर है।

शाह अब्दुल अज़ीज़ रह. अपने रिसाला बुस्तानुल मुहद्दिसीन में लिखते हैं कि इमाम बुख़ारी बचपन में नाबीना हो गए थे, उनकी मां बहुत गिड़गिड़ा कर दुआएं करती रही । एक दिन हज़रत इबराहीम अलैहि. को ख़्वाब में देखा फ़रमा रहे थे कि अल्लाह तआला ने तेरे रोने-धोने की वजह से तेरे पुत्र को बीनाई अता कर दी है। सचमुच सुबह को उन्हें बीना पाया और उनको साथ ले जाकर मदरसा में दाख़िल करा दिया। अल्लाह तआला ने उन्हें ग़ज़ब का हाफ़िज़ा दिया था।

वहाँ पर क़ुरआन के हिफ़्ज़ के साथ-साथ जो भी हदीस सुनते याद कर लेते यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने उन्हें भरपूर इल्म से नवाज़ा। एक दिन बुख़ारा में एक आलिम जो दाख़िली के नाम से मशहूर थे तशरीफ़ लाए इमाम साहब भी उसके पास जाने लगे। एक दिन दाख़िली हदीस बयान कर रहे थे। "सुफ़ियान अन अबिज़्ज़ुबैर अन इबराहीम" तो इमाम बुख़ारी बोल उठे अबुज़्ज़ुबैर ने इबराहीम से कोई रिवायत नहीं की है। दाख़िली ने इमाम बुख़ारी को कहा तो इमाम साहब रह. ने फ़रमाया आप अपने नुस्ख़े से रुजू फ़रमा लें। जब दाख़िली ने अपने नुस्ख़े को

देखा तो इमाम बुख़ारी को बुलाया और पूछा तो फिर बताओ कि अस्ल इबारत (वाक्य) क्या है? तो इमाम साहब रह. ने कहा अस्ल इस तरह है "सुफ़ियान अनिज़्ज़ुबैर बिन अदी अन इबराहीम" दाख़िली हैरान रह गया क्योंकि हक़ीक़त में वह इबारत इसी तरह थी, उस समय इमाम साहब रह. की उम्र ग्यारह वर्ष थी। और 16 वर्ष की उम्र तक इब्ने मुबारक और वकीअ की भी तमाम किताबें याद कर ली थीं।

फिर वह अपनी मां और भाई के साथ हज को गए, भाई और मां तो वापस आ गए लेकिन इमाम साहब वहीं इल्म हासिल करने में लग गए।

इमाम साहब रह. के एक साथी हामिद बिन इस्माईल कहते हैं कि इमाम साहब उस्ताद के सामने क़लम और दवात लेकिर न बैठते थे। उस्ताद कहते थे कि तुम क्या हासिल करते हो कोई काग़ज़ क़लम दवात तो तुम साथ नहीं रखते। आख़िरकार एक दिन तंग आकर उनकी परिक्षा लेना शुरू की, क़लम और दवात वालों को भी साथ बैठा दिया। अतः पंद्रह हज़ार हदीसें इमाम साहब रह. ने ज़बानी सुना दीं और लिखने वालों की लिखावट में ग़लतियाँ थीं इमाम साहब रह. की याद दाश्त में ग़लती न थी।

इमाम बुख़ारी रह. नबी सल्ल. की सुन्नत के साथ मौहब्बत करने वाले थे और रसूलुल्लाह सल्ल. की सुन्नत की हिमायत में ही लिखते रहे। आप की सहीह बुख़ारी का तो एक-एक अध्याय सुन्नत की तरफ़दारी और बिदअतों के रद्द में है। यही वजह है कि इमाम साहब ने रफ़अ यदैन (दोनों हाथों को उठाना), इमाम के पीछे फ़ातिहा पढ़ना वग़ैरह मसाइल पर भी अलग रिसाले लिखे।

रफ़अ यदैन (दोनों हाथों को उठाना) और इमाम साहब रह.

इमाम बुख़ारी रह. का रफ़अ यदैन के सिलसिले में मसलक (मत) है कि किसी एक भी सहाबी से सही सनद के साथ यह साबित नहीं हो सकता कि वह रफ़अ यदैन न करता हो।

सबसे पहले हज़रत अली रज़ि॰ की हदीस पेश की है और व्याख्या की कि रफ़अ यदैन नमाज़ में चार बार करना आप सल्ल॰ से साबित है शुरू नमाज़ में, रुकूअ में जाते हुए, रुकूअ से उठते हुए और दो रकअतों से उठते समय। हज़रत अली रज़ि॰ की हदीस नं॰1 और नं॰ 9 आगे आ रही हैं।

इसके बाद इमाम साहब रह॰ ने सतरह असहाब के नाम पेश किए हैं और आगे फिर और भी नामों का इज़ाफ़ा फ़रमाया है। जो कि निम्नलिखित हैं—

(1) अबु क़तादा अन्सारी, (2) अबु उसैद साइदी, (3) मुहम्मद बिन मुसलमा, (4) सहल बिन सअद, (5) अब्दुल्लाह बिन उमर, (6) अब्दुल्लाह बिन अब्बास, (7) अनस बिन मालिक, (8) अबू हुरैरह, (9) अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस, (10) अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर, (11) वाइल बिन हिज्र, (12) मालिक बिन हुवैरिस, (13) अबू मूसा अशअरी, (14) अबू हुमैद साइदी, (15) उमर बिन ख़त्ताब, (16) अली बिन अबी तालिब और (17) उम्मे दरदा रज़ियल्लाहु अन्हुम। आगे इमाम साहब फ़रमाते हैं (हदीस नं॰ 27 के बाद) कि यह हदीस हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि॰ हज़रत अबु हुरैरह (18) हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (19) हज़रत उमैर अल्लेसी, हज़रत इब्ने अब्बास और हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि॰ से भी साबित है। और हदीस नं॰ 18 में आता है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास, इब्ने ज़ुबैर (20) अबू सईद ख़ुदरी और जाबिर रज़ि॰ से भी साबित है कि वे रफ़अ यदैन करते थे। आगे किताब में जिस जगह इन सहाबा का नाम आएगा वहाँ पर उनकी हदीसों के दूसरे हवाले भी ज़िक्र किए जाएँगे बल्कि दूसरे सहाबा किराम जो कुल पचास के क़रीब हैं सब का ज़िक्र हवाले के साथ आगे आएगा।

अब्दुल्लाह बिन उमर की हदीस लगभग मुतवातिर है इसी लिए अल्लामा सुयूती रह॰ ने इस मसले को अपने रिसला अहादीसुल मुतवातिरह में ज़िक्र किया है इसी किताब में इब्ने उमर की हदीस नं॰ 2, 12, 13, 14, 15, 26, 28, 40, 42, 47, 48, 49, 50, 51, 52, 53, 58, 62, 64, 73, 77, 78, 79, 80, 81, 104 में आ रही है जिसमें

आगे तख़रीज (व्याख्या) में बताया जाएगा कि सचमुच यह हदीस मुतवातिर है और हर हदीस की किताब में आती है।

अबू हुमैद साइदी की हदीस नं॰ 3, 4, 5, 6 आ रही है जिस में दस सहाबा की मजलिस (सभा) में रफ़अ यदैन का ज़िक्र हुआ तो उन सब ने पुष्टी की उनमें हज़रत अबू क़तादा, अबू उसैद, सहल बिन सअद साइदी और मुहम्मद बिन मुसलमा का ज़िक्र है।

मालिक बिन हुवैरिस की हदीस नं॰ 7, 54, 55, 66, 102 पर आ रही है।

हज़रत अनस की हदीन नं॰ 8, 20, 65, 74, 101 पर आ रही है।

वाइल बिन हिज्र की हदीस नं॰ 10, 23, 27, 31, 70, 71, 72 पर आ रही है।

हज़रत इब्ने अब्बास का ज़िक्र नं॰ 18, 21, 28, 56, 61 में आता है और मुअल्लक़न भी ज़िक्र है।

हज़रत इब्ने ज़ुबैर का ज़िक्र नं॰ 18, 28, 61 में आता है।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी का ज़िक्र नं॰ 18, 61 में आता है।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह का ज़िक्र नं॰ 18, 61 में आता है और मुअल्लक़न भी ज़िक्र है।

हज़रत अबू हुरैरह की हदीस नं॰ 22, 57, 76 पर आ रही है।

हज़रत उम्मे दरदा का असर नं॰ 24, 25 में है।

रफ़अ यदैन पर इज्माअ (सहमति)

मौलाना अब्दुल हई साहब हनफ़ी रह. ने मौत्ता इमाम मुहम्मद के हाशिए पर फ़रमाया है कि रफ़अ यदैन करने के रावी सहाबा में से एक बड़ी जमाअत है और रफ़अ यदैन न करने में सिर्फ़ इब्ने मसऊद से रिवायत है, वह भी सही नहीं है।

और अल्लामा सिंधी हनफ़ी रह. ने नसाई के हाशिए पर फ़रमाया है कि रफ़अ यदैन को जो लोग मनसूख़ (निरस्त) कहते हैं वह ग़लत है, रफ़अ यदैन सुन्नते सहीहा साबिता मुतवातिरह है।

इमाम बुख़ारी रह. ने इर्शाद फ़रमाया है कि किसी एक सहाबी से भी रफ़अ यदैन न करना साबित नहीं है और जिनसे लोग रफ़अ यदैन न करना बयान करते हैं वह सनद के एतिबार से सही नहीं है।

अल्लामा सुयूती 'अल अज़हारुल मुतनासिरह फ़ी अख़बारिल मुतवातिरह' में फ़रमाते हैं। बुख़ारी मुस्लिम में 1. इब्ने उमर और 2. मालिक बिन हुवैरिस की हदीस आती है और मुस्लिम में 3. वाइल बिन हिज्र से और सुनने अरबआ में 4. हज़रत अली से और अबू दाऊद में 5. सहल बिन सअद, 6. इब्ने ज़ुबैर, 7. इब्ने अब्बास, 8. मुहम्मद बिन सलमा, 9. अबू उसैद, 10. अबू क़तादा और 11. अबू हुरैरह से और इब्ने माजा में 12. अनस, 13. जाबिर और 14. उमैर लैसी से और मुस्नद अहमद में 15. हकीम बिन उमैर से और बैहक़ी में 16. अबू बक्र सिद्दीक़ और 17. बरा बिन आज़िब से और दारे क़ुली में 18. हज़रत उमर फ़ारूक़ और 19. अबू मूसा अशअरी से और तबरानी में 20. उक़बा बिन आमिर और 21. मुआज़ बिन जबल से हदीस आती है।

अल्लाम इब्ने जोज़ी रह. ने 'तज़किरतुल मौज़ूआत' भाग 2 पृष्ठ 98 में फ़रमाया है जो रिवायत रफ़अ यदैन न करने के सिलसिले में पेश की जाती हैं सब की सब या तो मौज़ूअ (गढ़ी हुई) हैं या बहुत कमज़ोर हैं और उन सहाबा का ज़िक्र फ़रमाते हैं जिन से रफ़अ यदैन का सुबूत है।

अतः फ़रमाते हैं "इसी सुन्नत को अल्लाह के रसूल सल्ल. से 1. अबु बक्र, 2. उमर, 3. उसमान, 4. अली, 5. अब्दुर्रहमान बिन औफ़, 6. हुसैन बिन अली, 7. मुआज़ बिल जबल, 8. अम्मार बिन यासिर, 9. अबू मूसा, 10. इमरान बिन हुसैन, 11. इब्ने उमर, 12. अब्दुल्लाह बिन अम्र, 13. इब्ने अब्बास, 14. जाबिर, 15. अनस, 16. अबू हुरैरह, 17. मालिक बिन हुवैरिस, 18. सहल बिन सअद, 19. बुरैदह, 20. वाइल बिन हिज्र, 21. उक़बा बिन आमिर, 22. अबू सईद ख़ुदरी, 23. अबू हुमैद साइदी, 24. अबू उमामा बाहिली, 25. अम्र बिन क़तादा और 26. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने रिवायत किया है।

और अल्लामा इब्ने हज़्म ने महल्ली पृष्ठ 79, 80 में और फ़रमाते हैं "हमने आपके इस रफ़अ यदैन के नमाज़ में करने को 1. जाबिर बिन अब्दुल्लाह, 2. अबू सईद, 3. अबू दरदा, 4. उम्मे दरदा, 5. इब्ने अब्बास, 6. अबू मूसा अशअरी से रिवायत किया है और यह रफ़अ यदैन 7. अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर, 8. अबू हुरैरह, 9. नौअमान बिन अबी अय्याश और तमाम सहाबा करते थे।" फिर आगे ताबईन रह. के नाम गिनाए जाते हैं।

मौलाना वहीदुज़्ज़माँ साहब रह. 'तसहीलुल क़ारी' भाग 3 पृष्ठ 774 में रफ़अ यदैन की हदीसें बयान करने के बाद फ़रमाते हैं कि "सारे सहाबा जो रफ़अ यदैन के रावी हैं यह हैं : 1. अब्दुल्लाह बिन उमर, 2. मालिक बिन हुवैरिस, 3. अबू हुमैद, 4. वाइल बिन हिज्र, 5. अली बिन अबी तालिब, 6. अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर, 7. अनस बिन मालिक, 8. अबू हुरैरह, 9. जाबिर बिन अब्दुल्लाह, 10. अबू मूसा, 11. उमर बिन ख़त्ताब, 12. उमैर बिन क़तादा, 13. अब्दुल्लाह बिन अब्बास, 14. मुआज़ बिन जबल, 15. बरा बिन आज़िब, 16. अबू बक्र सिद्दीक़, 17. उक़बा बिन आमिर, 18. अबू उसैद, 19. सहल बिन सअद, 20. मुहम्मद बिन मुसलमा, 21. हसन बिन अली, 22. ज़ैद बिन साबित, 23. अबू मसऊद, 24. सलमान, 25. अबू सईद, 26. आइशा, 27. बुरैदा, 28. अम्मार, 29. उम्मे दरदा, 30. उस्मान, 31. तलहा, 32. ज़ुबैर, 33. सअद, 34. सईद, 35. अब्दुर्रहमान बिन औफ़, 36. अबू उबैदा, 37.

उबैय बिन कअब, 38. अब्दुल्लाह बिन मसऊद, 39. ज़ियाद बिन हारिस अस्सदाई, 40. अबु क़तादा, 41. अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस, 42. अबू उमामा और 43. एक आराबी (देहाती)।

इनके अलावा 44. अबान मुहारबी का ज़िक्र 'अल इसाबा' में आता है, 45. अबू दरदा का ज़िक्र अल्लामा इब्ने हज़्म रह. से गुज़र चुका है। 46. हुसैन बिन अली, 47. इमरान बिन हुसैन और 48. क़तादा का ज़िक्र इब्ने जोज़ी के हवाले में आ चुका है। 49. हकीम बिन उमैर का ज़िक्र मुस्नद अहमद तालीक़ुल मुमजद में हवाले के साथ आता है। 50. अब्दुल्लाह बिन जाबिर का ज़िक्र इमाम बैहक़ी भाग 2 पृष्ठ 75 में आता है और 51. फ़लतान बिन आसिम का ज़िक्र अबू नईम ने अख़बारे इसबिहान में किया है। यह तो रफ़अ यदैन के रावी (उल्लेखकर्ता) और रफ़अ यदैन करने वालों के नाम हैं लेकिन न करने वाले किसी एक सहाबी से भी सही सनद के साथ साबित नहीं। तसहीलुल क़ारी वाले अल्लामा सुब्की रह. ने भी अपने जुज़ में बयान फ़रमाए हैं।

रफ़अ यदैन न करने की दलीलों का विश्लेषण (तजज़िया)

इमाम साहब रह. ने रफ़अ यदैन न करने वाले लोग जो दलीलें पेश करते हैं उनका भी विश्लेषण किया है। हज़रत जाबिर बिन समुरा रज़ि. की हदीस नं. 37, 38 में ज़िक्र करके फ़रमाया है कि यह एक प्रकार का धोखा है और इससे रफ़अ यदैन न करने के सिलसिले में दलील लेना इल्म वालों के लायक़ नहीं है।

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. की हदीस जैसा कि ज़िक्र हो चुका है नं. 32 ज़िक्र करके इसकी अस्ल वास्तविकता बयान फ़रमा कर जो सही हदीस है उसका ज़िक्र किया है।

हज़रत बरा रज़ि. की हदीस नं. 34, 35, 36 में ज़िक्र करके फ़रमाया है कि इस रिवायत में भी न करने का ज़िक्र है और ज़िक्र न करना कोई दलील नहीं होती क्योंकि अगर इस तरह तलसीम किया जाए तो फिर सिर्फ़ रफ़अ यदैन करके नामज़ में खड़े होने से तो नामाज़ नहीं हो जाती क्योंकि इसमें न रुकूअ का ज़िक्र है न सजदों का।

इसी तरह हज़रत अली रज़ि. से भी नं. 11 में एक असर (हदीस) है इसमें सिर्फ़ न करने का ही ज़िक्र है और हज़रत इब्ने उमर से भी नं. 16, 103 में एक असर ज़िक्र है इसमें भी सिर्फ़ न करने का ही ज़िक्र है।

इसके अलावा हज़रत अबू हुरैरह से भी इस प्रकार की एक हदीस बयान की जाती है। मैं थोड़ा विस्तार से उनकी दलीलों का विश्लेषण पेश किए देता हूँ।

अबू हुरैरह की हदीस

रफ़अ यदैन न करने वाले हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. की हदीस भी पेश करते हैं बल्कि इसको रफ़अ यदैन के नस्ख़ (निरस्त) की दलील में

पेश करते हैं। अतएव इसमें सिर्फ़ रफ़अ यदैन का तरीक़ा बयान है इसके शब्द हैं رفع يديه مداً कि हाथ फैला कर रफ़अ यदैन करते इसमें इनकी कोई दलील नहीं है। अस्ल में हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ से चार प्रकार की हदीसें मरवी हैं। एक तो हज़रत अबू हुमैद साइदी के रफ़अ यदैन की हदीस दस सहाबा के सामने पेश करना इनमें हज़रत अबू हुरैरह भी थे जिन्होंने इसकी पुष्टी की। (अबू दाऊद के हवाले से)

दूसरी वह हदीस है जिसमें रफ़अ यदैन का तरीक़ा बयान किया है कि आप रफ़अ यदैन में हाथ फैलाया करते थे।

तीसरी हदीस जिसमें हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ शिकवा करते हैं कि बहुत सी चीज़ें जो आप सल्ल॰ के ज़माने में थी लोगों ने सिर्फ़ सुस्ती और काहिली की वजह से छोड़ गए हैं। इसमें रफ़अ यदैन का भी ज़िक्र है। यानी लोग पहली रफ़अ यदैन भी छोड़ गए थे। हालाँकि यह मुतनाज़ेअ फ़ी (विवादित मसला) नहीं है।

चौथी हदीस कि आप कन्धों तक रफ़अ यदैन करते, शूरू नमाज़ में भी और रुकूअ में जाते हुए भी और रुकूअ से उठते हुए भी।

(अबू दाऊद)

जिस हदीस में रफ़अ यदैन का तरीक़ा बयान किया है वह सिर्फ़ पहली बार करने और बाद में न करने की दलील नहीं है। क्योंकि हदीस में किसी चीज़ के ज़िक्र न होने का यह अर्थ नहीं होता कि वह चीज़ है ही नहीं जैसाकि इस हदीस में रुकूअ और सजदे का भी ज़िक्र नही।

दूसरे यह भी मालूम हुआ कि कुछ चीज़ें जो लोगा सुस्ती से छोड़ देते हैं यह नस्ख़ (निरस्त) नहीं होता जैसाकि आज कल लोगा सुस्ती की वजह से छोड़ देते हैं। क्योंकि आज कल अहनाफ़ रफ़अ यदैन को रद्द करन के लिए इसी प्रकार की दलीलें पेश करते हैं।

इब्ने उमर रज़ि॰ की हदीस

अब्दुल्लाह इब्ने उमर की हदीस पेश की जाती है मुदव्वनह और मुस्नद अहमद के हवाले के साथ हालाँकि इस में भी सिर्फ़ पहली बार के

रफ़अ यदैन का ज़िक्र है, बाक़ी का नहीं है बल्कि रुकूअ और सजदे तक का भी ज़िक्र नहीं है और यह स्पष्ट है कि किसी चीज़ के ज़िक्र न होने से मुराद यह नहीं होता कि वह है ही नहीं।

मुस्नद हुमैदी और मुस्नद अबू उवाना से भी हदीस को ग़लत तरीक़े से पेश करके साबित किया जाता है। हालाँकि यह दलीलें नहीं हैं अब्दुल्लाह इब्ने उमर की हदीस मुतवातिर है। दुनिया में हदीस की कोई भी ऐसी किताब नहीं जिसमें यह हदीस न आती हो। मैंने अपने रिसाला जुज़ रफ़उल यदैन में इस हदीस की सतत्तर (77) सनदें पश की हों। स्पष्ट है कि अगर एक तरफ़ एक आदमी हो और दूसरी तरफ़ सतत्तर (77) गवाह हूँ तो एक आदमी चाहे कितना भी अल्लाह का भय रखने वाला हो उसकी बात ग़लत ही समझी जाएगी। क्योंकि ग़लती इन्सान का स्वभाव है।

इब्ने उमर की एक हदीस बैहक़ी के हवाले से पेश की जाती है जिसमें ज़िक्र है कि पहली बार किया फिर न किया।

आप सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया है من كذب علي متعمدا فليتبوأ مقعده من النار कि जो व्यक्ति मुझ पर ऐसी बात बाँधे कि मैंने न कही हो और वह कहे कि रसूल सल्ल॰ की हदीस है वह जहन्नमी है। इसी लिए मुहद्दिसीन ने मौज़ूआत की अलग किताबें लिख दी हैं ताकि लोग उन्हें हदीस न समझें बल्कि उनको ठुकराएँ।

आज चौदहवीं शताब्दी में ऐसे लोग भी पैदा हो चुके हैं जो आलिम भी कहलाते हैं और उन्हें पता है कि इसके आगे इमाम बैहक़ी ने स्पष्ट भी कर दी है कि هو مقلوب موضوع باطل कि झूठी हदीस आप सल्ल॰ पर आरोप है लोगों ने झूठ बनाई हुई है और जानने के बावजूद इसे हदीस कह रहे हैं फिर अल्लाह तआला से डरते भी नहीं हैं और इसे हदीस कह रहे हैं मालूम नहीं कि वे जहन्नम को समझते-बूझत क्यों अपनाना चाहत हैं अल्लाह तआला उन्हें समझ-बूझ दे।

हज़रत अली रज़ि॰

हज़रत अली रज़ि॰ से भी एक हदीस इस तरह की है कि पहली बार रफ़अ यदैन किया फिर न किया यह हदीस होने के बावजूद हज़रत अली रज़ि॰ से पूरे तौर पर नहीं पहुँचा। ख़ास तौर पर जबकि हज़रत अली रज़ि॰ से मरफ़ूअ हदीस अस्हाबे सुनन ने बयान की है और इसे हज़रत इब्ने उमर की हदीस का सा मक़ाम दिया है।

हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ि॰

हज़रत बरा बिन आज़िब से भी सिर्फ़ पहली बार रफ़अ यदैन की हदीस बयान की जाती है यद्यपि वह भी ज़ईफ़ तरीन हदीस है। मुहद्दिसीन ने साथ ही इसकी कमज़ोरी भी बयान कर दी है और फिर बरा बिन आज़िब से बैहक़ी में सही सनद के साथ मौजूद है कि आप शुरू नमाज़ में भी और रुकूअ में जाते हुए और रुकूअ से उठते हुए भी रफ़अ यदैन किया करते थे।

जाबिर बिन समुरह रज़ि॰

हज़रत जाबिर बिन समुरह रज़ि॰ से मरवी "इज़्नाबु ख़ैलिन शुमुसिन" वाली हदीस पेश करते हैं यद्यपि सारे मुहद्दिसीन ने इस हदीस को सलाम के अध्याय में ज़िक्र किया है जिसे बेचारे अहनाफ़ ज़बरदस्ती रफ़अ यदैन पर ले जाते हैं। हालाँकि वह सलाम के अध्याय में हैं, रफ़अ यदैन के अध्याय में नहीं हैं। इसी लिए इमाम बुख़ारी रह॰ ने फ़रमाया कि जो व्यक्ति इस हदीस से रफ़अ यदैन के न होने पर दलील लेता है वह जाहिल है अर्थात इस से दलील लेना आलिमों की शान के योग्य नहीं है।

और अगर मान लें कि इस से रफ़अ यदैन निरस्त हुई है तो फिर पहली बार रफ़अ यदैन कहाँ से आ गई, यह बेचारे इतना भी नहीं समझते कि सारे मुहद्दिसीन के ख़िलाफ़ इसे रफ़अ यदैन के रद्द में पेश करते हैं। इतना मालूम नहीं कि इससे सारा ही भटटा गुल हो जाता है

फिर यह पहली रफ़अ यदैन भी साबित नहीं कर सकते।

इब्ने मसऊद रज़ि॰ की हदीस

अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि॰ की हदीस तमाम अहनाफ़ रफ़अ यदैन न होने में बयान करते हैं हालाँकि सारे मुहद्दिसीन ने इस रिवायत को ज़ईफ़ कहा है यानी इब्ने मसऊद रज़ि॰ की जिस रिवायत رفع يديه مرة واحدة يا ثم لا يعود के शब्द हैं उस हदीस को जिस मुहद्दिस ने रिवायत किया है साथ ही उसकी कमज़ोरी भी बयान कर दी है।

निश्चय ही अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद की सही हदीस अबू दाऊद और जुज़ बुख़ारी में इस तरह है—علمنا رسول الله صلى الله عليه وسلم فقام فكبر ورفع يديه ثم ركع فطبق يديه فبلغ ذالک سعداً فقال صدق اخی الابل قد كنا نفعل ذالک فی اول الاسلام ثم امرنا بهذا يعنى الامساک على الركبتين कि अल्लाह के रसूल सल्ल॰ ने हमको नमाज़ सिखाई फिर नमाज़ में क़ियाम किया फिर तकबीर कही और रफ़अ यदैन करने के बाद रुकूअ में चले गए और अपने दोनों हाथ घुटनों में दे दिए। हज़रत सअद रज़ि॰ (जो उन दस सहाबा में हैं जिन्हें दुनिया में जन्नत की ख़ुशख़बरी दी गई थी) ने सुना तो कहा मेरे भाई यानी इब्ने मसऊद ठीक कह रहे हैं। हम इस्लाम के शुरू में घुटनों में हाथ देकर ही रुकूअ किया करते थे बाद में हमें रुकूअ में घुटनों पर हाथ रखने का हुक्म दे दिया गया था।

अर्थात हज़रत सअद ने इब्ने मसऊद की हदीस जिस में रुकूअ में जाते हुए रफ़अ यदैन करने का ज़िक्र है इसके बाद रुकूअ में ततबीक़ करने का ज़िक्र है। ततबीक़ का खंडन कर दिया है और रफ़अ यदैन का खंडन नहीं किया है। मानो दोनों सहाबी रफ़अ यदैन के कहने और करने वाले थे। यही वजह है कि हज़रत सअद ने रफ़अ यदैन का खंडन नहीं किया मगर ततबीक़ का खंडन किया है।

इसी लिए इमाम बुख़ारी ने दावा किया है कि किसी एक सहाबी से भी यह बात पूरे तौर पर साबित नहीं हुई कि वह रफ़अ यदैन न करता हो।

और अल्लामा इब्ने तैमिया रह. ने 'मिन्हाजुस्सुन्नह' में फ़रमाया हैं– من الاحاديث المكذوبة الموضوعة على رسول الله صلى الله عليه وسلم और इब्ने क़ैयिम रह. के शब्द 'अल मनार' में है– وذالک المنع من رفع اليدين عند الركوع والرفع منه كلها باطلة على رسول الله صلى الله عليه وسلم لا يصح منها شئى كحديث ابن مسعود الخ कि रफ़अ यदैन से रोकने वाली सारी हदीसें ग़लत और अल्लाह के रसूल सल्ल. पर आरोप है इनमें से कोई भी सही नहीं है जैसे अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद की हदीस है।

और अल्लामा बैहक़ी ने 'ख़िलाफ़ियात' में इससे भी स्पष्ट हदीस बयान की है– عن علقمة عن ابن مسعود عن النبى صلى الله عليه وسلم فى رفع اليدين عند الركوع الرفع منه كما ذكره ابن الملقن فى البدر المنير بتخريج احاديث الرافعي الكبير कि इब्ने मसऊद से रुकूअ में जाते और रुकूअ से उठते हुए भी रफ़अ यदैन साबित है जैसाकि इब्ने मुलक़्क़िन ने 'बदरे मुनीर' में ज़िक्र किया है।

इब्ने अब्बास रज़ि.

इब्ने अब्बास से एक हदीस बयान की जाती है لاترفع الايدى الا فى سبع مواطن कि सात जगह के अलावा रफ़अ यदैन नहीं करना चाहिए। तो इस पर अहनाफ़ का भी अमल नहीं है क्योंकि वह इसके अलावा रफ़अ यदैन करते हैं। मान लें कि अहनाफ़ इसके अलावा पाँच जगह पर रफ़अ यदैन करते हैं तो अहले हदीस छह जगह कर लेते हैं यानी दोनों के यहाँ अमल के योग्य न रही।

नतीजा

यह कुल कायनात थी अहनाफ़ की कि कुछ सहाबा किराम के नाम पेश करते हैं जो रफ़अ यदैन न करने में बयान किए जाते हैं। यद्यपि इनमें रिवायत मौज़ूअ भी है और ज़ईफ़ भी यानी इनमें एक भी सही सनद से साबित नहीं है। इसके मुक़ाबिले में अहले हदीस की दलीलों में साहबा की एक बड़ी जमाअत है अधिकांश की वे हदीसें सिहाहे सित्ता की हैं बल्कि अब्दुल्लाह बिन उमर की हदीस को तो मुतवातिर भी कहा गया है।

अंतिम नमाज़ तक रफ़अ यदैन

अहनाफ़ की तरफ़ से यह भी एतिराज़ होता है कि आख़िरी नमाज़ का रफ़अ यदैन के साथ साबित होना चाहिए। इन अल्लाह के बन्दों को इतनी समझ नहीं आती कि रफ़अ यदैन के न होने का तो सुबूत ही सेहत को नहीं पहुँचता तो एतिराज़ क्यों किया या तो रफ़अ यदैन न होने में सिहाहे सित्ता की हदीस हो या फिर आप ही कह दें कि फलाँ नमाज़ आप की अंतिम नमाज़ों में से थी जिसमें रफ़अ यदैन नहीं किया तो भी कुछ बात है वरना हम तो ख़ुशी के साथ यह साबित करने को तैयार हैं कि आप की अंतिम नमाज़ तक आपने रफ़अ यदैन किया है। यद्यपि मैंने जुज़ रफ़अ यदैन में यह चीज़ें वज़ाहत से बयान कर दी हैं फिर भी दोबारा गुज़ारिश है और आप लोगों को चाहिए कि इसे ग़ौर से पढ़ें।

मालिक बिन हुवैरिस रज़ि.

हज़रत मालिक बिन हुवैरिस सन 9 हिजरी में यानी आप सल्ल. के अंतिम जीवन में आप के पास तशरीफ़ लाए। इसके लगभग डेढ़ वर्ष बाद आप ने वफ़ात पाई। हज़रत मालिक कहते हैं कि हम लगभग बीस दिन आप के पास ठहरे फिर हमें अपने घरों को जाने की इच्छा हुई तो आप ने हमें जाते समय कुछ हिदायात दीं ताकि हम जाकर पिछले लोगों को बताएँ और फ़रमाया कि जिस तरह मुझे नमाज़ पढ़ते देखा इसी तरह पढ़ना। यद्यपि मालिक बिन हुवैरिस आप के हुक्म के मुताबिक़ जाकर लोगों को नमाज़ सिखाते और रफ़अ यदैन करके दिखाते कि इस तरह पढ़ा करो।

क्या अल्लाह के रसूल सल्ल. ने उनको अंतिम सन्देश इस लिए दिए थे कि इसमें कुछ दिनों के बाद संशोधन करना था जबकि इस जमाअत का दूसरी बार आने का ज़िक्र ही नहीं। विचार करने योग्य बात

यह है कि सन 9 हिजरी का सन ही जमाअतों के आने का वर्ष था जबकि तमाम इलाक़ों में सन्देश भेजते रहे और यह एक सच्चाई है कि इसके बाद किसी मसले में संशोधन साबित नहीं है।

वाइल बिन हिज्र रज़ि॰

वाइल बिन हिज्र रज़ि॰ दो बार मदीना तशरीफ़ लाए पहली बार तो 9 हिजरी में दूसरी जमाअत की तरह उनकी जमाअत भी आई और इस लिए कि वाइल अपने क़बीले के सरदार और नवाब थे इस लिए वह भी अपनी जमाअत के साथ आए और दूसरी बार सिर्फ़ नमाज़ देखने के लिए डेढ़ वर्ष बाद आए और उस समय आप हज की तैयारियों में थे। इस तरह वाइल बिन हिज्र भी आप के साथ हज को तशरीफ़ ले गए जैसा मुस्नद अहमद में आप से हदीस मरवी है—ان النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم اتی بدلو من ماء زمزم فتمضمض فمج فیہ اطیب من المسک او قال مسک कि आप सल्ल॰ के पास ज़मज़म का डोल पेश किया गया और आप सल्ल॰ ने इस से कुल्ली की तो कुल्ली का पानी मुँह मुबारक से फेंका तो ऐसी ख़ुशबू फैल गई जैसे कस्तूरी महक रही है। तो मानो हज़रत वाइल ने आप सल्ल॰ के साथ हज किया और हज के ख़ुतबे पर ही आयत— الیوم اکملت لکم دینکم و اتممت علیکم نعمتی का अवतरण हुआ। मानो कि दीन की तकमील की मुहुर लग गई जिस के बाद दीन में किसी प्रकार के संशोधन का सवाल ही पैदा नहीं होता। इससे बड़ी गवाही आप सल्ल॰ की अंतिम नमाज़ की और क्या हो सकती है?

अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰

अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ से तो स्पष्ट शब्द मरवी है—فمازالت تلک صلوٰۃ رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم حتی لقی اللّٰہ تعالیٰ कि आप सल्ल॰ की अन्त तक यही नमाज़ रही यहाँ तक कि आप अल्लाह तआला से जा मिले।

अल्लामा ज़ैलई हनफ़ी रह॰ नसबुरीयह उन लोगों के रद्द में फ़रमाते हैं जिन्होंने रफ़अ यदैन को मन्सूख़ कहा है।

ویزیل ھذاالتوھم یعنی دعویٰ النسخ مارواہ البیھقی فی سننہ من جھۃ الحسن بن عبد اللّٰہ بن حمدان الرقی حدثنا عصمۃ بن محمد الانصاری حدثنا موسیٰ بن عقبۃ عن نافع عن ابن عمر ان رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم کان اذا افتتح الصلوٰۃ رفع یدیہ و اذا رکع و اذا رفع راسہ من الرکوع و کان لا یفعل ذلک فی السجود فما زالت تلک صلوٰۃ حتی لقی اللّٰہ تعالیٰ۔انتھیٰ رواہ عن ابی عبد اللّٰہ الحافظ عن جعفر بن محمد بن نصر عن عبد الرحمٰن بن قریش بن خزیمۃ الھروی عن عبد اللّٰہ بن احمد الامجحی عن الحسن بہ۔

जो लोग रफ़अ यदैन को मन्सूख़ (निरस्त) मानते हैं, उनके रद्द के लिए बैहक़ी की हदीस काफ़ी है कि अल्लाह के रसूल सल्ल॰ जब भी नमाज़ शुरू करते तो रफ़अ यदैन करते और जब रुकूअ करते रफ़अ यदैन करते और जब रुकूअ से सर उठाते तो रफ़अ यदैन करते और सजदों में न करते और यही नमाज़ है अल्लाह के रसूल सल्ल॰ की यहाँ तक कि अल्लाह को जा मिले।

इस हदीस को इस ज़माने के अहनाफ़ ने ज़ईफ़ क़रार दिया है। यद्यपि अल्लामा ज़ैलई हनफ़ी रह॰ ने इसे ज़ईफ़ नहीं कहा है। इसी तरह आसारुस्सुनन के लेखक ने भी इस हदीस पर कोई टिप्पणी नहीं की मानो कि इसे सही और दुरुस्त माना है और आज के अहनाफ़ अगरचे इसे ज़ईफ़ क़रार देते हैं लेकिन मुतक़द्दिमीन के मुक़ाबले में इनकी कोई अहमियत नहीं है।

इससे अधिक यह कि जो नाफ़ेअ के वास्ते से है उस हदीस के शब्द बिल्कुल सालिम के वास्ते वाली हदीस के हैं। यद्यपि नाफ़ेअ के वास्ते से इब्ने उमर की हदीसें आएंगी और सालिम के वास्ते की हदीसें तो सौ के लगभग हैं। ये सारे शब्द सालिम के वास्ते वाली हदीस के हैं बल्कि मेरा ख़्याल यही है कि यह हदीस जो बैहक़ी में थी सालिम के वास्ते से ही थी।

नस्बुर्रायह के हवाले से यह हदीस सुनने कुबरा की है, हो सकता है कि दोनों हदीसें सुनने कुबरा की हों जिन्हें प्रकाशक ने निकाल दिया हो। क्योंकि एक शताब्दी से अहनाफ़ यही काम कर रहे हैं।

मेरे इस ख़्याल का समर्थन इससे भी होती है कि अल्लामा इब्ने हिज्र रह॰ ने भी यह हदीस बग़ैर सनद के नक़्ल फ़रमाई है लेकिन उन्होंने सालिम के वास्ते से बुख़ारी मुस्लिम की मुत्तफ़क़ अलैहि हदीस को नक़्ल करने के बाद फ़रमाया है कि—

وزاد بیھقی فمازالت تلک صلوته حتیٰ لقی اللّٰہ (बुख़ारी मुस्लिम की सालिम के वास्ते वाली हदीस पर) बैहक़ी के ये शब्द ज़्यादा हैं कि यही नमाज़ आप सल्ल॰ की आख़िरी रही यहाँ तक कि आप अल्लाह को जा मिले।

तलख़ीस के शब्द यह हैं—

حدیث ابن عمر کان رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم یرفع یدیہ حذو منکبیہ اذا افتتح الصلوٰۃ متفق علیہ بزیادۃ واذا کبر للرکوع و اذا رفع راسہ من الرکوع رفعھما کذلک ـ فقال سمع اللّٰہ لمن حمدہ زاد البیھقی فما زالت تلک صلوتہ حتیٰ لقی اللّٰہ وفی روایۃ البخاری ولا یفعل ذلک حین یسجد ولا حین یرفع راسہ من السجود۔

قال ابن المدینی فی حدیث الزھری عن سالم عن ابیہ ھذاالحدیث عندی حجۃ علی الخلق کل من سمعہ فعلیہ ان یعمل بہ لانہ لیس فی اسنادہ شئی۔

कि अल्लाह के रसूल सल्ल॰ कन्धों तक रफ़अ यदैन करते जब नमाज़ शुरू करते। बुख़ारी मुस्लिम में यह शब्द ज़्यादा है कि जब रुकूअ के लिए तकबीर कहते और जब रुकूअ से सर उठाते तो रफ़अ यदैन करते और कहते समिअल्लाहु लिमन हमिदह। बैहक़ी ने यह शब्द ज़्यादा किए हैं कि यही नमाज़ आख़िरी रही अल्लाह के रसूल सल्ल॰ की यहाँ तक कि अल्लाह तआला को जा मिले। और बुख़ारी के यह शब्द हैं कि सजदे में जाते हुए और सजदे से सर उठाते हुए रफ़अ यदैन न करते।

अल्लामा अब्दुल हई हनफ़ी लखनवी रह॰ इमाम मुहम्मद की मोत्तव के हाशिए में फ़रमाते हैं—

لا شبھۃ فی ان ابن عمر قد روی عن رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم حدیث الرفع بل ورد فی بعض الروایات عنہ انہ قال کان رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ

علیہ وسلم اذا افتتح رفع یدیہ و اذا رکع واذا رفع و کان لایفعل ذالک فی السجود فمازالت تلک صلوتہ حتیٰ لقی اللّٰہ اخرجہ البیھقی ولا شک ایضا فی انہ ثبت عن ابن عمر بروایات الثقات فعل الرفع۔

इसमें सन्देह नहीं कि इब्ने उमर ने अल्लाह के रसूल सल्ल॰ से रफ़अ यदैन की हदीस बयान की है बल्कि कुछ रिवायतों में आप से यह भी साबित है कि अल्लाह के रसूल सल्ल॰ रफ़अ यदैन करते जब नमाज़ शुरू करते और जब रुकूअ करते और रुकूअ से सर उठाते और सजदों पर न करते। तो यही नमाज़ आप की रही अंतिम समय तक यहाँ तक कि आप अल्लाह से जा मिले। इसको बैहक़ी ने बयान किया है और इसमें सन्देह नहीं कि इब्ने उमर रज़ि॰ से सिक़ह (श्रेष्ठ) रावियों की रिवायत से रफ़अ यदैन साबित है।

अल्लामा शौकानी ने भी नैलुल अवतार में बुख़ारी मुस्लिम की हदीस जो कि सालिम के वास्ते से है बयान करने के बाद फ़रमाया है कि— وزاد البیھقی فما زالت تلک صلوتہ حتیٰ لقی اللّٰہ ـ बैहक़ी में ये शब्द भी ज़्यादा हैं कि यही नमाज़ अन्तिम रही आप की यहाँ तक कि आप सल्ल॰ अल्लाह को जा मिले।

दिरासातुल लबीब में है—

ثم استمرء لیہ دابہ حتیٰ فارق الدنیا وھو فی زیادۃ البیھقی علی الحدیث المتفق علیہ عن الزھری عن سالم عن ابن عمر رضی اللّٰہ عنھما فما زالت تلک صلوۃ حتی لقی اللّٰہ تعالیٰ قال ابن المدینی فی حدیث الزھری عن سالم عن ابیہ ھذاالحدیث عندی حجۃ علی الخلق ـ وکل من سمعہ فعلیہ ان یعمل بہ لانہ لیس فی اسنادہ شیئی۔

कि बैहक़ी की यह रिवायत ज़ुहरी अन सालिम अन अबीहि में है कि यही नमाज़ आपकी अन्तिम रही यहाँ तक कि अल्लाह को जा मिले। अली बिन मदीनी रह॰ कहते हैं ज़ुहरी अन सालिम अन अबीहि की हदीस तमाम मख़लूक़ पर दलील है कि जो भी इसे सुने उस पर अमल करे क्योंकि इसकी सनद में किसी प्रकार का सन्देह नहीं है।

इसको इमाम सुबकी ने अपनी जुज़ में भी इसी तरह बयान किया

है।

बुख़ारी की शरह तसहीलुलक़ारी में भी विस्तार से लिखा है।

शैख़ अब्दुर्रहमान बन्ना ने इसे मुस्नद अहमद की शरह फ़तहुर्रब्बार्नी में इन शब्दों से पेश किया है।

حدثنا عبد الله حدثنی ابی حدثنا عبد الرزاق حدثنا معمر عن الزهری عن سالم عن ابن عمر "الحدیث" تخریجه ق۔ فعی وغیرهم و للبخاری ولا یفعل ذلک حین یسجد ولا حین یرفع راسه من السجود و لمسلم ولا یفعله حین یرفع رأسه من السجود اخرجه هق بزیادة فمازالت تلک صلوته حتیٰ لقی الله تعالیٰ۔

कि बुख़ारी, मुस्लिम और मुस्नद शाफ़ई वग़ैरह की हदीस इब्ने उमर रज़ि॰ की (कि रफ़अ यदैन करते शुरू नमाज़ और रुकूअ करते और रुकूअ से सर उठाते समय) और बुख़ारी के शब्द हैं सजदे को जाते और उठते समय न करते और मुस्लिम के शब्द हैं सजदों से उठते समय न करते और बैहक़ी के ये शब्द ज़्यादा बयान किए हैं तो यही नमाज़ रही सदेव अल्लाह के रसूल सल्ल॰ की यहाँ तक कि अल्लाह को जा मिले।

नतीजा

जो इबारतें मैंने पेश की हैं वे साबित करती हैं कि यह हदीस बैहक़ी वाली की सनद अन ज़ुहरी अन सालिम अन इब्ने उमर है जबकि नसबुरीयह की सनद यह नहीं है बल्कि वह नाफ़ेअ के वास्ते से है। और यह कि नाफ़ेअ के वास्ते से बुख़ारी मुस्लिम की रिवायत में सजदों का ज़िक्र नहीं है। बल्कि मुस्लिम में तो नाफ़ेअ के वास्ते वाली हदीस ही नहीं है और बैहक़ी की हदीस में ये शब्द हैं कि सजदों में न करते और यह आप पिछले पृष्ठ में देख चुके हैं कि यी शब्द सालिम वाली हदीस के शब्द हैं नाफ़ेअ की हदीस के नहीं हैं।

अब या तो बैहक़ी की यह दो हदीसें मानना पड़ेगा कि एक नाफ़ेअ वाली है और दूसरी सालिम वाली है। दोनों के शब्द यही होंगे या यह कि इस रिवायत में उलट फेर किया गया है। क्योंकि मुक़ल्लिद हज़रात

इस चीज़ के आदी हैं। इसके ताल्लुक़ से पत्रिका नूरुल हुदा जौलाई 1982 ई॰ में बहस की है।

और यह कि नाफ़ेअ वाली हदीस में चार जगह रफ़अ यदैन का ज़िक्र है अगरचे कुछ रियावतों में संक्षेप है लेकिन फिर भी दोनों रकअतों से उठते समय रफ़अ यदैन करना नाफ़ेअ की हदीस में है सालिम की हदीस में नहीं है और सजदों में रफ़अ यदैन न करने का ज़िक्र सालिम की हदीस में तवातुर के साथ है।

अबू हुमैद साइदी

और अबू हुमैद तो हदीस बयान कर रहे और आप सल्ल॰ के निधन के बाद कर रहे हैं। और सहाबा के एक समुदाय में कर रहे हैं। इस समुदाय में मुहम्मद बिन मुसलमह भी हैं, इस समुदाय में अबू हुरैरह भी हैं, इसमें हज़रत सहल बिन सअद, हज़रत अबू क़तादा और अबू उसैद भी हैं इसके अलावा दूसरे सहाबा भी हैं और सबके सामने कहा मैं आप जैसी नमाज़ पढ़ता हूँ आप लोग देखें। इस तरह नमाज़ रफ़अ यदैन से पढ़ी और सबने इसकी पुष्टी की, किसी ने काट नहीं की कि अब इसमें तब्दीली हो चुकी है मत बयान करना बल्कि उन्होंने कहा صدقت هكذا كان يصلى رسول الله عليه وسلم तुम ठीक कहते हो इसी तरह आप नमाज़ पढ़ा करते थे। यह भी दलील बहुत बड़ी है जबकि आप के निधन के बाद तमाम सहाबा रफ़अ यदैन की तस्दीक़ कर रहे हैं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर और हज़रत अबु बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰

और हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ की नमाज़ का वाक़िआ बयान फ़रमाते हैं बल्कि हदीस के शब्द हैं कि इब्ने जुरैज बहुत अच्छी तरह नमाज़ पढ़ते थे। मक्का वाले नमाज़ इब्ने जुरीज की तरह ही नमाज़ पढ़ते थे और वह रफ़अ यदैन करके नमाज़ पढ़ते। इब्ने जुरीज ने अता से बयान किया और वह भी रफ़अ यदैन करके नमाज़ पढ़ते। उन्होंने अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर से सुना वह रफ़अ

यदैन करते थे। उन्होंने अबू बक्र सिद्दीक़ से सुना वह भी रफ़अ यदैन से नमाज़ पढ़ते थे। उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्ल॰ से सुना आप भी शुरू नमाज़ और रुकूअ करने के समय और रुकूअ से सर उठाते समय रफ़अ यदैन करते थे। यह रिवायत संक्षिप मुस्नद अहमद में भी आती है, बैहक़ी में विस्तार से आती है। अबू नईम ने हुलिया में भी बयान किया है। मजमउज़्ज़वाइद, तलख़ीसुल जुबैर और तालीक़ुल मुमजद में भी आती है।

मानो कि इस हदीस के तमाम रावी (उल्लेखकर्ता) रफ़अ यदैन करने वाले हैं और आप सल्ल॰ की वफ़ात के बाद सब बयान कर रहे हैं। यानी क्या इनको मालूम न हो सका कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ जो सारे जीवन साथ रहे और कभी भी अलग न हुए यहाँ तक कि क़ब्र में भी इकटठे ही हुए तो इनको मालूम न हो सका कि नमाज़ में काट-छाँट हो चुकी है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि.

मगर हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ बयान करते हैं जबकि अमीर मुआविया का शासन काल था लोगों में कुछ सुस्ती और काहिली आ गई थी बहुत सी चीज़ें सिर्फ़ ग़फ़लत की वजह से छोड़ दी गईं थीं उनमें से एक रफ़अ यदैन भी था। लेकिन यह न था पहला करते और दूसरा न करते बल्कि पहला भी दूसरा भी तीसरा भी सब छोड़ देते थे। आज भी अरब में कुछ लोगों को मक्का के हरम वग़ैरह में देखा जाता है कि वे पहला रफ़अ यदैन भी नहीं करते तो यह उनकी सुस्ती थी जिस की शिकायत हज़रत अबू हूरैरह करते हैं। जैसा कि गुज़र चुका है पूरी तफ़सील के लिए मेरी किताब जुज़ रफ़उल यदैन देखिए।

इस सुस्ती का ज़िक्र अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि॰ और अब्दुल्लाह बिन अब्बास वाली हदीस में भी है।

हर तरह से यह सुन्नते मुतवातिरह सहीहह ग़ैर मन्सूख़ है जिसको कम से कम पचास सहाबा ने ज़िक्र किया है।

रफ़अ यदैन में मसलकों का मतभेद

अहनाफ़ यह दलील पेश करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल॰ ने पहली रफ़अ यदैन पूरे जीवन किया है और इस पर जो दलीलें पेश की हैं वह ज़्यादातर वही हैं जिनमें तीन जगह का ज़िक्र है और यह एक सच्चाई है कि वह सहाबा जिनसे सिर्फ़ पहली रफ़अ यदैन मरवी है (यानी सिर्फ़ पहली का ज़िक्र है और दूसरी रफ़अ यदैन का इन्हीं से दूसरी जगह ज़िक्र है) पाँच सहाबी भी गिने नहीं जा सकते। हालाँकि हनफ़ियों का दावा है कि पहली रफ़अ यदैन पचास सहाबा से मरवी है और अगर रुकूअ की रफ़अ यदैन की हदीसें निकाल दी जाएँ तो उनका दावा ही ग़लत हो जाता है। मगर हिदाया के लेखक ने पहली रफ़अ यदैन की दलील में जो हदीसें पेश की हैं वह अब्दुल्लाह बिन उमर और अबू हुमैद साइदी वग़ैरह की हदीसें पेश की हैं तो इसका साफ़ मतलब यह हुआ कि इन्हीं हदीसों में रुकूअ करते और उठते समय के रफ़अ यदैन का भी ज़िक्र है। अल्लामा ज़ैलई ने नसबुर्रायह में भी इसी तरह ज़िक्र किया है लेकिन पहली रफ़अ यदैन करने और दूसरी और तीसरी छोड़ने का किसी हदीस में नहीं है।

और अगर कोई कहे कि जाबिर बिन समुरह की हदीस से इस रफ़अ यदैन का नस्ख़ (निरस्त होना) है तो फिर पहली भी साथ ही मनसूख़ समझी जाएगी। क्योंकि किसी भी सही हदीस में इसका इसतिसना (अपवाद) साबित नहीं है। यही वजह है कि ख़ुद अहनाफ़ भी किसी एक बात पर मुत्तफ़िक़ नहीं हैं कि इस रफ़अ यदैन की अहमियत किया है और सुन्नते साबितह मुतवातिरह के रद्द में उनकी कई एक राऐं हैं।

(पहला मसलक) कि तकबीरे तहरीमा के अलावा रफ़अ यदैन जाइज़ नहीं है जो कि पहले सच मुच रुकूअ के समय भी जाइज़ थी बाद में मन्सूख़ हो गई। अब रुकूअ के समय रफ़अ यदैन करना ममनूअ

है।

बल्कि कुछ लोगों ने यहाँ तक लिख दिया है कि रफ़अ यदैन करने से नमाज़ फ़ासिद हो जाती है। जैसा कि अमीरे कातिब अमीरुल अतक़ानी (मृत्यु 758) ने इसकी नमाज़ बातिल होने पर एक पत्रिका लिखा है (हवाला : कशफ़ुज़्ज़ुन्नून भाग 1 पृष्ठ 868) और मकहूल नसफ़ी का भी यही मसलक था। (हवाला : अल फ़वाइदुल बहीयह फ़ी तराजिमिल हनफ़ीयह पृष्ठ 216 और अल हाफ़िज़ फ़िद्दोरिल कामिनह फ़ी तरजमतिल अमीर) मौलाना अब्दुल हई लखनवी रह॰ ने ग़ैसुल ग़माम पृष्ठ 35 में इसका रद्द किया है और दूसरे अहनाफ़ ने भी इस मसलक को क़बूल नहीं किया है।

(दूसरा मसलक) तकबीरे तहरीमा के अलावा रफ़अ यदैन करना जाइज़ है लेकिन बेहतर न करना है। उनके नज़दीक रुकूअ में रफ़अ यदैन का मुस्तहब होना मन्सूख़ है जाइज़ होने का नस्ख़ नहीं है। और कोकिबुद्दरी के लेखक भाग 1 पृष्ठ 129 में लिखते हैं— لاخلاف بيننا وبين الشافعى فى جواز الصلوة بالرفع وعدم الرفع، انما النزاع فى ان الاولىٰ هو عدم الرفع او الرفع؟ فاخترنا الاوّل واختار (الشافعى) الثانى ـ कि हमारे और शाफ़ियों के बीच यह मतभेद नहीं कि नमाज़ होती है या नहीं बल्कि बहस यह है कि बेहतर क्या है हमने रफ़अ यदैन न करने को बेहतर समझा और शाफ़ियों ने रफ़अ यदैन करने को बेहतर समझा।

फ़ैज़ुल बारी के लेखक ने भी भाग 1 पृष्ठ 257 में लिखा है— قد ثبت الامران عندى ثبوتا لامرد له ولا خلاف الافى الاختيار و ليس فى الجواز ـ فما فى الكبيرى شرح المنيه والبدائع انه مكروه تحريما متروك عندى نعم ان كان عندها نقل من صاحب المذهب فهما معذوران والا فالقول بالكراهة فى مسئلة متواترة بين الصحابة شديد عندى الح मेरे नज़दीक दोनों चीज़ें साबित हैं इसमें किसी तरह का मतभेद सिवाए इसके नहीं कि दोनों में से पसन्दीदा बात कौन सी है न कि इसके जाइज़ होने में कुछ इख़्तिलाफ़ है और जो कबीरी शरह मुनियह और अल बदाइअ वालों ने मकरूहे तहरीमी लिखा है तो वह मेरे नज़्दीक मतरूक है और अगर उन्होंने किसी का मसलक नक़्ल किया है तो वह मअज़ूर हैं वरना किसी

मुतवातिर मसले में मकरूह होने का फ़तवा लगाना जो सहाबा में मुतवातिर हो मेरे नज़दीक बड़ा गुनाह है।

और अल बदरुस्सारी के लेखक ने भाग 1 पृष्ठ 255 में फ़रमाया है— ان الرفع متواتر اسناداً وعملاً و لم ينسخ منه ولا حرف وانما بقى الكلام فى الافضلية كما صرح به ابوبكر الجصاص فى احكام القران وقال ايضاً و ع عنك حديث النسخ اذ قد شهد العمل بالجانبين فانه اقوى دليل على عدم النسخ ـ कि रफ़अ यदैन का सुबूत मुतवातिर है। सनद और अमल दोनों के एतिबार से और मन्सूख़ नहीं है। एक अक्षर भी मन्सूख़ नहीं बाक़ी रहा बेहतर होना जिस तरह अबू बक्र जस्सास ने अहकामुल क़ुरआन में अफ़ज़ल कहा है और यह फ़रमाया कि इसके मन्सूख़ होने की कोई हदीस नहीं है और दोनों तरफ़ अमल करने वाले हैं बल्कि नस्ख़ न होने की दलील ज़्यादा मज़बूत है।

(तीसरा मसलक) कि रफ़अ यदैन करना ज़्यादा पसन्दीदा और बेहतर है जैसा कि शाह वलीउल्लाह साहब रह॰ ने हुज्जतुल्लाहिल बालिग़ह भाग 2 पृष्ठ 8 में फ़रमाया है— والحق عندى ان الكل سنة والذى يرفع احب الى ممن لايرفع فان احاديث الرفع اكثر واثبت ـ मेरे नज़दीक दोनों चीज़ें सुन्नत हैं लेकिन रफ़अ यदैन करने वाले को मैं ज़्यादा पसन्द करता हूँ न करने वाले से, क्योंकि रफ़अ यदैन की हदीसें बहुत ज़्यादा और मज़बूत हैं।

और अल्लामा सिन्धी इब्ने माजा के हाशिए भाग 1 पृष्ठ 282 में लिखते हैं— واما قول من قال ان ذلك الحديث (اى حديث ابن مسعود فى ترك الرفع) ناسخ رفع غير تكبيرة الافتتاح فهو قول بلا دليل بل لو فرض فى الباب نسخ فيكون الامر يعكس ما قالو ـ فاين مالك بن حويرث ووائل بن حجر من رواة الرفع ممن صلى مع النبى صلى الله عليه وسلم آخر عمره فروايتهما الرفع عند الركوع الرفع منه دليل علىٰ تاخر الرفع و بطلان دعوىٰ نسخه فان كان هناك نسخ فينبغى ان يكون المنسوخ ترك الرفع ـ وقال ايضاً ـ فالاقرب القول باستنان الامرين الرفع اقوى و اكثر ـ जिन्होंने लिखा है कि इब्ने मसऊद की हदीस तकबीरे तहरीमा के अलावा रफ़अ यदैन की नासिख़ है। तो यह क़ौल बिला दलील है और अगर नस्ख़ मान लिया

जाए तो फिर इसके उलट होगा (यानी इब्ने मसऊद की हदीस मनसूख होगी) क्योंकि मालिक बिन हुवैरिस और वाइल बिन हिज्र जो रफ़अ यदैन के रावी हैं वह आप सल्ल॰ के अंतिम जीवन में मुसलमान होकर आए थे। इस लिए उनकी रफ़अ यदैन की हदीस इस पर दलील है कि रफ़अ यदैन आप सल्ल॰ का अंतिम कर्म है और इसके मनसूख होने का दावा बातिल और ग़लत है और अगर मानना ही है तो फिर रफ़अ यदैन छोड़ना मनसूख (निरस्त) हो सकता है। आगे फ़रमाते हैं "ज़्यादा क़रीब बात यह है कि दोनों काम सुन्नत हैं और रफ़अ यदैन की हदीसें मज़बूत और ज़्यादा मात्रा में हैं।

अल्लामा सिन्धी ने नसाई के हाशिए भाग 1 पृष्ठ 140 में भी यह बात बयान की है।

और मौलाना अब्दुल हैई लखनवी मोत्ता इमाम मुहम्मद के हाशिए पृष्ठ 89 में फ़रमाते हैं—

القدر المتحقق فی هذالباب هو ثبوت وترکه کلیهما عن رسول الله صلی الله علیه وسلم الا ان رواة الرفع من الصحابة جم غفیر ورواة الترک جماعة قلیلة مع عدم صحة الطرق عنهم الا عن ابن مسعود ـ و کذلک ثبت الترک عن ابن مسعود و اصحابه باسانید محتجة بها فاذن نختار ان الرفع لیس بسنة موکدة یلام تارکها الا ان ثبوته عن النبی صلی الله علیه وسلم اکثر وارجح واما دعوی نسخه کما صدر عن الطحاوی مغتر بحسن الظن بالصحابة التارکین ـ وابن الهمام والعینی وغیرهم من اصحابنا فلیس بمبرهن علیها بما یشفی العلیل ویروی القلیل۔

इस अध्याय में हक़ीक़त यह है कि रफ़अ यदैन करना और छोड़ना दोनों अल्लाह के रसूल सल्ल॰ से साबित हैं। मगर रफ़अ यदैन करने में सहाबा की बहुत बड़ी जमाअत है और न करने में एक छोटी सी जमाअत है और फिर उन हदीसों की सनदें भी सही नहीं हैं सिवाए इब्ने मसऊद रज़ि॰ के। इब्ने मसऊद और उनके मानने वालों की सनदों से दलील पेश की जा सकती है। इसी लिए हमने इस मसलक को पसन्द

किया है कि रफ़अ यदैन सुन्नते मुअक्किदह नहीं है कि इसके छोड़ने वाले पर लान तान किया जाए। हाँ इसका सुबूत आप सल्ल॰ से बहुत ज़्यादा है और राजेह है। और रफ़अ यदैन के मन्सूख होने का दावा जो तहावी ने किया है यह उनकी ग़लतफ़हमी है। इसी लिए अल्लामा इब्ने हुमाम रह॰ और अल्लामा ऐनी रह॰ वग़ैरह हमारे हनफ़ियों में से तसल्ली बख़्श दलीलें न होने की वजह से तहावी रह॰ का साथ न दे सके और सुन्नत के क़ाइल हैं।

(चौथा मसलक) यह है कि दोनों काम सही हैं और हम किसी को प्राथमिकता देने को तैयार नहीं हैं। इस लिए मौलाना अनवर शाह कश्मीरी रह॰ अल बदरुस्सारी भाग 1 पृष्ठ 261 में फ़रमाते हैं— لعلک علمت ان العمل فی هذا الباب بالنحوین ـ ونفی الترک باطل ـ وبقی ان الرفع اکثر او الترک؟ فلم یجزم الشیخ فیه بشئی ـ ताकि तू समझ ले कि इसमें अमल दोनों तरफ़ एक जैसा है और छोड़ने का इन्कार भी सही नहीं। बाक़ी रहा यह कि रफ़अ यदैन की हदीसें ज़्यादा हैं या रफ़अ यदैन न करने की तो हम इसमें कोई फ़ैसला भी करने के अहल नहीं हैं।

ये चार मसलक हनफ़ियों में हैं जो रफ़अ यदैन न करने के क़ाइल हैं और इसी तरह रफ़अ यदैन करने वालों में भी कई मसलकें हैं। मगर एक मसलक तो वाजिब होने का है।

अल्लामा सुबकी रह॰ अपनी जुज़ में फ़रमाते हैं— ذهب الاوزاعی والحمیدی وجماعة غیرهما الیٰ انه واجب وانه یفسد الصلوٰة بترکه ومن الدلیل لوجوبه ان مالک بن الحویرث رای النبی صلی الله علیه وسلم یفعله فی الصلوة وقال له صلوا کما رأیتمونی اصلی والامر للوجوب (جزء سبکی ص ۱۱) कि अल्लामा औज़ाई और अल्लामा हुमैदी और भी बहुत से लोग इसके वाजिब होने के क़ाइल हैं कि इसके छोड़ने से नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी और उसकी दलील यह है कि मालिक बिन हुवैरिस ने आप सल्ल॰ को देखा कि रफ़अ यदैन करते थे नमाज़ में और फिर यह भी फ़रमाया कि "जिस तरह मुझे नमाज़ पढ़ते देखो उसी तरह नमाज़ पढ़ो" और चूँकि यह हुक्म दिया है और हुक्म वाजिब के लिए होता है।

दूसरा मसलक सुन्नते मुअक्किदह का है और राजेह भी यही है और

ज़्यादातर का मसलक यही है। सुन्नते मुअक्किदह अगर ग़लती से रह जाए तो नमाज़ हो जाती है और अगर जान बुझकर छोड़ दे तो सुन्नते मुअक्किदह का छोड़ने वाला गुनाहगार ज़रूर होता है। जैसा कि क़ुरआन की आयतों में से स्पष्ट है और मेरा ख़्याल है कि अल्लामा औज़ाई रह. और हुमैदी वग़ैरह ने वाजिब भी इसी मायना में लिया है। मगर अल्लामा ऐनी ने बुख़ारी की शरह भाग 2 पृष्ठ 7 में इब्ने ख़ुज़ैमह के शब्द नक़्ल फ़रमाए हैं—من ترک الرفع فی الصلوة فقد ترک رکنا من ارکانها—कि जिसने रफ़अ यदैन को छोड़ दिया तो उसने एक रुक्न नमाज़ का छोड़ दिया।

इसके अलावा और मतभेद भी हैं। उनमें से एक यह भी है कि पहली तकबीर के साथ भी रफ़अ यदैन वाजिब है या नहीं। इस लिए तबसिरह के लेखक ने इमाम मालिक से यह क़ौल नक़्ल किया है انه لایستحب कि पहला रफ़अ यदैन भी मुस्तहब नहीं है और इसमें और भी कई लोग इस मसलक के क़ाइल हैं। तफ़सील के लिए फ़तहुल बारी भाग 3 पृष्ठ 403 देखिए।

और एक मतभेद यह भी है कि सजदों में रफ़अ यदैन करना चाहिए या नहीं? अगरचे हक़ इसमें यह है कि सजदों में रफ़अ यदैन नहीं है लेकिन इसके भी कई लोग क़ाइल हैं जैसे अय्यूब सख़तियानी रह., ताऊस रह., नाफ़ेअ रह. और अता रह. आदि।

मगर हमारे सामने सबसे बड़ा मतभेद ख़ास तौर से बर्रे सग़ीर हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में यह है कि क्या रुकूअ जाते और उठते समय रफ़अ यदैन करना चाहिए या न करना चाहिए। हमारा यह दावा है कि करना चाहिए और ज़रूर करना चाहिए। क्योंकि अल्लाह के रसूल सल्ल. से एक नामज़ भी रफ़अ यदैन के बग़ैर साबित नहीं है। इस लिए इसकी दलीलें पेश होंगी और जो इसके ख़िलाफ़ दलील होगी उसकी भी छानबीन की जाएगी।

—(ख़ालिद गरजाखी)

بسم الله الرحمن الرحيم

قال ابو عبدالله محمد بن اسماعيل بن ابراهيم البخارى الرد على من انكر رفع الأيدى فى الصلاة عند الركوع وإذا رفع رأسه من الركوع ، وأبهم على العجم فى ذلك تكلفا لما لا يعنيه فيما ثبت عن رسول الله ﷺ فيه فعله وروايته عن اصحابه ، ثم فعل أصحاب النبى ﷺ والتابعين واقتداء السلف بهم فى صحة الأخبار بعض عن بعض الثقة من الخلف العدول رحمهم الله وأنجز لهم ما وعدهم على ضغيثة صدره وحرجة قلبه ونفارا عن سنن رسول الله ﷺ لما يحمله واستكنان عداوة لأهلها لشوب البدعة لحمه وعظامه ومخه، واكتسبه باحتفاء العجم حوله اغترارآ ؛ وقال النبى ﷺ : لا تزال طائفة(1) من امتى قائمة على الحق

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इमाम अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इस्माईल बिन इबराहीम बुख़ारी रह. फ़रमाते हैं कि यह पत्रिका उन लोगों के रद्द में पेश कीजा रही है जो नमाज़ में रुकूअ जाते और रुकूअ से सर उठाते हुए रफ़अ यदैन का इन्कार करते हैं और जाहिल लोगों को इससे सिर्फ़ तकल्लुफ़ से ओझल रखते हैं। हालाँकि इसका करना और करने का हुक्म देना सहाबा से साबित है और फिर इसका ख़ुद अल्लाह के रसूल सल्ल. के सहाबा और ताबईन और तबअ ताबईन से भी सही सनद के साथ करना साबित है। अल्लाह तआला उन सब पर अपनी रहमतें फ़रमाए ताकि इसका सुन्नत होना उनके बुग़्ज़ और दुश्मनी के बावजूद साबित हो जाए और इस पर अमल करने वाले लोगों के साथ जो दुश्मनी उनके बदन के बालों में भरी हुई है इससे रुक जाएँ।

1. यह हदीस मुत्तफ़क़ अलैह है अलग-अलग सहाबा से अलग-अलग शब्दों में मरवी है और अल्लामा सुयूती रह. ने इसे 'इल अज़हारुल मुतनासिरह' में मुतवातिर कहा है।

لا يضرهم من خذلهم ولا خلاف من خالفهم ماض ذلك ابداً فى جميع سنن رسول الله ﷺ لإحياء ما اميتت وان كان فيها بعض التقصير بعد الحث والارادة على صدق النية وأن يقام للاسوة فى رسول الله ﷺ وبما أبيح على الخلق فى أفعال رسول الله ﷺ فى غير عزيمة حتى يعزم على ترك فعل من نهى أو عمل بأمر رسول الله ﷺ مما أمر الله خلقه وفرض عليهم طاعته اوجب عليهم اتباعهم اياه وطاعتهم له طاعة نفسه عزوجل (ذى) المن والطول فقال : (وما آتاكم الرسول فخذوه وما نهنكم عنه فانتهوا) وقال : (من يطع الرسول فقد اطاع الله) وقال: (فلا وربك لا يؤمنون حتى يحكموك فيما شجر بينهم ثم لا يجدوا فى أنفسهم حرجا مما قضيت ويسلموا تسليما) وقال : (فليحذر الذين يخالفون عن امره أن تصيبهم فتنة أو يصيبهم عذاب اليم) وقال : (لقد كان لكم فى

अल्लाह के रसूल सल्ल॰ ने फ़रमाया है कि मेरी उम्मत में से जो हक़ पर क़ायम रहने वाला गिरोह हमेशा रहेगा और उनकी मुख़ालिफ़त करने वाले उनका कुछ भी बिगाड़ नहीं सकेंगे। मानो अल्लाह के रसूल सल्ल॰ की उन मुर्दा सुन्नतों को वह व्यक्ति ज़िन्दा करेगा अगरचे कुछ कोताहियाँ और कमियाँ हों और सच्ची नीयत से अमल करना शुरू कर देगा। और उनके रोके हुए कामों को छोड़ देगा। क्योंकि ख़ुद अल्लाह तआला ने अपनी मख़लूक़ को यही हुक्म दिया है और अपने पैग़म्बर की फ़रमाँबरदारी उन पर अनिवार्य कर दी है और पैग़म्बर की फ़रमाँबरदारी को ख़ुद अपनी फ़रमाँबरदारी कहा है और इर्शाद फ़रमाया है कि पैग़म्बर जो तुमको दे ले लो और जिससे रोके रुक जाओ (सूरह हश्र–7) और यह भी फ़रमाया कि जिसने रसूल की इताअत की मानो उसने अल्लाह की इताअत की (सूरह निसा–80) और यह भी फ़रमाया कि मुझे क़सम है तेरा रब होने की यह लोग उस समय तक ईमानदार नहीं हो सकते जब तक तुझे अपने झगड़ों में फ़ैसल न मान लें फिर तेरे फ़ैसले पर दिल में तंगी न करें और दिल की सच्चाई के साथ क़बूल कर लें। (सूरह

رسول الله آسوة حسنة لمن كان يرجوا الله واليوم الآخر وذكر الله كثيرا)

فرحم الله عبداً استعان باتباع رسول الله ﷺ ، واقتفاء أثره ويستعيذ تبارك وتعالى من سهو نفسه وتصلية رسله لقوله عز وجل (فمن اتبع هداى فلا يضل ولا يشقى)

(١) أخبرنا اسماعيل بن ابى يونس حدثنى عبد الرحمن بن ابى الزناد عن موسى بن عقبة عن عبدالله بن الفضل الهاشمى عن عبد الرحمن بن هرمز الاعرج عن عبيدالله بن ابى رافع عن على بن ابى طالب رضى الله تعالى عنه ان رسول الله ﷺ كان يرفع يديه اذا كبر للصلاة حذو منكبيه وإذا أراد أن يركع وإذا رفع رأسه من الركوع وإذا قام من الركعتين فعل مثل ذلك

निसा–65) और फ़रमाया जो लोग मेरे पैग़म्बर की मुख़ालिफ़त करते हैं उन्हें डरना चाहिए कि कहीं किसी मुसीबत में न फँस जाएँ या उन्हें सख़्त अज़ाब न आ ले। (सूरह नूर–63) और फ़रमाया कि मेरा पैग़म्बर तुम्हारे लिए एक बेहतरीन नमूना है और हर उस व्यक्ति के लिए जो दुनिया और आख़िरत में अपने रब की रहमत का उम्मीदवार हो और अल्लाह तआला को याद करने वाला हो। (सूरह अहज़ाब–21)

तो अल्लाह तआला उस बन्दे पर अपनी रहमतें नाज़िल फ़रमाए जो अल्लाह के रसूल की फ़रमाँबरदारी की तौफ़ीक़ माँगता है। और उनके इर्शादात के पीछे लग जाता है और अपने मन की भूल से और अल्लाह के रसूल सल्ल॰ की नाफ़रमानी से अल्लाह की पनाह माँगता है। क्योंकि अल्लाह तआला का इर्शाद है कि जिसने मेरी हिदायत की पैरवी करली वह न तो दुनिया में गुमराह होगा न क़ियामत की नेमतों से महरूम होगा। (सूरह ता-हा–123)

1. हदीस नं॰ 1 यह हदीस निम्नलिखित किताबों में भी आती है। मुस्नद अहमद भाग 1 पृष्ठ 93,इब्ने ख़ुज़ैमह भाग 1 पृष्ठ 294, अबू दाऊद बिऔन भाग 1 पृष्ठ 271, तोहफ़तुल अहवज़ी भाग 4 पृष्ठ 239, इब्ने माजा भाग 1 पृष्ठ 183, दारे क़ुतनी भाग 1 पृष्ठ 287 सुनन बैहक़ी भाग 2 पृष्ठ 175।

قال البخاری وكذلك يروی عن سبعة عشر نفسا من أصحاب
النبي ﷺ انهم كانوا يرفعون أيديهم عند الركوع وعند الرفع منه
ابو قتادة الأنصاری وابو أسيد الساعدی البدری ومحمد بن مسلمة
وسهل بن سعد الساعدی وعبدالله بن عمر بن الخطاب وعبدالله بن

रफ़अ यदैन की दलीलें

1. हज़रत अली रज़ि॰ बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल॰ हमेशा हाथ उठाया करते थे कन्धों तक जब नमाज़ के लिए तकबीर कहते और जब रुकूअ का इरादा करते और जब रुकूअ से सर उठाते और जब दो रकअतों से खड़े होते फिर भी इसी तरह करते।

इमाम बुख़ारी रह॰ फ़रमाते हैं कि इसी तरह से यह अमल सतरह सहाबा से मरवी है कि वे रुकूअ के समय भी रफ़अ यदैन किया करते

रफ़अ यदैन के रावी सहाबा रज़ि॰

इमाम बुख़ारी रह॰ फ़रमाते हैं कि इसको सतरह सहाबा रज़ि॰ ने रिवायत किया है जैसा कि इस किताब में आगे मुत्तसिलन और मौक़ूफ़न बयान है।

1. अबू क़तादह, (2) अबू उसैद, (3) मुहम्मद बिन मुसलमह, (4) सहल बिन सअद, (5) अबू हुमैद साइदी ज़िक्र किए गए लोगों के नाम अबू हुमैद साइदी की हदीस में भी आते हैं। रावी बयान करते हैं कि अबू हुमैद ने दस सहाबा की सभा में कहा मैं अल्लाह के रसूल सल्ल॰ के तरीक़े के मुताबिक़ नमाज़ पढ़ता हूँ जब नमाज़ पढ़ी और इसमें रफ़अ यदैन किया तो दसों सहाबा रज़ि॰ ने उसकी तस्दीक़ की। इस हदीस को इमाम बुख़ारी रह॰ इस जुज़ में नं॰ 3, 4, 5, 6 में ला रहे हैं और यह कि यह हदीस निम्नलिखित किताबों में भी है। अबू दाऊद पृष्ठ 265- 266, 267-268 औन के साथ, मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबह भाग 1 पृष्ठ 225, तिर्मिज़ी तोहफ़ा सहित भाग 1 249, इब्ने माजा सिन्धी पृष्ठ 213, दारमी भाग 1 पृष्ठ 163, इब्ने ख़ुज़ैमा भाग 1 पृष्ठ 297 और बैहक़ी भाग 1

عباس بن عبد المطلب الهاشمی وانس بن مالك خادم رسول الله ﷺ
وابو هريرة الدوسی وعبدالله بن عمرو بن العاص وعبد الله بن الزبير
ابن العوام القرشی ووائل بن حجر الحضرمی ومالك بن الحويرث

थे। इनमें से 1. अबू क़तादा अन्सारी, 2. अबू उसैद बदरी, 3. मुहम्मद बिन मुसलमह बदरी, 4. सहल बिन सअद साइदी और 5. अब्दुल्लाह बिन उमर बिन ख़त्ताब।

6. अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब हाशिमी, 7. अनस बिन मालिक अल्लाह के रसूल सल्ल॰ के सेवक, 8. अबू हुरैरह दोसी, 9. अब्दुल्लाह बिन उम्र बिन आस, 10. अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर बिन अवाम

पृष्ठ 72, 73।

6. अब्दुल्लाह बिन उमर बिन ख़त्ताब की हदीस मुतवातिर हदीस है जो सारी हदीसों की किताबों में आती है और यह उनके पाँच शागिर्दों से मरवी है। 1. हज़रत सालिम जो हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ के लड़के थे इसको इमाम साहब रह॰ अपनी इस किताब के नं॰ 2, 12, 13, 42, 47, 77, 78, 79, 81, 104 में मौसूलन और मौक़ूफ़न आती है। इसके अलावा यह हदीस तमाम हदीस की किताबों में आती है जिसे बुख़ारी और मुस्लिम और सिहाहे सित्ता के अलावा भी सारे मुहद्दिसीन ने बयान किया है। इमाम मालिक रह॰ और इमाम मुहम्मद रह॰ दोनों ने मोत्ता में बयान किया है। इब्ने अबी शीबा और अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने अपने मुसन्नफ़ में बयान किया है। इब्ने ख़ुज़ैमह और इब्ने हिब्बान ने अपनी अपनी सहीह में बयान किया है अर्थात दुनिया की कोई हदीस की किताब ऐसी नहीं जिसमें यह न आती हो।

इसी हदीस का दूसरा शागिर्द हज़रत नाफ़ेअ जो इब्ने उमर के दास थे हैं उनकी हदीस इसी किताब के नं॰ 14, 15, 40, 49, 51, 52, 53, 58, 73, 80 पर आ रही है। तीसरा शागिर्द मुहारिब बिन दसार है जिसकी हदीस 26 और 48 नं॰ पर आ रही है, चौथा शागिर्द अबुज़्ज़ुबैर बयान करता है जिसकी रिवायत नं॰ 50 पर आ रही है और पाँचवाँ शागिर्द ताऊस हैं जिनकी हदीस नं॰ 28 में आ रही है।

وابو موسى الأشعرى وابو حميد الساعدى الأنصارى وعمر بن الخطاب وعلى بن ابى طالب وأم الدرداء رضى الله عنهم

अल क़रशी, 11. वाइल बिन हिज्र अल हज़रमी, 12. मालिक बिन अल हुवैरिस।

13. अबू मूसा अशअरी, 14. अबू हुमैद साइदी अन्सारी, 15. उमर बिन ख़त्ताब, 16 अली बिन अबी तालिब और 17 उम्मे दरदा रज़ियल्लाहु अन्हुम हैं।

7-8. अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि. और अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि. की असर और हदीसें इस किताब के नं. 18, 21, 28, 61, 56 में आ रही हैं। यह मरफ़ूअ अबू दाऊद औन सहित भाग 1 पृष्ठ 269, इब्ने माजा भाग 1 पृष्ठ 284, सन्धी और तबरानी कबीर भाग 11 पृष्ठ 133 और बैहक़ी में हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ की हदीस में इब्ने ज़ुबैर से भी अती है भाग 2 पृष्ठ 73, मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ और अबू नईम फ़िल हुलियह भाग 9 पृष्ठ 135 वग़ैरह में भी आती है।

9. हज़रत अनस इनकी हदीस नं. 8 पर मौसूलन है और नं. 20, 65, 74 पर मौक़ूफ़न है और इब्ने अबी शीबह भाग 1 पृष्ठ 235, इब्ने माजा भाग 1 पृष्ठ 284, दारे क़ुतनी भाग 1 पृष्ठ 290 और तलख़ीसुल हबीर भाग 1 पृष्ठ 219।

10. अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस की हदीस अल्लामा ज़ैलई ने नसबुरीयह भाग 1 पृष्ठ 418 में बयान किया है। इमाम बुख़ारी रह. ने इसे तालीक़न ही बयान किया है, बैहक़ी में भी इशारतन आई है।

11. वाइल बिन हिज्र की हदीस इस किताब के नं. 10, 23, 27, 31, 70, 71, 72 में आती है। इसके अलावा तहावी भाग 1 पृष्ठ 132 मोत्ता मुहम्मद पृष्ठ 72, दारे क़ुतनी भाग 1 पृष्ठ 291 बैहक़ी भाग 2 पृष्ठ 81, मुस्नद अहमद भाग 4 पृष्ठ 317, मुस्लिम भाग 2 पृष्ठ 114, अबू उवानह भाग 2 पृष्ठ 97, अबू दाऊद भाग 1 पृष्ठ 263, इब्ने हिब्बान भाग 3 पृष्ठ 254, मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ भाग 2 पृष्ठ 28 और मुस्नद हुमैदी भाग 1 पृष्ठ 392 वग़ैरह में भी आती है।

12. मालिक बिन हुवैरिस इनकी हदीस इस किताब के नं. 7, 54, 55, 66, 102 में आ रही है। यह नसाई भाग 2 पृष्ठ 94, .152, मुस्नद अहमद भाग 5 पृष्ठ 53, इब्ने माजा भाग 1 पृष्ठ 282, अबू उवानह भाग 2 पृष्ठ 94, बैहक़ी भाग 2 पृष्ठ 71 और दारे क़ुतनी भाग 1 पृष्ठ 92।

13. अबू मूसा अशअरी की मौसूल हदीस दारे क़ुत्नी भाग 1 पृष्ठ 292 में आती है। यह बैहक़ी और नस्बुर्रायह में भी आती है।

14. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब यह हदीस बैहक़ी भाग 2 पृष्ठ 74 में बयान है।

15. हज़रत अली रज़ि. की हदीस और उसके हवालाजात हदीस नं. 1 में गुज़र चुके हैं।

16. हज़रत अबू हुरैरह इनकी हदीस नं. 19, 22, 57 पर आ रही है और यह मुस्नद अहमद भाग 2 पृष्ठ 132, इब्ने माजा भाग 1 पृष्ठ 282, दारे क़ुतनी भाग 1 पृष्ठ 228 और इब्ने ख़ुज़ैमह भाग 1 पृष्ठ 234 में भी आती है।

17. उम्मे दरदा रज़ि. इनका असर नं. 24, 25 में आ रहा है।

इमाम बुख़ारी रह. ने यहाँ पर तो सतरह नाम ही गिनवाए हैं और नं. 27 की हदीस के बाद हज़रत उमर रज़ि. की हदीस मुअल्लक़न ज़िक्र की है और इसके बाद हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. की हदीस मुअल्लक़न और हज़रत जाबिर और उबैद बिन उमैर अन अबीहि की भी ज़िक्र की है। यानी दो नामों का इज़ाफ़ा किया है।

18. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह का असर इस किताब के नं. 18, 61 में आता है। इब्ने माजा ने मरफ़ूअ पृष्ठ 62, मुस्नद अहमद भाग 3 पृष्ठ 310 और तलख़ीसुल जैर भाग 1 पृष्ठ 219 ज़िक्र किया है।

19. उबैद बिन उमैर अन अबीहि यानी उमैर अल्लैसी की हदीस इब्ने माजा हिन्दुस्तानी पृष्ठ 62 और सिन्धी के साथ भाग 1 पृष्ठ 283 में आती है।

20. अबू सईद ख़ुदरी इमाम साहब रह. ने इनका भी ज़िक्र नं. 18, 61 में मुत्तसिलन किया है। यह असर मौसूल है, यह इब्ने अबी शीबह

भाग 1 पृष्ठ 235 में भी आता है।

21, 22. इसके अलावा इमाम बुख़ारी रह. ने अब्दुल्लाह बिन मसऊद की हदीस जिसे अहनाफ़ पेश करते हैं जो अगरचे सही नहीं है। इसकी सही सनद वाली हदीस जो अबू दाऊद भाग 1 पृष्ठ 272, नसाई भाग 2 पृष्ठ 184, इब्ने ख़ुज़ैमह भाग 1 पृष्ठ 301, दारे क़ुत्नी पृष्ठ 339 और बैहक़ी भाग 2 पृष्ठ 72 वग़ैरह में भी आती है। इसमें ततबीक़ का ज़िक्र है और रफ़अ यदैन का भी ज़िक्र है जिसकी हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास ने ततबीक़ को रद्द किया है और रफ़अ यदैन को रद्द नहीं किया है। इसका वर्णन अपनी जगह पर आएगा। मानो कि इब्ने मसऊद रज़ि. और हज़रत सअद रज़ि. के नाम मिलाकर कुल बाईस हुए।

23. हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ि. ग़ैर मुत्तसिल और ग़ैर सही रिवायत जिसे अहनाफ़ पेश करते हैं। अस्ल में हज़रत बरा बिन आज़िब की मुत्तसिल हदीस इमाम बैहक़ी ने पेश की है जिसमें रुकूअ में जाते और उठते समय रफ़अ यदैन का ज़िक्र है भाग 2 पृष्ठ 77। इसके अलावा भी जिन सहाबा से रफ़अ यदैन रुकूअ में साबित है उनका ज़िक्र कर देना बेहतर समझता हूँ ताकि पाठकों को ढूडने में परेशानी न हो।

24 से 30. इमाम हाकिम फ़रमाते हैं सिर्फ़ रफ़अ यदैन एक ऐसी सुन्नत है जिस पर वह दस सहाबा अमल करते थे जिनको दुनिया में जन्नत की ख़ुशख़बरी दी गई थी और यह दस सहाबा निम्नलिखित हैं : अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि., उमर बिन ख़त्ताब रज़ि., उसमान बिन अफ़्फ़ान रज़ि., अली बिन अबी तालिब रज़ि., सअद बिन अबी वक़ास रज़ि., अबदुर्रहमान बिन औफ़, ज़ुबैर बिन अव्वाम, तलहा बिन उबैदुल्लाह, सईद बिन ज़ैद और अबू उबैदह बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हुम इनका ज़िक्र इन किताबों में है : तोहफ़तुल अहवज़ी भाग 1 पृष्ठ 219, नैलुल अवतार भाग 2 पृष्ठ 149, तसहीलुल क़ारी पृष्ठ 42, बैहक़ी भाग 2 पृष्ठ 75, तालीक़ुल मुमजद पृष्ठ 91, अवनुल बारी पृष्ठ 313, नस्बुर्रायह भाग 1 पृष्ठ 417, तलख़ीस पृष्ठ 82 इनमें हज़रत उमर रज़ि. और हज़रत अली रज़ि. की हदीस का ज़िक्र अलग भी आ चुका है। हज़रत अबु बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहुअन्हुम की हदीस भी बैहक़ी में आती है भाग 4 पृष्ठ

73 और हज़रत उस्मान रज़ि. का असर जुज़ सुब्की में अलग भी आता है। मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ भाग 2 पृष्ठ 70 में भी है और हज़रत सअद बिन वक़्क़ास रज़ि. का ज़िक्र भी ऊपर गुज़र चुका है। बाक़ी के लिए यह असर है।

31. अब्दुल्लाह बिन जाबिर अल बयाज़ी का ज़िक्र बैहक़ी में आता है भाग 2 पृष्ठ 75।

32. अबान अल मुहारबी का ज़िक्र इब्ने अबी मुनदह ने किया है (अल असाबह लिइब्ने हिज्र) के हवाले से।

33. अबू उमामह बाहिली का ज़िक्र अल्लामा इब्ने जोज़ी ने किया है। मौज़ूआते कबीर भाग 1 पृष्ठ. 98

34. अबू दरदा रज़ि. का ज़िक्र अल्लामा इब्ने हज़्म ने महल्ली में किया है भाग 4 पृष्ठ 79।

35. एक देहाती से रफ़अ यदैन की हदीस है जो मुस्नद अहमद भाग 3 पृष्ठ 6 में भी आती है।

36. हज़रत हुसैन बिन अली रज़ि. का ज़िक्र भी अल्लामा इब्ने जोज़ी ने किया है। मौज़ूआत भाग 2 पृष्ठ 98।

37. हकीम बिन उमैर का ज़िक्र मुस्नद अहमद में है और अल्लामा अब्दुल हैई ने तालीक़ुल मुमजद में ज़िक्र किया है।

38. इमरान बिन हुसैन का ज़िक्र भी अल्लामा इब्ने जोज़ी ने किया है। मौज़ूआत।

39. उक़बा बिन आमिर का ज़िक्र तबरानी कबीर भाग 17 पृष्ठ 197 में आता है। अल्लामा हैसमी ने मजमउज़्ज़वाइद में भी ज़िक्र किया है। भाग 2 पृष्ठ 103।

40. फ़ुलतान बिन आसिम अल जरमी इसका ज़िक्र अबू नईम ने अख़बारे असबहान में किया है भाग 2 पृष्ठ 162।

41. क़तादह रज़ियल्लाहु अन्हु अल्लामा सुब्की ने अपनी जुज़ में, अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने मुसन्नफ़ में ज़िक्र किया है भाग 2 पृष्ठ 68।

42. मुआज़ बिन जबल अल्लामा अब्दुल हैई ने तालीक़ुल मुमजद पृष्ठ 91 और तोहफ़तुल अहवज़ी भाग 1 पृष्ठ 134 में सुयूती की अल

قال الحسن وحميد بن
هلال[1] كان أصحاب رسول الله ﷺ يرفعون ايديهم لم يستثن أحداً من
اصحاب النبي ﷺ دون أحد ولم يثبت اهل العلم عن اصحاب النبي ﷺ

हज़रत हसन रज़ि. और हुमैद बिन हिलाल कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल. के सारे सहाबा रफ़अ यदैन किया करते थे और उन्होंने किसी एक सहाबी को भी इससे अलग नहीं किया और इसके अलावा किसी एक सहाबी से भी इसके ख़िलाफ़ कोई चीज़ पूरे तौर पर सुबूत को नहीं पहुँचती।

इज़हारुल मुतनासिरह के हवाले के साथ ज़िक्र किया है।

43 से 51. अबू मसऊद भाग 1 पृष्ठ 43 अन्सारी, 44. उबई बिन कअब, 45. हज़रत बुरैदह, 46. हसन बिन अली, 47. ज़ैद बिन साबित, 48. ज़ियाद बिन हारिस अस्सदाई, 49. सलमान फ़ारसी, 50. हज़रत आइशा बिन्त सिद्दीक़ह और 51. अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अन्हुम का अल्लामा वहीदुज़्ज़मा ने तसहीलुल क़ारी पृष्ठ 774 में किया है।

चौदह सौ सहाबा रज़ि.

ज़ियाद बिन हरमलह कहते हैं मैंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह से पुछा तुम हुदैबियह की सन्धि के दिन कितने आदमी थे तो उन्होंने कहा कि हम चौदह सौ आदमी थे और नमाज़ में हर तकबीर पर रफ़अ यदैन करते थे। मजमउज़्ज़वाइद भाग 2 पृष्ठ 101

सारे सहाबा का इजमाअ (सहमति)

1. इस किताब में ही आगे नं. 29, 30 में है कि हज़रत हसन बसरी रह. और हुमैद बिन हिलाल कहते हैं कि सारे सहाबा नमाज़ में इसी तरह रफ़अ यदैन करते थे जैसे पँखे हैं।

यही वजह है कि इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अलैह ने दावा किया है कि किसी एक भी सहाबी से सहीह सनद के साथ साबित नहीं कि वह रफ़अ यदैन न करता हो।

ما وصفنا وكذلك روايته عن عدة من علماء اهل مكة واهل الحجاز
و اهل العراق والشام والبصرة واليمن وعدة من اهل خراسان منهم
سعيد بن جبير وعطاء بن ابي رباح ومجاهد والقاسم بن محمد وسالم بن
عبدالله بن عمر بن الخطاب وعمر بن عبد العزيز والنعمان بن
ابي عياش والحسن وابن سيرين وطاؤس و مكحول وعبدالله بن دينار
و نافع مولى عبد الله بن عمر والحسن بن مسلم وقيس بن سعد
وعدة كثيرةوكذلك يروى عن ام الدرداء انها كانت ترفع يديها ،
وقد كان عبدالله بن المبارك يرفع يديه وكذلك عامة اصحاب
ابن المبارك منهم على بن حسين وعبدالله بن عمر ويحيى بن يحيى
ومحدثى أهل بخارى منهم عيسى بن موسى وكعب بن سعيد ومحمد بن
سلام وعبدالله بن محمد المسندى وعدة ممن لا يحصى لااختلاف بين
من وصفنا من اهل العلم .

और यही चीज़ बहुत से मक्का, अहले हिजाज़, अहले इराक़, शामी, बसरी, यमनी और अहले ख़ुरासान के उलमा से मरवी है। इन में से 1. सईद बिन जुबैर, 2. अता बिन अबी रबाह, 3. मुजाहिद, 4. क़ासिम बिन मुहम्मद, 5. सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर, 6. उमर बिन अब्दुल अज़ीज़, 7. नोमान बिन अबी अयाश, 8. हसन, 9. इब्ने सीरीन, 10. ताऊस, 11. मकहूल, 12. अब्दुल्लाह बिन दीनार, 13. नाफ़ेअ मौला अब्दुल्लाह बिन उमर, 14. हसन बिन मुस्लिम, 15. क़ैस बिन सअद और भी बहुत से हैं।

और 16. हज़रत उम्मे दरदा भी रफ़अ यदैन किया करती थीं।

और 17. अब्दुल्लाह बिन मुबारक और उनके शागिर्द 18. अली बिन हुसैन, 19. अब्दुल्लाह बिन उमर और 20. यहया बिन यहया भी रफ़अ यदैन किया करते थे।

और बुख़ारी के मुहद्दिसीन भी रफ़अ यदैन किया करते थे। उनमें से ईसा बिन मूसा, कअब बिन सईद, मुहम्मद बिन सलाम, अब्दुल्लाह बिन

1. अब्दुल्लाह बिन मुबारक की रिवायत आगे आ रही है नं. 42 में

وكان عبدالله بن الزبير وعلى بن عبدالله ويحي بن معين واحمد ابن حنبل واسحاق بن ابراهيم يثبتون هذه الأحاديث من رسول الله ﷺ ويرونها حقاه وهؤلاء اهل العلم من اهل زمانهم .

وكذلك روى عن عبدالله بن عمر بن الخطاب

٢ـ حدثنا علىّ بن عبدالله ثنا سفيان ثنا الزهرى عن سالم بن عبدالله عن ابيه قال رأيت رسول الله ﷺ يرفع يديه إذا كبر واذا رفع رأسه من الركوع ، ولا يرفع ذلك بين السجدتين .

मुहम्मद मुस्नदी। और इनके अलावा भी बहुत से इल्म वाले हैं जो रफ़अ यदैन के मसले में इख़्तिलाफ़ नहीं करते।

और अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर, अली बिन अब्दुल्लाह, यहया बिन मईन, अहमद बिन हम्बल और इसहाक़ बिन इबराहीम। इन सब हदीसों को अल्लाह के रसूल सल्ल॰ से साबित करते हैं और इसे हक़ समझते हैं। और हाल यह है कि ये लोग अपने दौर के मशहूर और मारूफ़ अहले इल्म में से थे।

और इसी तरह यह हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर बिन ख़त्ताब से भी मरवी है।

2. अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल॰ को देखा रफ़अ यदैन करते जब तकबीर कहते और जब रुकूअ से सर उठाते और सजदों में रफ़अ यदैन न करते।

और इमाम तिर्मिज़ी ने उनका असर नक़्ल किया है भाग 1 पृष्ठ 220 और अब्दुल्लाह बिन मुबारक के शागिर्दों में से अहमद बिन हम्बल रह॰, यहया बिन मईन, इब्ने महदी रह॰, वकीअ बिन अल जराह रह॰ भी हैं। उनका ज़िक्र आगे आ रहा है।

1. यह इमाम बुख़ारी के शिक्षक हैं। अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर बिन ईसा अल मक्की अल क़ुरशी। दूसरे अली बिन अब्दुल्लाह बिन मदीनी रह॰ हैं। बाक़ी भी सब इमाम साहब रह॰ के शिक्षक हैं।

قال على بن عبدالله وكان اعلم زمانه رفع اليدين حق على المسلمين بما روى الزهرى عن سالم عن ابيه[٢] .

٣ـ حدثنا مسدد ثنا يحيى بن سعيد ثنا عبد الحميد بن جعفر ثنا محمد بن عمرو قال شهدت ابا حميد فى عشرة من اصحاب النبى ﷺ احدهم ابو قتادة بن الربيعى رضي الله عنه يقول انا اعلمكم بصلاة رسول الله ﷺ قالوا : كيف؟ فوالله ما كنت أقدمنا له صحبة ولا اكثرنا له اتباعا ، قال : بل رقبته . قالوا : فاذكر ، قال : كان اذا قام الى الصلاة رفع يديه واذا ركع واذا رفع رأسه من الركوع واذا قام من الركعتين فعل مثل ذلك .

और अली बिन अब्दुल्लाह फ़रमाते हैं जो कि अपने ज़माने के सबसे बड़े आलिम थे कि रफ़अ यदैन करना मुसलमानों पर वाजिब है। इस हदीस की वजह से जो ज़ुहरी रह॰ ने सालिम रह॰ से उसने अपने बाप अब्दुल्लाह बिन उमर से रिवायत किया है।

3. हज़रत अबू हुमैद रज़ि॰ दस सहाबा की सभा में फ़रमाते हैं। उनमें से एक अबू क़तादा बिन रबई रज़ि॰ हैं कि मैं आप सल्ल॰ की नमाज़ को तुम से ज़्यादा जानता हूँ, उन्होंने कहा कि तुम कैसे ज़्यादा जान सकते हो जबकि न तुम हम से पहले ईमान लाए और न ही ज़्यादा आपके साथ रहे तो उन्होंने कहा मैं सिर्फ़ नमाज़ के मसाइल ही पर ध्यान देता रहा तो उन्होंने कहा कि फिर बयान कीजिए तो उसने कहा कि जब आप नमाज़ के लिए खड़े होते तो रफ़अ यदैन करते फिर जब रुकूअ करते और रुकूअ से सर उठाते तो फिर भी रफ़अ यदैन करते और जब दो रकअतों से खड़े होते तो भी रफ़अ यदैन इसी तरह करते।

---

2. यह हदीस मुतवातिर है और तमाम हदीस की किताबों में आती है और इसके सारे रावी भी रफ़अ यदैन के करने और कहने वाले हैं।

قال البخارى : سألت ابا عاصم عن حديث عبد الحميد بن جعفر فعرفه(١) .

٤ـ قال حدثنى عبدالله بن محمد عنه ثنا عبدالحميد بن جعفر ثنا محمد ابن عمرو بن عطاء قال شهدت ابا حميد فى عشرة من اصحاب النبى صلى الله عليه وسلم أحدهم ابو قتادة بن ربعى قال انا اعلمكم بصلاة النبى ﷺ فذكر مثله فقالوا كلهم صدقت

٥ـ اخبرنا عبدالله بن محمد ثنا عبدالملك بن عمرو ثنا فليح بن سليمان حدثنى عباس بن سهل(١) قال اجتمع ابو حميد وابو اسيد وسهل لبن سعد و محمد بن مسلمة فذكروا صلاة رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم فقال ابو حميد : انا اعلمكم بصلاة رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم قام فكبر فرفع يديه ثم رفع يديه حين كبر للركوع فوضع يديه على ركبتيه

इमाम बुख़ारी रह॰ फ़रमाते हैं कि अबू आसिम से उस हदीस के बारे में पूछा जिसे अब्दुल हमीद बिन जाफ़र ने बयान किया तो उन्होंने इस को मारूफ़ यानी सहीह कहा।

4. दूसरी सनद से कि अबू हुमैद दस सहाबा की मजलिस में बयान फ़रमाते हैं उनमें एक अबू क़तादा बिन रबई थे कि मैं तुम सबसे नमाज़ के मसाइल ज़्यादा जानता हूँ तो फिर हदीस बयान की तो उन दस सहाबा न कहा तू ठीक कहता है। इसी तरह आप की नामज़ थी।

5. तीसरी सनद से हज़रत अब्बास बिन सहल कहते हैं एक सभा में अबू हुमैद, अबू उसैद, सहल बिन सअद और मुहम्मद बिन मसलमह जमा थे तो वहाँ नमाज़ का ज़िक्र हुआ तो अबू हुमैद ने कहा कि मैं आप की नमाज़ को ख़ूब जानता फिर क़ियाम किया तो रफ़अ यदैन किया फिर रफ़अ यदैन करके रुकूअ किया और घुटनों पर हाथ रखे।

1. तहावी ने किसी और हदीस की सनद पर एतिराज़ किया है जिस का जवाब इमाम साहब रह॰ ने दिया है।

2. इन हदीसों की तख़रीज शुरू पृष्ठ 31 में गुज़र चुकी है।

٦ـ حدثنا عبيد بن يعيش(٢) ثنا يونس بن بكير انا ابن اسحاق*(٢) عن العباس بن سهل الساعدى قال كنت بالسوق مع ابى قتادة و ابى أسيد وابى(١) حميد كلهم يقولون انا اعلمكم بصلاة رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم فقالوا لأحدهم : صل فكبر ثم قرء ثم كبر وركع . فقالوا : اصبت صلاة رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم .

٧ـ حدثنا ابو الوليد هشام بن عبدالملك وسليمان بن حرب قالا ناشعبة عن قتادة(٢) عن نضر بن عاصم عن مالك بن الحويرث رضى الله تعالى عنه قال : كان رسول الله ﷺ إذا كبر رفع يديه واذا ركع وإذا رفع رأسه من الركوع .

٨ـ حدثنا محمد بن عبدالله بن حوشب ثنا عبدالوهاب ثنا حميد عن انس رضي الله عنه قال : كان رسول الله ﷺ يرفع يديه عند الركوع .

٩ـ حدثنا اسماعيل ثنا ابن ابى الزناد عن موسى بن عقبة عن عبدالله بن الفضل عن عبدالرحمن بن هرمز الأعرج عن عبيدالله بن ابى رافع عن على رضي الله عنه ان رسول الله ﷺ كان اذا قام الى الصلاة

6. चौथी सनद से अब्बास बिन सहल साअदी कहते हैं कि मैं अबू क़तादा रज़ि॰, अबू उसैद रज़ि॰ और अबू हुमैद के साथ बाज़ार में था वह कहते थे कि मैं आप की नमाज़ को ख़ूब अच्छी तरह से जानता हूँ। फिर उन्होंने एक को कहा नमाज़ पढ़ी फिर तकबीर कही फिर क़िरअत की फिर तकबीर कही और रुकूअ (यानी कुछ शब्द का इज़ाफ़ा किया) तो सबने कहा सचमुच तूने आपकी नमाज़ को ठीक बयान किया है।

7. मालिक बिन हुवैरिस बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल॰ जब नमाज़ के लिए तकबीर कहते तो रफ़अ यदैन करते और जब रुकूअ करते और रुकूअ से सर उठाते तो भी रफ़अ यदैन करते।

8. हज़रत अनस रज़ि॰ बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल॰ रुकूअ के समय भी रफ़अ यदैन किया करते थे।

9. हज़रत अली रज़ि॰ बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल॰

المكتوبة رفع يديه حذو منكبيه واذا اراد ان يركع ويصنعه اذا رفع رأسه من الركوع ولا يرفع فى شئ من صلاته وهو قاعد ، واذا قام من السجدتين رفع يديه كذلك وكبر .

١٠- حدثنا ابو نعيم الفضل بن دكين انبأنا قيس بن سليم العنبرى قال سمعت غلقمة بن وائل بن حجر حدثنى ابى قال صليت مع النبى ﷺ فكبر حين افتتح الصلاة ورفع يديه ثم رفع يديه حين اراد ان يركع وبعد الركع .

١١- قال البخارى وروى ابو بكر النهشلى عن عاصم بن كليب عن ابيه ان عليا ؓ رفع يديه فى اول التكبير ثم لم يعد بعد، وحديث عبيدالله

जब भी फ़र्ज़ नमाज़ के लिए खड़े होते तो तकबीर कह कर कन्धों तक रफ़अ यदैन करते फिर जब रुकूअ करते और रुकूअ से सर उठाते तो भी इसी तरह करते और अपनी नमाज़ में बैठने की हालतों में किसी जगह रफ़अ यदैन न करते फिर जब दो रकअतों से उठते तो रफ़अ यदैन करते और तकबीर कहते।

10. हज़रत वाइल बिन हिज्र बयान करते हैं कि मैंने नबी करीम सल्ल॰ के साथ नमाज़ पढ़ी तो आप सल्ल॰ ने शुरू में तकबीर कही और रफ़अ यदैन किया फिर रुकूअ करते समय भी और रुकूअ के बाद उठते समय भी रफ़अ यदैन किया।

11. इमाम बुख़ारी रह॰ फ़रमाते हैं कि अबू बक्र नहशली ने हज़रत अली रज़ि॰ की हदीस बयान की है कि पहली तकबीर पर रफ़अ यदैन किया बाद में नहीं किया (इसका जवाब है) कि उबैदुल्लाह की हदीस (जो नं. 1 में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है) वह शाहिद है यानी गवाही के तौर पर बयान है (जबकि यह असर शाहिद नहीं है) क्योंकि यह उसूल है) कि जब दो आदमी बयान करने वाले हों, एक कहे कि मैंने देखा इस तरह किया, दूसरा कहता है कि मैंने ऐसा करते नहीं देखा तो जिसने कहा मैंने करते देखा वह दलील होगा और जो कहता है

هو شاهد ، فاذا روى رجلان عن محدث قال احدهما رأيته فعل وقال الآخر لم أره فالذى قال رأيته فعل فهو شاهد[1] . والذى قال لم يفعل فليس هو بشاهد لأنه لم يحفظ الفعل وهكذا قال عبدالله بن الزبير[2] كشاهدين شهدا ان لفلان على فلان الف درهم باقراره وشهد آخر انه لم يقر بشئ يعمل بقول الشاهدين ويسقط ما سواه وكذلك قال بلال: رأيت النبى ﷺ [صلى] فى الكعبة وقال الفضل بن عباس لم يصل وأخذ الناس[1] بقول بلال لانه شاهد ولم يلتفتوا الى قول من قال لم يصل حين لم يحفظ .

قال عبدالرحمن بن مهدى : ذكرت للثورى حديث النهشلى عن عاصم بن كليب فانكره[3]

नहीं किया वह दलील नहीं होगा। क्योंकि वह इस काम को याद नहीं रख सका। ऐसे ही अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि॰ कहते हैं कि अगर दो गवाह कह दें कि फ़लाँ के एक हज़ार दिरहम फुलाँ के ज़िम्मे हैं। क्योंकि उन्होंने इसकी प्रतिज्ञा की है तो दो गवाहों की बात मानी जाएगी तीसरे की बात नहीं मानी जाएगी।

इसी तरह हज़रत बिलाल रज़ि॰ कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल॰ को ख़ाना काबा में नमाज़ पढ़ते देखा है और फ़ज़्ल बिन अब्बास रज़ि॰ कहते हैं नहीं पढ़ी तो हज़रत बिलाल रज़ि॰ की बात मानी जाएगी। क्योंकि वह (दलील और) गवाह है और जो कहता है नहीं पढ़ी उसकी बात छोड़ दी जाएगी।

अब्दुर्रहमान बिन महदी कहते हैं कि मैंने सुफ़ियान सूरी से नहशली की हदीस के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा वह साबित नहीं है यानी उसकी सनद सहीह नहीं, उसके सहीह होने से इन्कार किया।

١٢- حدثنا عبدالله بن يوسف انبأنا مالك عن ابن شهاب عن سالم عن ابيه(١) ان رسول الله ﷺ كان يرفع يديه حذو منكبيه اذا افتتح الصلاة واذا كبر للركوع واذا رفع رأسه من الركوع رفعهما كذلك وكان لا يفعل ذلك فى السجود .

---

12. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल॰ हमेशा रफ़अ यदैन करते जब भी नमाज़ शुरू करते और जब भी रुकूअ करते और रुकूअ से सर उठाते और सजदों में न करते।

---

1. यह वही हदीस है जो मोत्ता इमाम मालिक रह॰ में है लेकिन मोत्ता की अस्ल किताब में रुकूअ करते समय रफ़अ यदैन का ज़िक्र है और रुकूअ से उठते समय रफ़अ यदैन के शब्द लिखने से रह गए हैं। और फिर इसी तरह के शब्द यहया बिन बुकैर रह॰, क़अनबी रह॰, अबू मुस्अब रह॰, सईद बिन अबी मरयम रह॰, सईद बिन अफ़ीर रह॰ और इमाम शाफ़ई रह॰ ने भी नक़्ल कर दिए हैं हालाँकि या यह किताब की ग़लती है क्योंकि उस समय हाथों से किताब नक़्ल की जाती थी या फिर किसी रावी की ग़लती है। इसके ख़िलाफ़ बीसियों रावी से वह शब्द ज़िक्र हैं जिस तरह इमाम बुख़ारी की जुज़ में हैं और इमाम दारे क़ुत्नी ने इसे ग़राइबे मालिक में ज़िक्र किया है जोकि निम्नलिखित हैं– इब्ने वहब, इब्ने क़ासिम, यहया बिन सईद, इब्ने अबी अवेस, अब्दुर्रहमान बिन महदी, जुवैरियह बिन अस्मा, इबराहीम बिन तहमान, इब्ने मुबारक, बशर बिन उमर, उसमान बिन उमर, अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ अत्तिन्नेसी, ख़ालिद बिन मख़ल्लद, मक्की बिन इबराहीम, मुहम्मद बिन हसन (मोत्ता इमाम मुहम्मद पृष्ठ 95), ख़ारजह बिन मुसअब, अब्दुल मलिक बिन ज़ियाद अन्नसीबी, अब्दुल्लाह बिन नाफ़ेअ अस्साइग़, अबू क़ुर्रह मूसा बिन तारिक़, मुतरफ़ बिन अब्दुल्लाह, क़ुतेबा बिन सईद इनके अलावा इमाम ज़ुहरी के शागिर्द अज़्ज़ुबैदी, मअमर, अवज़ाई, मुहम्मद बिन इसहाक़, सुफ़ियान बिन हुसैन, अक़ील बिन ख़ालिद, शुऐब बिन अबी हमज़ह, इब्ने

(١٣) أخبرنا ايوب بن سليمان ثنا ابو بكر بن ابى اويس عن سليمان ابن بلال عن العلاء انه سمع سالم بن عبدالله ان اباه كان إذا رفع رأسه من السجود ، وإذا أراد ان يقوم رفع يديه .

(١٤) حدثنا عبدالله بن صالح ثنا الليث أخبرنى نافع ان عبدالله بن عمر كان إذا استقبل الصلاة رفع يديه ؛ قال : وإذا ركع وإذا رفع رأسه من الركوع وإذا قام من السجدتين كبر .

---

13. दूसरी सनद से इब्ने उमर रज़ि॰ की हदीस है कि जब नमाज़ के लिए काबे की तरफ़ रुख़ करते तो रफ़अ यदैन करते और फिर जब रुकूअ करते और जब रुकूअ से सर उठाते और जब दो रकअतों से उठते तो भी रफ़अ यदैन करते।

14. तीसरी सनद से इब्ने उमर रज़ि॰ की हदीस है कि जब नमाज़ के लिए काबे की तरफ़ रुख़ करते और फिर जब रुकूअ करते और जब रुकूअ से सर उठाते और जब दो रकअतों से उठते तो भी रफ़अ यदैन करते।

उययनह, यूनुस बिन यज़ीद और यहया बिन सईद अन्सारी सारे के सारे इस तरह बयान करते हैं कि रुकूअ जाने और रुकूअ से उठते समय भी रफ़अ यदैन करते थे (अत्तहमीद भाग 5 पृष्ठ 61 वग़ैरह)

इससे यह भी मालूम हुआ कि मुदव्वनह में जो सहनून तन्नोख़ी की रिवायत से इब्ने वहब अन मालिक की रिवायत है–اذا كان يرفع يديه افتتح التكبير للصلاة انتهى' कि "जब नमाज़ शुरू करते तो शुरू की तकबीर कहते रफ़अ यदैन करते आख़िर समय तक हदीस" तो यह हदीस अस्ल में संक्षिप्त है। लेकिन अहनाफ़ इसे अपनी दलील समझ बैठे हैं। हाल यह है कि इब्ने वहब की पूरी रिवायत पूरे तौर पर ऊपर मौजूद है।

इसके अलावा एक और भी हदीस इब्ने उमर से है जिसको इमाम हाकिम ने मौज़ूअ और बातिल लिखा है।

(١٥) حدثنی الحمیدی انبأنا الولید بن مسلم قال سمعت زید ابن واقد يحدث عن نافع ان ابن عمر رضی اللہ عنهما کان إذا رأى رجلا لايرفع يديه إذا ركع وإذا رفع رماه بالحصى

(١٦) قال البخاری ویروی عن ابی بکر بن عیاش عن حصین عن مجاهد انه لم یر ابن عمر رضی اللہ تعالی عنهما رفع يديه إلا فی أول التكبير وروى عنه اهل العلم انه لم يحفظ من ابن عمر إلا ان يكون سها كما يسهو الرجل فی الصلاة فی الشئ بعد الشئ كما أن أصحاب محمد ربما يسهون فی الصلاة فيسلمون فی الركعتين وفی الثلاث، ألا ترى أن ابن عمر - رضی اللہ عنهما كان يرمى من لا يرفع يديه بالحصى فكيف يترك ابن عمر شيأ يأمر به غيره . وقد رأى النبي ﷺ فعله

قال البخاری قال يحيى بن معين : حديث ابی بکر عن حصين انما هو توهم منه لا اصل له

15. नाफ़ेअ कहते हैं कि इब्ने उमर जब किसी आदमी को देखते कि वह नमाज़ में रफ़अ यदैन नहीं करता तो उसे कंकड़ों से मारते।

16. इमाम बुख़ारी फ़रमाते हैं कि मुजाहिद से बयान किया जाता है कि उन्होंने अब्दुल्लाह बिन उमर को रफ़अ यदैन करते नहीं देखा मगर सिर्फ़ पहली तकबीर में। विद्वान कहते हैं कि यह बात इब्ने उमर रज़ि. से महफ़ूज़ नहीं यानी सही साबित नहीं है। क्योंकि हो सकता है कि नमाज़ में कोई भूल हो गई हो जैसे और जगह भूल जाते हैं या और भी सहाबा नमाज़ में भूल जाते रहे और दो तीन रकअत पर सलाम फेर देते। क्योंकि अब्दुल्लाह बिन उमर तो रफ़अ यदैन न करने वाले को कंकड़ों से मारते तो जिसका वह हुक्म करते उसे ख़ुद कैसे छोड़ सकते हैं। क्योंकि उन्होंने ख़ुद अल्लाह के रसूल सल्ल. को करते देखा था। और यह कि इमाम बुख़ारी रह. फ़रमाते हैं कि मुझे यहया बिन मईन ने कहा कि मुजाहिद का यह असर सिर्फ़ वहम और गुमान है इसकी हक़ीक़त कुछ नहीं।

(١٧) حدثنا محمد بن يوسف ثنا عبدالأعلى بن مسهر ثنا عبدالله بن العلاء بن زبير ثنا عمرو بن المهاجر قال كان عبدالله بن عامر سألنى ان استأذن له على عمر بن عبدالعزيز فاستأذنت له عليه فقال الذى جلد أخاه فى ان رفع يديه إن كنا لنؤدب عليه ونحن غلمان فى المدينة فلم يأذن له ، قال البخارى : وكان زائدة لا يحدث إلا أهل السنة إقتداء بالسلف

ولقد رحل قوم من اهل بلخ مرجية الى محمد ابن يوسف بالشام فاراد محمد اخراجهم منها حتى تابوا من ذلك ورجعوا الى السبيل والسنة، ولقد رأينا غير واحد من أهل العلم يستتيبون

17. उमर बिन मुहाजिर कहते हैं कि अब्दुल्लाह बिन आमिर ने मझे कहा कि मेरे लिए उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ से इजाज़त माँगो मैंने इजाज़त माँगी तो उन्होंने इजाज़त देने से इन्कार कर दिया क्योंकि उसने अपने भाई को रफ़अ यदैन करने की वजह से कोड़े से मारा था हालाँकि जब हम मदीने में अभी बच्चे थे तो हमें रफ़अ यदैन करने की तालीम दी जाती थी।

इमाम बुख़ारी रह. फ़रमाते हैं कि हज़रत ज़ाइदह सल्फ़ के तरीक़े के मुताबिक़ सिर्फ़ अहले सुन्नत से हदीस लिया करता था।

और एक मुरजियह का गिरोह अहले बल्ख़ से मुहम्मद बिन यूसुफ़ के पास आया तो उन्होंने उन्हें अपनी मजलिस से निकाल देना चाहा यहाँ तक कि उन्होंने इससे तौबा की और सही सुन्नत के रास्ते पर आ गए। इसी तरह हमने कई इल्म वाले को देखा कि वह मुख़ालिफ़त करने वाले से तौबा करवाते वरना उन्हें अपनी मजलिस से निकाल देते।

और अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ने मक्का के क़ाज़ी सुलैमान बिन हर्ब को कहा था कि राय वाले से अलग हो जा और उसे मक्का में फ़त्वा देने से रोक दिया यहाँ तक वह कि वहाँ से निकाल दिया गया।

أهل الخلاف فان تابوا وإلا اخرجوهم من مجالسهم ولقد كلم عبدالله ابن الزبير سليمان بن حرب وهو يومئذ قاضى مكة ان يحجر على بعض أهل الرأى فحجر عليه سليمان فلم يكن يجترئ بمكة ان يفتى حتى يخرج عنها .

(١٨) حدثنا مالك بن اسماعيل ثنا شريك عن ليث عن عطاء قال رأيت ابن عباس وابن الزبير واباسعيد وجابرا رضى الله عنهم يرفعون أيديهم إذا افتتحو الصلاة ، وإذا ركعوا

(١٩) حدثنا محمد بن الصلت ثنا ابو شهاب عبد ربه عن محمد ابن اسحاق عن عبدالرحمن الاعرج عن ابى هريرة رضي الله عنه أنه كان إذا كبر رفع يديه وإذا ركع وإذا رفع رأسه من الركوع

(٢٠) حدثنا مسدد ثنا عبدالواحد بن زياد عن عاصم الاحول قال رأيت انس بن مالك رضي الله عنه إذا افتتح الصلاة كبر ورفع يديه ويرفع كلما ركع ورفع رأسه من الركوع

18. हज़रत अता फ़रमाते हैं कि मैंने ख़ुद अब्दुल्लाह बिन अब्बास, अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर, अबू सईद और हज़रत जाबिर को नमाज़ के शुरू में और रुकूअ के समय रफ़अ यदैन करते देखा है।

19. अब्दुर्रहमान अअरज कहते हैं कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० जब नमाज़ के लिए तकबीर कहते और जब रुकूअ करते और जब रुकूअ से सर उठाते रफ़अ यदैन किया करते थे।

20. आसिम अल अहवल कहते हैं कि मैंने हज़रत अनस को देखा कि वह जब भी नमाज़ शुरू करते और रुकूअ करते और रुकूअ से सर उठाते तो रफ़अ यदैन करते थे।

(٢١) حدثنا مسدد ثنا هشيم عن ابى حمزة قال رأيت ابن عباس رضى الله تعالى عنهما يرفع يديه حيث كبر وإذا رفع رأسه من الركوع.

(٢٢) حدثنا سليمان بن حرب ثنا يزيد بن ابراهيم عن قيس بن سعد عن عطاء قال صليت مع ابى هريرة رضي الله عنه فكان يرفع يديه إذا كبر وإذا رفع .

(٢٣) حدثنا مسدد ثنا خالد ثنا حصين عن عمرو بن مرة قال دخلت مسجد حضرموت فاذا علقمة بن وائل يحدث عن ابيه قال : كان النبي ﷺ يرفع يديه قبل الركوع .

(٢٤) حدثنا خطاب عن اسماعيل عن عبد ربه بن سليمان بن عمير قال رأيت ام الدرداء ترفع يديها فى الصلاة حذو منكبيها .

(٢٥) حدثنا ابن مقاتل ثنا عبدالله بن المبارك انا اسماعيل حدثنى عبد ربه بن سليمان بن عمير قال رأيت أم الدرداء رضى الله عنها ترفع يديها فى الصلاة حذو منكبيها حين تفتتح الصلاة وحين تركع فاذا

21. अबू जमरह कहते हैं कि मैंने इब्ने अब्बास को दखा वे जब रुकूअ के लिए तकबीर कहते और रुकूअ से सर उठाते तो रफ़अ यदैन किया करते थे।

22. हज़रत अता कहते हैं मैंने हज़रत अबू हुरैरह के साथ नमाज़ पढ़ी वे जब रुकूअ के लिए तकबीर कहते और रुकूअ से सर उठाते रफ़अ यदैन किया करते थे।

23. उमर बिन मुर्रह कहते हैं कि मैं हज़रेमौत की मस्जिद में दाख़िल हुआ वहाँ अलक़मह बिन वाइल अपने बाप से बयान कर रहे थे कि नबी सल्ल० रुकूअ करने से पहले रफ़अ यदैन किया करते थे।

24. अब्दे रब्बह कहते हैं कि मैंने हज़रत उम्मे दरदा को देखा वे नमाज़ में कन्धों तक रफ़अ यदैन किया करती थीं।

25. दूसरी सनद से अब्दे रब्बह बयान करते हैं कि मैंने उम्मे दरदा को देखा वे रफ़अ यदैन किया करती थीं नमाज़ के शुरू में भी और

قالت سمع الله لمن حمده رفعت يديها وقالت ربنا ولك الحمد .

قال البخارى ونساء بعض أصحاب النبى ﷺ هن أعلم من هؤلاء حين رفعن أيديهن فى الصلاة

٢٦ ـ حدثنا اسحاق بن ابراهيم الحنظلى ثنا محمد بن فضيل عن عاصم بن كليب عن محارب بن دثار رأيت ابن عمر رضى الله تعالى عنهما رفع يديه فى الركوع فقلت له ما ذلك؟ فقال: كان رسول الله ﷺ اذا قام من الركعتين كبر ورفع يديه .

(٢٧) حدثنا مسلم بن ابراهيم ثنا شعبة ثنا عاصم بن كليب عن ابيه عن وائل بن حجر الحضرمى رضى الله عنه انه صلى مع النبى ﷺ فلما كبر ورفع يديه فلما اراد أن يركع رفع يديه .

قال البخارى : ويروى عن عمر بن الخطاب(٢) رضى الله عنه عن النبى ﷺ .

وعن ابى هريرة عن النبى ﷺ ،

रुकूअ के वक़्त भी कन्धों तक और जब समिअल्लाहु लिमन हमिदह कहती फिर भी रफ़अ यदैन करतीं और रब्बना लकल हम्द कहतीं।

इमाम बुख़ारी फ़रमाते हैं कुछ सहाबा की बीवियाँ भी उन लोगों से ज़्यादा आलिम थीं। क्योंकि वे भी रफ़अ यदैन किया करती थीं।

26. मुहारिब बिन दसार कहते हैं मैंने अब्दुल्लाह बिन उमर को देखा कि रुकूअ के वक़्त रफ़अ यदैन करते थे। मैंने कहा कि यह क्या तो उन्होंने फ़रमाया कि अल्लाह के रसूल सल्ल० तो दो रकअत से उठ कर भी रफ़अ यदैन करते थे।

27. हज़रत वाइल बिन हिज्र हज़रमी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्ल० के साथ नमाज़ पढ़ी तो आप नमाज़ के शुरू में भी और रुकूअ के वक़्त भी रफ़अ यदैन किया करते थे।

इमाम बुख़ारी फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० से भी आप सल्ल० की हदीस मरवी है।

और हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से भी रफ़अ यदैन में आप सल्ल० की हदीस मरवी है।

وعن جابر بن عبدالله رضى الله عنه عن النبى ﷺ

وعن عبيد بن عمير عن ابيه عن النبى ﷺ

وعن ابن عباس رضى الله عنه عن النبى ﷺ ، وعن ابى موسى عن النبى صلى الله تعالى عليه وسلم كان يرفع يديه عند الركوع واذا رفع رأسه قال البخارى: وفيما ذكرنا كفاية لمن يفهمه ان شاء الله تعالى .

(٢٨) حدثنا محمد بن مقاتل انا عبدالله عن ابن جريج قراءة قال اخبرنى الحسن بن مسلم أنه سمع طاؤسا يسأل عن رفع اليدين فى الصلاة قال رأيت عبدالله وعبدالله وعبدالله يرفعون ايديهم فعبد الله ابن عمر وعبدالله بن عباس وعبدالله بن الزبير. قال طاؤس فى التكبيرة الاولى التى للاستفتاح باليدين ارفع مما سواها من التكبير قلت لعطاء أبلغكم ان التكبيرة الاولى ارفع مما سواها من التكبير ؟ قال : لا . قال البخارى : ولو تحقق حديث مجاهد انه لم ير ابن عمر رفع يديه لكان

और हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से भी आप सल्ल० की हदीस मरवी है।

और उबैद बिन उमैर रह० अपने बाप से वह अल्लाह के रसूल सल्ल० से भी बयान करते हैं।

और अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० से भी इसी तरह आप सल्ल० की हदीस मरवी है।

और अबू मूसा रज़ि० से भी आप सल्ल० की हदीस आती है कि आप सल्ल० रुकूअ करते और रुकूअ से सर उठाते वक़्त रफ़अ यदैन किया करते थे। इमाम बुख़ारी रह० फ़रमाते हैं कि इल्म वाले के लिए इतनी दलीलें भी इंशाअल्लाह काफ़ी होंगी।

28. हज़रत ताऊस बयान करते हैं कि मैंने तीन अब्दुल्लाह देखे हैं जो नमाज़ में रफ़अ यदैन करते थे। अब्दुल्लाह बिन उमर, अब्दुल्लाह बिन अब्बास और अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुम। हज़रत ताऊस कहते हैं कि पहली तकबीर जो नमाज़ के शुरू में है उस वक़्त रफ़अ यदैन दूसरे के मुक़ाबिले में ज़्यादा आवाज़ से करते थे। लेकिन

طاؤس وسالم ونافع ومحارب بن دثار وابى الزبير حين رؤه اولى لان ابن عمر رضى الله تعالى عنهما رواه عن رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم فلم يكن يخالف الرسول مع ماروا اهل العلم من اهل مكة والمدينة واليمن والعراق يرفع يديه .

٢٩۔ حتى لقد حدثنى مسدد قال نا يزيد بن زريع عن سعيد عن قتادة عن الحسن قال كان اصحاب النبى صلى الله تعالى عليه وسلم كانما ايديهم المراوح يرفعونها اذا ركعوا واذا رفعوا رؤسهم .

(٣٠) حدثنا موسى بن اسماعيل ثنا ابو هلال عن حميد بن هلال قال كان اصحاب لنبى صلى الله تعالى عليه وسلم اذا صلوا كان أيديهم حيال آذانهم كانها المراوح .

قال البخارى : فلم يستثن الحسن وحميد بن هلال احدا من اصحاب النبى ﷺ دون احد .

मैंने हज़रत अता से पूछा तो वह फ़रमाते थे कि पहली रफ़अ यदैन बुलन्द नहीं करते बल्कि सारी एक जैसी ही करते थे।

इमाम बुख़ारी रह॰ फ़रमाते हैं कि अगर मुजाहिद से यह साबित भी हो जाए कि उन्होंने अब्दुल्लाह बिन उमर को रफ़अ यदैन करते नहीं देखा तो ताऊस, सालिम, नाफ़ेअ, मुहारिब बिन दसार और अबुज़्ज़ुबैर की हदीस ज़्यादा बेहतर है। क्योंकि वह इब्ने उमर से बयान करते हैं कि उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्ल॰ से रफ़अ यदैन की हदीस को बयान किया तो वह अपनी बयान की हुई हदीस से मतभेद कैसे कर सकते हैं।

इसके बावजूद कि तमाम मक्का, मदीना, यमन और इराक़ के इल्म वाले रफ़अ यदैन किया करते थे।

29. और हज़रत हसन बसरी रह॰ तो कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल॰ के तमाम सहाबा रुकूअ जाते और रुकूअ से उठते समय रफ़अ यदैन करते थे जैसा कि उनके हाथ पंखे हैं।

30. और हज़रत हुमैद बिन हिलाल भी कहते हैं कि सहाबा नमाज़ में कानों तक रफ़अ यदैन किया करते थे जैसा कि पंखे हैं।

(٣١) حدثنا محمد بن مقاتل انا عبدالله انا زائدة بن قدامة ثنا عاصم بن كليب الجرمى حدثنا ابى ان وائل بن حجر أخبره قال قلت لأنظرن الى صلاة رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم كيف يصلى؟ قال فنظرت اليه قال : فكبر ورفع يديه ثم لما اراد ان يركع رفع يديه مثلها ثم رفع راسه فرفع يديه مثلها ثم جئت بعد ذلك فى زمان فيه برد عليهم جل الثياب تحرك أيديهم من تحت الثياب .

قال البخارى : ولم يستثن(1) وائل من اصحاب النبى صلى الله تعالى عليه وسلم أحدا اذا صلوا مع النبى صلى الله عليه وسلم انه لم يرفع يديه.

इमाम बुख़ारी रह॰ फ़रमाते हैं कि हज़रत हसन और हुमैद बिन हिलाल ने किसी एक सहाबी को भी इससे अलग नहीं किया।

31. हज़रत वाइल बिन हिज्र बयान करते हैं कि मैं आप सल्ल॰ की नमाज़ देखने के लिए गया था तो मैंने देखा कि नमाज़ शुरू करते समय तकबीर कही और रफ़अ यदैन किया फिर जब रुकूअ का इरादा किया तो भी रफ़अ यदैन किया। फिर जब मैं दूसरी बार गया तो उस समय ठंडक का मौसम था और लोगों ने कपड़े ओढ़ रखे थे और सहाबी कपड़ों के नीचे से भी रफ़अ यदैन करते थे।

इमाम बुख़ारी रह॰ फ़रमाते हैं कि हज़रत वाइल ने भी किसी एक सहाबी का भी रफ़अ यदैन न करना बयान नहीं किया।

(पृष्ठ 59 का हाशिया)

1. हज़रत हसन बसरी रह॰ का असर इब्ने अबी शीबह भाग 1 पृष्ठ 235, बैहक़ी महल्ली भाग 4 पृष्ठ 89, नस्बुरीयह भाग 1 पृष्ठ 416 और दिरायह भाग 1 पृष्ठ 154 में भी आता है। और हुमैद बिन हिलाल के असर की तरफ़ अल्लामा ने तलख़ीसुल हबीर भाग 1 पृष्ठ 230 में भी इशारा किया है।

1. इमाम बुख़ारी रह॰ ने सहाबा के इजमाअ का ज़िक्र किया है और उम्मत में सहाबा का मक़ाम बहुत ऊँचा है और फिर वाइल बिन हिज्र की हदीस जो कि जीवन के अंतिम दिनों की है जबकि हज्जतुल विदाअ

(٣٢) قال البخارى ويروى عن سفيان عن عاصم بن كليب عن عبدالرحمن بن الاسود عن علقمة قال : قال ابن مسعود رضي الله عنه ألا اصلى بكم صلاة رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم فصلى ولم يرفع يديه الامرة .

وقال احمد بن حنبل عن يحيى بن آدم نظرت فى كتاب عبدالله ابن ادريس عن عاصم بن كليب ليس فيه ثم لم يعد[1] .

---

32. इमाम बुख़ारी रह॰ फ़रमाते हैं कि अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि॰ से बयान किया जाता है कि मैं तुमको अल्लाह के रसूल सल्ल॰ वाली नमाज़ पढ़ कर दिखाता हूँ तो उन्होंने नमाज़ पढ़ी और सिर्फ़ पहली बार रफ़अ यदैन किया।

इमाम अहमद बिन हम्बल रह॰ कहते हैं कि यहया बिन आदम कहते हैं कि मैंने अब्दुल्लाह बिन इदरीस की किताब में आसिम बिन कुलैब की हदीस देखी इसमें लम यइद के शब्द नहीं थे और यही सही

हो रहा है और क़ुरआन की अंतिम आयत दीन की तकमील की ख़ुशख़बरी दे रही है। उस समय हज़रत वाइल बिन हिज्र रज़ि॰ सिर्फ़ नमाज़ देखने के लिए गए हैं और इसके बाद कोई नया मसला ज़ाहिर न होना था न हुआ। मानो कि यह आप सल्ल॰ का अंतिम काम है और इसी पर सहाबा का इजमाअ है। इससे बढ़कर और क्या दलील हो सकती है। अंतिम नमाज़ का ज़िक्र मुक़द्दमा में हो चुका है।

फिर हदीस की सेहत का यह मक़ाम है कि हदीस वालों के अलावा अहनाफ़ ने भी माना है। अल्लामा तहावी इस हदीस से दलील ले रहे हैं कि रफ़अ यदैन कानों तक होना चाहिए। अफ़सोस का मक़ाम है कानों तक की दलील ले रहे हैं और रफ़अ यदैन की दलील नहीं लेते।

1. इमाम बुख़ारी का मक़सद यह है कि हदीस के आगे शब्द लम यइद नहीं हैं और हदीस से सिर्फ़ यही मालूम होता है कि पहली बार रफ़अ यदैन किया और पहली बार सिर्फ़ एक बार किया ईदैन की तरह बार-बार नहीं किया। अगरचे यह हदीस सही नहीं है और जो इब्ने

فهذا اصح لأن الكتاب احفظ عند أهل العلم لأن الرجل يحدث بشئ ثم يرجع الى الكتاب فيكون كما فى الكتاب .

(٣٣) حدثنا الحسن بن الربيع ثنا ابن ادريس عن عاصم بن كليب عن عبد الرحمن بن الاسود ثنا علقمة ان عبدالله رضي الله عنه قال علمنا رسول

है। क्योंकि याद करने में ग़लती लग सकती है लेकिन किताब का लिखा हुआ महफ़ूज़ होता है और इल्म वाले किताब से ही ग़लती सही करते हैं।

33. हज़रत अलक़मह कहते हैं कि अब्दुल्लाह बिन मसऊद ने बयान किया कि हम को अल्लाह के रसूल सल्ल॰ ने नमाज़ सिखाई। तो

मसऊद की सही हदीस है उसमें रफ़अ यदैन का ज़िक्र है और रुकूअ में जाते हुए रफ़अ यदैन का ज़िक्र अगरचे वह भी हदीस संक्षिप्त है। क्योंकि रुकूअ के बाद नमाज़ के हिस्से का ज़िक्र नहीं है जैसा कि शुरू में ज़िक्र हो चुका है।

इस हदीस को ज़ईफ़ कह कर इब्ने मुलक़्क़न ने बदरे मुनीर में नक़्ल किया है। इमाम अहमद रह॰, यहया बिन मईन रह॰, इमाम बुख़ारी रह॰, अबू हातिम रह॰, दारे क़ुत्नी, अबू दाऊद और इब्ने हिब्बान वग़ैरह ने इसे ज़ईफ़ कहा है। इमाम हाकिम ने कहा है कि यह हदीस मुख़्तसर है यानी पूरी हदीस में रुकूअ के वक़्त रफ़अ यदैन का ज़िक्र है। यानी जो हदीस अहनाफ़ पेश करते हैं वह शाज़ है और महफ़ूज़ वही है जिसे रुकूअ के वक़्त रफ़अ यदैन करके रुकूअ में ततबीक़ करने का ज़िक्र है जैसा कि हदीस नं. 33 में ज़िक्र है और जो हदीस अहनाफ़ पेश करते हैं उसको इब्ने तैमिया ने बातिल कहा है (मिन्हाजुस्सुन्नह भाग 4 पृष्ठ 115) और मौज़ूअ और झूठी रिवायत कहा है और इब्ने क़य्यिम ने भी अल मुनीर पृष्ठ 149 में बातिल और ग़ैर सही कहा है।

الله ﷺ الصلاة فقام فكبر ورفع يديه ثم ركع فطبق يديه فجعلها بين ركبتيه فبلغ ذلك سعدا فقال صدق اخي، ألابل قد كنا نفعل ذلك فى أول الاسلام ثم أمرنا بهذا .

قال البخارى : هذا المحفوظ عند أهل النظر من حديث عبد الله ابن مسعود

(٣٤) وحدثنا الحميدى ثنا سفيان عن يزيد بن ابى زياد ههنا عن ابن ابى ليلى عن البراء ﷺ ان النبى ﷺ كان يرفع يديه إذا كبر قال سفيان : لما كبر الشيخ لقنوه ثم لم يعد . فقال : ثم لم يعد .

नमाज़ में क़याम किया फिर तकबीर कही और रफ़अ यदैन करके फिर रुकूअ किया। तो दोनों हाथों में ततबीक़ दी और दोनों हाथ मिलाकर दोनों घुटनों के बीच किए। जब यह हदीस हज़रत सअद को पहुँची तो उन्होंने फ़रमाया कि मेरे भाई ने ठीक कहा। इस्लाम के शुरू में हम इसी तरह (रुकूअ) करते थे बाद में हमें इस तरह हुक्म दिया गया। इमाम बुख़ारी फ़रमाते हैं कि अहले फ़न के नज़दीक अब्दुल्लाह बिन मसऊद की हदीस इन शब्दों से ही महफ़ूज़ है।

34. हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु से हदीस है कि अल्लाह के रसूल सल्ल॰ जब तकबीर कहते उस वक़्त रफ़अ यदैन करते।

हज़रत सुफ़ियान कहते हैं कि जब मेरे शिक्षक यज़ीद बूढ़े हो गए तो लोगों ने कहा "फिर न करते?" तो उन्होंने कहा फिर न करते।

وكذلك روى الحفاظ من سمع يزيد بن ابى زياد قديما منهم الثورى وشعبة وزهير ليس فيه ثم لم يعد .

(٣٥) حدثنا محمد بن يوسف ثنا سفيان عن يزيد بن ابى زياد عن ابن ابى ليلى عن البراء ﷺ قال كان النبى ﷺ يرفع يديه إذا كبر حذاء اذنيه .

(٣٦) قال البخارى : وروى وكيع عن ابن ابى ليلى عن اخيه عيسى والحكم بن عتيبة عن ابن ابى ليلى عن البراء ﷺ قال رأيت النبى ﷺ يرفع يديه إذا كبر ثم لم يرفع .

इमाम बुख़ारी फ़रमाते हैं कि हदीस के हाफ़िज़ों ने यज़ीद बिन अबी ज़ियाद से पहले यही सुना था। उनमें से सुफ़ियान सौरी, शीबा और ज़ुहरी हैं उन्होंने लम यइद के शब्द बयान नहीं किए।

35. सुफ़ियान के वास्ते से बरा की हदीस कि अल्लाह के रसूल सल्ल॰ तकबीर के साथ रफ़अ यदैन करते कानों तक।

36. इमाम बुख़ारी रह॰ कहते हैं कि वकीअ के वास्ते से हज़रत बरा की हदीस में है कि तकबीर के साथ रफ़अ यदैन किया फिर न किया।

---

1. हज़रत बरा रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस में सिर्फ़ नमाज़ के शुरू का तरीक़ा है कि नमाज़ शुरू करते हुए रफ़अ यदैन करके तकबीर से शुरू करना चाहिए। लम यइद का शब्द ग़लत है। इस तरह की हदीसें सिर्फ़ नमाज़ के शुरू से ताल्लुक़ रखती हैं या नमाज़ का तरीक़ा बयान करने के लिए हैं जैसे हज़रत अबू हुरैरह या इब्ने उमर रज़ि॰ की हदीस है लेकिन अहनाफ़ बेचारे दलीलों से इतने ख़ाली दामन होते हैं कि डूबते हुए तिन्कों का सहारा लेना शुरू कर देते हैं। जैसा कि किताब के मुक़द्दमे में बयान हो चुका है। इस हदीस को सुफ़ियान बिन उययनह, शाफ़ई, हुमैदी, अहमद, यहया बिन मईन, दारमी और बुख़ारी वग़ैरह ने ज़ईफ़ कहा है और उनकी सही हदीस को बैहक़ी ने बयान किया है जिसमें रुकूअ के वक़्त रफ़अ यदैन का ज़िक्र है।

قال البخاری : وانما روی ابن ابی لیلی هذا من حفظه فاما من حدث عن ابن ابی لیلی من کتابه فانما حدث عن ابن ابی لیلی عن یزید فرفع الحدیث الی تلقین یزید والمحفوظ ما روی عنه الثوری وشعبة وابن عیینة قدیما .

(۳۷) قال البخاری: فأما احتجاج بعض ما لا یعلم بحدیث وکیع عن الأعمش عن المسیب بن رافع عن تمیم بن طرفة عن جابر بن سمرة ﷺ قال دخل علینا النبی ﷺ ونحن رافعوا أیدینا فی الصلاة فقال : مالی اراکم رافعی أیدیکم کانها اذناب خیل شمس اسکنوا فی

इमाम बुख़ारी फ़रमाते हैं कि इब्ने अबी लैला ने याददाश्त से इस तरह बयान किया है लेकिन उनकी किताब में ये शब्द नहीं हैं।

इब्ने अबी लैला ने यज़ीद से जो शब्द बयान किए हैं वे भी तलक़ीन के बाद बयान किए हैं लेकिन महफ़ूज़ शब्द वही हैं जिनको हज़रत सौरी रह., शीबा और इब्ने उययनह ने पहले से बयान किया है।

37. इमाम बुख़ारी फ़रमाते हैं कि कुछ जाहिलों का हज़रत जाबिर बिन समुरह की हदीस से दलील लेना "कि हम नमाज़ में हाथ उठा रहे थे तो आप सल्ल. ने आकर फ़रमाया सरकश घोड़ों की दुमों की तरह हाथ क्यों हिलाते हैं नमाज़ सुकून से पढ़ा करो" तो यह हदीस तशहहुद के बारे में है। क़याम के बारे में नहीं है। क्योंकि (सलाम के वक़्त) कुछ

1. सारे मुहद्दिसीन ने इस हदीस को सलाम के अध्याय में बयान किया है यहाँ तक कि अल्लामा तहावी जो कि अहनाफ़ के सबसे बड़े वकील हैं उन्होंने ने भी इसे सलाम के अध्याय में बयान किया है। लेकिन आज के अहनाफ़ ज़बरदस्ती रफ़अ यदैन के अध्याय में पेश कर रहे हैं। और अगर सारे मुहद्दिसीन ने रफ़अ यदैन के अध्याय में बयान नहीं किया तो आज के कमज़ोर इल्म वालों की क्या वक़अत है। इसका थोड़ा सा बयान मुक़द्दमे में भी आ चुका है और तफ़सील से बयान मेरी किताब जुज़ रफ़अ यदैन में आ चुका है।

الصلاة فانما کان هذا فی التشهد لا فی القیام کان یسلم بعضهم علی بعض فنهی النبی ﷺ عن رافع الأیدی فی التشهد ولا یحتج بهذا من له حظ من العلم هذا معروف مشهور لا اختلاف فیه .

ولو کان کما ذهب الیه لکان رفع الأیدی فی أول التکبیرة و أیضا تکبیرات العید منهیا عنها لأنه لم یستثن رفعا دون رفع وقد ثبت حدیث .

(۳۸) حدثناه ابو نعیم ثنا مسعر عن عبیدالله بن القبطیة قال سمعت جابر بن سمرة رضی الله تعالی عنهما یقول : کنا إذا صلینا خلف النبی ﷺ قلنا السلام علیکم السلام علیکم فاشار مسعر بیده فقال : ما بال هؤلاء یؤمنون بأیدیهم کانها اذناب خیل شمس انما یکفی احدکم ان یضع یده علی فخذه ثم یسلم علی اخیه من عن یمینه ومن عن شماله .

قال البخاری : فلیحذر امرء ان یتقول علی رسول الله ﷺ ما لم

लोग हाथ से सलाम कहते तो इस तरह हाथ उठा कर सलाम कहने से आप सल्ल. ने रोका था। इस हदीस से जो शख़्स दलील लेता है उसको इल्म का थोड़ा भाग भी नहीं मिला। यह मशहूर और मारूफ़ वाक़िआ है इसमें किसी तरह का कोई मतभेद नहीं है। और अगर वास्तव में यह रफ़अ यदैन से रोकने के लिए है तो फिर पहली रफ़अ यदैन भी वर्जित होगी और ईदैन की तकबीरों में भी वर्जित होगी। क्योंकि इसमें किसी रफ़अ यदैन को अलग नहीं किया गया।

38. और हदीस से इसी तरह साबित है कि जाबिर बिन समुरह कहते हैं कि हम आप सल्ल. के पीछे नमाज़ नहीं पढ़ते तो हाथ से अस्सलामु अलैकुम कहते और रावी मसअर ने अपने हाथ से इशारा करके दिखाया तो आप ने फ़रमाया यह जो हाथ से इशारा करते हैं उनको किया है पागल घोड़ों के दुमों की तरह हाथ हिलाते हैं तुम्हें इतना ही काफ़ी है कि हाथ तुम्हारी रानों पर ही रहें और (ज़ुबान से) अपने

कुछ ने कहा है कि यह हदीसें दो हैं यह उनकी ग़लती है दोनों

يقل قال الله تعالى عز وجل : (فليحذر الذين يخالفون عن امره ان تصيبهم فتنة او يصيبهم عذاب اليم)

(٣٩) حدثنا محمد بن يوسف ثنا سفيان عن عبد الملك قال سألت سعيد بن جبير عن رفع اليدين فى الصلاة فقال : هو شئ تزين به صلاتك .

(٤٠) حدثنا محمود انا عبدالرزاق انا ابن جريج أخبرنى نافع عن ابن عمر رضى الله تعالى عنهما كان يكبر بيديه حين يستفتح وحين يركع وحين يقول سمع الله لمن حمده وحين يرفع رأسه من الركوع وحين يستوى قائما . قلت لنافع كان ابن عمر يجعل الأول ارفعهن قال : لا

भाइयों पर दाएँ-बाएँ सलाम कहें।

इमाम बुख़ारी फ़रमाते हैं उनको अल्लाह के अज़ाब से डरना चाहिए कि वह अल्लाह के रसूल पर वह बात कहते हैं जो आपने नहीं कही। अल्लाह तआला क़ुरआन में फ़रमाता है कि उन लोगों को इस बात से डरना चाहिए कि उन्हें कोई मुसीबत या अज़ाब न आ ले।

39. अब्दुल मलिक कहते हैं मैंने सईद बिन जुबैर से रफ़अ यदैन के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा यह नमाज़ की ज़ीनत है।

40. हज़रत नाफ़ेअ कहते हैं कि इब्ने उमर शुरू नमाज़ में और रुकूअ के वक़्त और जब समिअल्लाहु लिमन हमिदह सर उठाने के वक़्त कहते और जब दो रकअतों से खड़े होते अपने हाथों से रफ़अ यदैन करते।

इब्ने जुरीज कहते हैं कि मैंने नाफ़ेअ से पूछा क्या पहली रफ़अ यदैन थोड़ा ऊँची करते? फ़रमाया नहीं।

हदीसें जिनको अलग-अलग करके बयान करते हैं। वास्तव में एक हैं मगर एक संक्षिप्त में है, दूसरी विस्तार से है और सारे मुहद्दिसीन ने इनको एक ही कहा है और अगर इनको वास्तव में दो मान लिया जाय तो पहली रफ़अ यदैन का जाइज़ होना कहाँ से पैदा होगा जबकि अहनाफ़ ईदैन और क़ुनूत वग़ैरह में भी करते हैं।

1. इमाम साहब रह॰ का मक़सद यह है कि उम्मती की भूल दलील

قال ابو عبدالله : ولم يثبت عند أهل النظر ممن ادركنا من أهل الحجاز وأهل العراق منهم عبدالله بن الزبير وعلى بن عبدالله بن جعفر ويحيى ابن معين واحمد بن حنبل واسحاق بن راهويه هؤلاء أهل العلم من بين أهل زمانهم فلم يثبت عند أحد منهم علم فى ترك رفع الأيدى عن النبى ﷺ ولا عن احد من اصحاب النبي ﷺ انه لم يرفع يديه .

(٤١) حدثنا محمد بن مقاتل ثنا عبدالله انبأ هشام عن الحسن وابن سيرين انهما كانا يقولان اذا كبر احدكم للصلاة فليرفع يديه حين يكبر وحين يرفع رأسه من الركوع . وكان ابن سيرين يقول هو من تمام الصلاة

(٤٢) حدثنا ابو اليمان انا شعيب عن الزهرى عن سالم بن عبدالله ان عبدالله بن عمر قال رأيت رسول الله ﷺ إذا افتتح التكبير فى الصلاة رفع يديه حين يكبر حتى يجعلهما حذو منكبيه واذا كبر للركوع فعل مثل ذلك وإذا قال سمع الله لمن حمده فعل مثل ذلك قال ربنا لك الحمد ولا يفعل ذلك حين يسجد ولا حين يرفع رأسه من

अबू अब्दुल्लाह यानी इमाम बुख़ारी फ़रमाते हैं कि जितने फ़न वाले मुहद्दिसीन हमको मिले हैं हिजाज़ और इराक़ वालों में से हैं। उनमें से अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर, अली बिन अब्दुल्लाह बिन जाफ़र, यहया बिन मईन, अहमद बिन हम्बल और इसहाक़ बिन राहूयह ये सब अपने ज़माने के पाए के आलिम हैं उनके नज़दीक कोई एक भी हदीस रफ़अ यदैन को छोड़ने की साबित नहीं है। और न ही यह साबित होता है कि कोई एक भी सहाबी रफ़अ यदैन न करता था।

41. हज़रत हसन बसरी और इब्ने शिहाब ज़ुहरी दोनों कहते थे कि नमाज़ के शुरू में और रुकूअ करते समय और रुकूअ से सर उठाते समय रफ़अ यदैन किया करो।

इब्ने सीरीन फ़रमाते हैं कि इससे नमाज़ की तकमील है।

नहीं हो सकती और जो शख़्स अल्लाह के रसूल सल्ल॰ के मुक़ाबले में

السجود :

قال البخارى: وكان ابن المبارك ﷺ يرفع يديه وهو أكبر أهل زمانه علما فيما يعرف فلو لم يكن عند من لم يعلم من السلف علم فاقتدى بابن المبارك فيما اتبع الرسول واصحابه والتابعين لكان اولى به من ان يتبع بقول من لا يعلم ، والعجب(!) ان يقول احدهم كان ابن عمر صغيرا فى عهد النبى ﷺ ، ولقد شهد النبى ﷺ لابن عمر بالصلاح .

(٤٣) حدثنى يحى بن سليمان ثنا ابن وهب عن يونس عن الزهرى عن سالم بن عبدالله عن ابيه عن حفصة رضى الله تعالى عنها ان رسول

---

42. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर फ़रमाते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल॰ को देखा जब नमाज़ की तकबीर शुरू करते तो कन्धों तक रफ़अ यदैन करते फिर जब रुकूअ के लिए तकबीर कहते तो इसी तरह करते और जब समिअल्लाहु लिमन हमिदह कहते तो इसी तरह करते और रब्बना ल-कल हम्द कहते और सज्दों में रफ़अ यदैन न करते।

इमाम बुख़ारी फ़रमाते हैं कि अब्दुल्लाह बिन मुबारक भी रफ़अ यदैन करते थे। हालाँकि वह अपने ज़माने के बहुत बड़े नामी-गरामी आलिम थे तो अगर किसी को इल्म न हो तो कम से कम अब्दुल्लाह बिन मुबारक की पैरवी करले। क्योंकि वह अल्लाह के रसूल सल्ल॰ की फ़रमाँबरदारी करने वाले और सहाबा के क़दम बक़दम चलने वाले थे। क्योंकि उनकी पैरवी करना किसी जाहिल की पैरवी करने से तो बेहतर है।

और जो लोग यह कहते हैं कि अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ तो आप सल्ल॰ के ज़माने में छोटी उमर के थे (तो उनकी हदीस क्यों क़बूल की जाए) हालाँकि ख़ुद अल्लाह के रसूल सल्ल॰ ने उनके नेक और मुत्तक़ी होने की गवाही दी है।

43. हज़रत हफ़्सा उम्मुल मोमिनीन बयान करती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल॰ ने फ़रमाया उमर का बेटा अब्दुल्लाह नेक और सालेह

एक उम्मती को खड़ा करता है उसको अल्लाह के अज़ाब से डरना

الله ﷺ قال : ان عبدالله بن عمر رجل صالح .

(٤٤) حدثنا على بن عبدالله ثنا سفيان قال قال عمرو قال ابن عمر انى لاذكر عمر حين اسلم فقالوا صبأ عمر صبأ عمر فجاء العاص ابن وائل فقال صبأ عمر فه فانا له جار فتركوه .

आदमी है (हालाँकि उनकी उमर कोई छोटी भी नहीं थी)।

44. अब्दुल्लाह बिन उमर अपने बाप उमर बिन ख़त्ताब के ईमान लाने का वाक़िआ बयान करते कि जब हज़रत उमर मुसलमान हुए तो लोगों ने कहा उमर ने अपने बाप-दादा का धर्म त्याग दिया तो आस बिन वाइल ने कहा कोई बात नहीं अगर उमर ने अपने बाप-दादा का धर्म छोड़ दिया है तो मैं उसको शरण देता हूँ, तो लोगों ने उन्हें छोड़ दिया।

इमाम बुख़ारी रह॰ फ़रमाते हैं कि कुछ जाहिल लोगों ने वाइल बिन

चाहिए। क्योंकि यह सिर्फ़ मामूली मसला नहीं बल्कि नमाज़ की नीयत है और इसे ज़ीनत सिर्फ़ सईद बिन जुबैर ही ने नहीं कहा बल्कि शाह वलीउल्लाह देहलवी रह॰ ने हुज्जतुल्लाहिल बालिग़ह भाग 2 पृष्ठ 10 में अल्लामा अब्दुल हई रह॰ लखनवी ने मोत्ता की तअलीक़ पृष्ठ 41 में इसे नमाज़ की तकमील कहा है। और इमाम बुख़ारी रह॰ ने फ़रमाया है कि किसी एक सहाबी से भी यह साबित नहीं कि वह रफ़अ यदैन न करता हो यानी जो शख़्स रफ़अ यदैन पर लान तान करता है वह सारे सहाबा पर लान तान करता है।

(पृष्ठ 69 का हाशिया)

1. तक़लीद करने वाले अहनाफ़ के यहाँ सिर्फ़ एक ही उसूल है इमाम की बात नीची न हो जाए चाहे क़ुरआन की आयत की तावील करना पड़े सही हदीस की तावील करना पड़े या किसी सहाबी का अपमान करना पड़े, किसी सहाबी को बे समझ, नादान, कम उम्र कहना पड़े तो कोई बात नहीं मगर इमाम के मसलक पर चोट न आनी चाहिए।

इस लिए यहाँ भी यही बात है कि इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कम

قال البخاری : وطعن من لا یعلم فقال فی وائل بن حجر ان وائل بن حجر من ابناء ملوك الیمن وقدم علی النبی ﷺ فأكرمه وأقطع له أرضا وبعث معه معاویة بن ابی سفیان رضی الله عنه .

(٤٥) أخبرنا حفص بن عمر ثنا جامع بن مطر عن علقمة بن وائل عن ابیه ان النبی ﷺ اقطع له ارضا بحضرموت .

قال البخاری : وقصة وائل مشهورة عند أهل العلم وما ذكر النبی ﷺ فی أمره وما أعطاه معروف بذهابه الی النبی ﷺ مرة بعد مرة

हिज्र पर लान-तान करते हुए कहा कि वे अरब के नवाबों में से थे। जब आप सल्ल॰ के पास आए तो आप सल्ल॰ ने उनकी इज़्ज़त फ़रमाई और उन्हें जागीर भी दी और उनके साथ हज़रत मुआवियह बिन अबी सुफ़ियान को भेजा था।

45. ख़ुद हज़रत वाइल बिन हिज्र बयान करते हैं कि आप ने उन्हें जागीर दी और उनके साथ हज़रत मुआवियह को भेजा और उनको हज़रेमौत नामक जगह पर जागीर दी।

इमाम बुख़ारी रह॰ फ़रमाते हैं कि वाइल का वाक़िआ तो सारे इल्म वाले लोगों में मशहूर है कि आप सल्ल॰ इनसे क्या फ़रमाया और किया दिया करते थे और उनका बार-बार आप सल्ल॰ के पास आना भी साबित है।

उम्र थे हालाँकि सहाबी अगर नाबालिग़ बच्चा भी है तो भी किसी सहाबी से झूठ बोलना साबित नहीं है। (क्योंकि सारे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन सच्चे और आदिल हैं) इमाम साहब रह॰ ने बयान किया है कि इब्ने उमर रज़ि॰ पूरे समझदार भी थे और नेक और सालेह भी।

ولو ثبت عن ابن مسعود والبراء وجابر رضی الله تعالی عنهم عن النبی ﷺ شیئ لكان فی علل هؤلاء الذین لا یعلمون انهم یقولون اذا ثبت الشی عن النبی ﷺ ان رؤساءنا لم یاخذوا بهذا ولیس هذا بماخوذ ما یریدون الحدیث للالغاء برأیهم ولقد قال وكیع: من طلب الحدیث كما جاء فهو صاحب سنة[1] ومن طلب الحدیث لیقوی هواه فهو صاحب بدعة یعنی ان الانسان ینبغی ان یلغی رأیه لحدیث النبی ﷺ حیث ثبت الحدیث ولا یعلل بعلل لا یصح لیقوی هواه .

और अगर इब्ने मसऊद, बरा और जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हुम से कोई चीज़ साबित भी होती तो उन (की असनाद) में ऐसी-ऐसी कमज़ोरियाँ और कमियाँ हैं जिनको यह लोग जानते ही नहीं। इसके बावजूद कहते हैं कि ठीक से यह मसला हदीस से साबित है। लेकिन चूँकि हमारे बुज़ुर्गों ने इसे क़बूल नहीं किया हम भी क़बूल नहीं करते और इस तरह अल्लाह के रसूल सल्ल॰ की हदीसों को सिर्फ़ अपनी राय से टाल देते हैं। हालाँकि हज़रत वकीअ फ़रमाते हैं कि जो आदमी हदीस का इल्म हासिल करता है दीन के लिए तो वह अहले सुन्नत से है और जो आदमी हदीस का इल्म हासिल करता है कि अपनी राय और इच्छा को मज़बूत करने के लिए, तो वह बिदअती है यानी इन्सान को चाहिए कि रसूल के फ़रमान के सामने आनी राय को छोड़ दे जबकि वास्तव में हदीस साबित हो जाए, उसमें कोई कमी न निकालना चाहिए, सिर्फ़ इस लिए उसको सही न करे कि उसकी इच्छा पूरी होती है।

---

1. सालेहुल फ़लानी ईक़ाज़ में अल्लामा मुहम्मद हयात सिन्धी से नक़्ल करते हैं "कि मुक़ल्लिदीन को हदीस पढ़ते देखते हो वह हदीस को आप सल्ल॰ का इर्शाद समझ कर अध्ययन नहीं करते बल्कि अपने इमाम की दलीलों को ढूंडने के लिए अध्ययन करते हैं। और वकीअ का कहना है कि ऐसे लोग बिदअती हैं, अहले सुन्नत नहीं होते। क्योंकि जब कोई दलील उनके मुताबिक़ आती है तो प्रसन्न होते हैं और जब कोई हदीस मुख़ालिफ़ आती है तो उनके मन में नागवार होती है। हालाँकि अल्लाह

(٤٦) وقد ذكر عن النبي ﷺ لا يؤمن احدكم حتى يكون هواه تبعا لما جئت به

وقد قال معمر أهل العلم كان الأول فالأول أعلم وهؤلاء الآخر فالآخر عندهم أعلم ولقد قال ابن المبارك كنت أصلى الى جنب النعمان بن ثابت فرفعت يدى فقال : انما خشيت ان تطير فقلت : ان لم اطرفي اوله لم اطرفي الثانية قال وكيع رحمة الله على ابن المبارك كان حاضر الجواب فتحير الآخر وهذا شبه من الذين عادون في غيهم اذا لم ينصروا .

46. ख़ुद आप सल्ल॰ ने यह इर्शाद फ़रमाया है कि तुममें से कोई आदमी उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हो सकता जब तक अपनी राय और इच्छा को उस चीज़ के अधीन न करे जो मैं लेकर आया हूँ।

हज़रत मअमर कहते हैं कि जितने पहले ज़माने के लोग होते वे पिछलों के मुक़ाबले में ज़्यादा आलिम होते। लेकिन ये लोग कहते हैं कि पिछले पहलों के मुक़ाबले में ज़्यादा आलिम हैं।

अब्दुल्लाह बिन मुबारक कहते हैं कि मैं नोमान बिन साबित के साथ नमाज़ पढ़ रहा था तो मैंने रफ़अ यदैन किया तो उन्होंने कहा कि मुझे डर हुआ कि कहीं तू उड़ न जाए मैंने कहा कि अगर मैं पहली रफ़अ यदैन से नहीं उड़ा तो दूसरी से भी नहीं उड़ता।

हज़रत वकीअ कहते हैं कि अल्लाह तआला इब्ने मुबारक पर रहमत करे कितने ठीक वक़्त पर जवाब देने वाले थे तो उनका साथी हैरान रह गया और इसी तरह जब उनको कोई दलील नहीं मिलती तो हैरानी और नाफ़रमानी में पड़े रहते हैं।

तआला ने क़ुरआन में फ़रमाया है कि ईमान की निशानी ही यह है कि रसूल के फ़रमान को सुन कर दिल से माने और मन में किसी तरह की कोई नागवारी महसूस न करे। (सूरह निसा)

1. इस वाक़िए को इमाम बैहक़ी ने भाग 2 पृष्ठ 83 में, अहमद बिन हम्बल ने अस्सुन्नह पृष्ठ 59 में, इब्ने क़ुतैबा ने तावीलु मुख़्तलिफ़िल

(٤٧) حدثنا عبدالله بن صالح حدثني الليث حدثني يونس عن ابن شهاب أخبرني سالم بن عبدالله ان عبدالله يعني ابن عمر رضي الله تعالى عنهما قال رأيت رسول الله ﷺ إذا قام الى الصلاة رفع يديه حتى يكونا حذو منكبيه ثم يكبر ويفعل حين يرفع رأسه من الركوع ويقول سمع الله لمن حمده ولا يرفع حين يرفع رأسه من السجود .

(٤٨) حدثنا ابو النعمان ثنا عبد الواحد بن زياد ثنا محارب بن دثار قال رأيت عبدالله بن عمر اذا افتتح الصلاة كبر ورفع يديه واذا اراد ان يركع رفع يديه واذا رفع رأسه من الركوع .

(٤٩) حدثنا العياش بن الوليد ثنا عبد الاعلى ثنا عبيد الله بن نافع عن ابن عمر رضي الله تعالى عنهما أنه كبر ورفع يديه واذا ركع رفع يديه واذا قال سمع الله لمن حمده رفع يديه ويرفع ذلك ابن عمر الى النبي ﷺ .

अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ की हदीस के रावी

47. सालिम कहते हैं कि अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ से हदीस है कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल॰ को देखा कि जब आप नमाज़ के लिए खड़े होते तो कन्धों तक रफ़अ यदैन करते और तकबीर कहते और रुकूअ से उठते वक़्त भी रफ़अ यदैन करते और समिअल्लाहु लिमन हमिदह और सज्दों में रफ़अ यदैन न करते।

48. मुहारिब बिन दसार कहते हैं कि मैंने हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ को देखा जब नमाज़ शुरू करते तकबीर कहते और रफ़अ यदैन करते

हदीस में, इब्ने हिब्बान ने अस्सिक़ात भाग 4 पृष्ठ 17 में, ख़तीब ने अपनी तारीख़ भाग 13 पृष्ठ 406 में और इब्ने अब्दुल बर्र ने तमहीद भाग 5 पृष्ठ 66 में मुअल्लक़न बयान किया है।

यह भी एक तरह का जाबिर बिन समुरह की हदीस का जवाब है कि अगर पहली का सुबूत है तो दूसरी मन्सूख़ क्यों है और अगर दूसरी वास्तव में मन्सूख़ है तो फिर पहली का सुबूत अलग होना चाहिए जोकि ख़त्म है।

(٥٠) حدثنا ابراهيم بن المنذر ثنا معمر ثنا ابراهيم بن طهمان عن ابى الزبير قال رأيت ابن عمر رضى الله تعالى عنهما حين قام الى الصلاة رفع يديه حتى يحاذى باذنيه وحين يرفع رأسه من الركوع فاستوى قائما فعل مثل ذلك .

(٥١) حدثنا عبدالله بن صالح ثنا الليث حدثنى نافع ان عبدالله بن عمر ﷺ كان اذا استقبل الصلاة يرفع يديه إذا ركع وإذا رفع رأسه من الركوع واذا قام من السجدتين كبر ورفع يديه

(٥٢) حدثنا موسى بن اسماعيل ثنا حماد بن سلمة عن ايوب عن نافع عن ابن عمر رضى الله عنهما ان رسول الله ﷺ كان اذا كبر رفع يديه وإذا رفع رأسه من الركوع

(٥٣) حدثنا موسى بن اسماعيل ثنا حماد بن سلمة عن ايوب عن نافع عن ابن عمر رضى الله تعالى عنهما ان رسول الله ﷺ كان اذا كبر رفع يديه واذا ركع واذا رفع رأسه من الركوع

और रुकूअ करते वक़्त भी रफ़अ यदैन करते और रुकूअ से उठते वक़्त भी रफ़अ यदैन करते।

49. नाफ़ेअ कहते हैं कि इब्ने उमर रज़ि. ने तकबीर कही और रुकूअ किया और जब समिअल्लाहु लिमन हमिदह कहा तो भी रफ़अ यदैन किया और फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल. इसी तरह किया करते थे।

50. अबुज़्ज़ुबैर कहते हैं कि मैंने इब्ने उमर रज़ि. को देखा कि जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो कानों तक रफ़अ यदैन करते और रुकूअ से खड़े होकर भी इसी तरह रफ़अ यदैन करते।

51. नाफ़ेअ कहते हैं कि इब्ने उमर रज़ि. नमाज़ शुरू करते समय रफ़अ यदैन करते और जब रुकूअ करते और रुकूअ से उठते और जब दो रकअतों से उठते तो भी रफ़अ यदैन करते।

52. नाफ़ेअ कहते हैं कि इब्ने उमर रज़ि. ने कहा अल्लाह के रसूल शुरू नमाज़ में और रुकूअ करते और उठते वक़्त रफ़अ यदैन किया

(٥٤) حدثنا موسى بن اسماعيل ثنا حماد بن سلمة انا قتادة عن نصر بن عاصم عن مالك بن الحويرث ﷺ ان النبى ﷺ كان إذا دخل فى الصلاة رفع يديه الى فروع اذنيه واذا رفع رأسه من الركوع فعل مثله .

(٥٥) حدثنا محمود "قال حدثنا البخارى قال" ابن علية انا خالد ان ابا قلابة كان يرفع يديه اذا ركع واذا رفع رأسه من الركوع وكان اذا سجد بدأ بركبتيه وكان اذا قام ارم على يديه قال : وكان يطمئن فى الركعة الاولى ثم يقوم وذكر عن مالك بن الحويرث رضى الله تعالى عنه .

(٥٦) اخبرنا عبدالله بن محمد انا ابو عامر ثنا ابراهيم بن طهمان عن ابى الزبير عن طاوس ان ابن عباس رضى الله تعالى عنهما كان اذا قام الى الصلاة رفع يديه حتى يحاذى اذنيه وإذا رفع رأسه من الركوع واستوى قائما فعل مثل ذلك .

करते थे।

53. एक और सनद से नाफ़ेअ की रिवायत ऊपर वाली हदीस की तरह है।

54. मालिक बिन हुवैरिस रज़ि. बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल. जब नमाज़ शुरू करते तो कानों तक रफ़अ यदैन करते और रुकूअ से उठते वक़्त भी इसी तरह करते।

55. ख़ालिद कहते हैं कि अबु क़लाबह रुकूअ करते और रुकूअ से उठते वक़्त रफ़अ यदैन किया करते थे। और जब सज्दा करते तो पहले घुटने रखते और जब फिर खड़े होते तो हाथों की टेक से खड़े होते और पहली रकअत बहुत इत्मीनान से अदा करके दूसरी के लिए खड़े होते और फ़रमाते कि हज़रत मालिक बिन हुवैरिस इसी तरह करते थे।

56. ताऊस कहते हैं कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि. जब नमाज़ शुरू करते तो कानों तक हाथ उठाते और जब रुकूअ से उठ कर खड़े होते तो भी इसी तरह करते।

(٥٧) حدثنا محمد بن مقاتل انا عافية انا اسماعيل حدثنى صالح
ابن كيسان عن الاعرج عن ابى هريرة رضى الله تعالى عنه قال كان
رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم يرفع يديه حذو منكبيه حين يكبر
يفتتح الصلاة وحين يركع .

(٥٨) حدثنا اسماعيل عن نافع ان عبدالله بن عمر رضى الله
تعالى عنهما كان اذا افتتح الصلاة رفع يديه حذو منكبيه واذا رفع
رأسه من الركوع .

(٥٩) حدثنا محمد بن مقاتل انبأنا عبدالله عن ابن عجلان قال
سمعت النعمان بن ابى عياش يقول لكل شئ زينة وزينة الصلاة ان
ترفع يديك اذا كبرت واذا ركعت واذا رفعت رأسك من الركوع .

(٦٠) حدثنا محمد بن مقاتل انا عبدالله انا الاوزاعى حدثنى
حسان بن عطية عن القاسم بن مخيمرة قال رفع الأيدى للتكبير
قال اراه حين ينحنى .

(٦١) حدثنا محمد بن مقاتل عن عبدالله انبأنا شريك عن ليث عن
عطاء قال : رأيت جابر بن عبدالله وابا سعيد الخدرى وابن عباس

---

57. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल॰ कन्धों तक रफ़अ यदैन करते थे जब भी नमाज़ शुरू करते और जब रुकूअ करते।

58. नाफ़ेअ कहते हैं कि इब्ने उमर नमाज़ के शुरू में रफ़अ यदैन करते और रुकूअ से उठ कर भी रफ़अ यदैन करते।

59. नोअमान बिन अबी अय्याश कहते हैं कि हर चीज़ की ज़ीनत है और नमाज़ की ज़ीनत रफ़अ यदैन है।

60. क़ासिम बिन मुख़ैमर कहते हैं कि तकबीर के साथ झुकते वक़्त रफ़अ यदैन करना चाहिए।

61. हज़रत अता कहते हैं कि मैंने देखा जाबिर बिन अब्दुल्लाह, अबू सईद ख़ुदरी, इब्ने अब्बास और इब्ने ज़ुबैर को कि वे नमाज़ के शुरू

وابن الزبير يرفعون ايديهم حين يفتتحون الصلاة واذا ركعوا واذا
رفعوا رؤسهم من الركوع .

(٦٢) حدثنا محمد بن مقاتل انا عبدالله انبأنا عكرمة بن عمار
قال رأيت سالم بن عبدالله والقاسم بن محمد وعطاء ومكحولا يرفعون
ايديهم فى الصلاة اذا ركعوا واذا رفعوا .

(٦٣) وقال جرير عن ليث عن عطاء ومجاهد انهما كانا يرفعان
ايديهما فى الصلاة وكانا نافع وطاؤس يفعلانه .

(٦٤) وعن ليث عن ابن عمر وسعيد بن جبير وطاؤس واصحابه
انهم كانوا يرفعون ايديهم اذاا ركعوا .

(٦٥) حدثنا موسى بن اسماعيل ثنا عبدالواحد بن زياد ثنا عاصم
قال رأيت انس بن مالك رضى الله تعالى عنه اذا افتتح الصلاة كبر
ورفع يديه كلما ركع ورفع رأسه من الركوع .

में भी रफ़अ यदैन करते और रुकूअ करते वक़्त भी और रुकूअ से सर उठाते हुए भी।

62. इकरमह बिन अम्मार कहते हैं कि मैंने सालिम बिन अब्दुल्लाह, क़ासिम बिन मुहम्मद, अता और मकहूल रहमतुल्लाहि अलैह को देखा वे नमाज़ में रुकूअ के वक़्त रफ़अ यदैन किया करते थे।

63. हज़रत लैस रह॰ कहते हैं कि हज़रत अता रह॰ और मुजाहिद रह॰ दोनों रफ़अ यदैन किया करते थे। और नाफ़ेअ और ताऊस रह॰ भी रफ़अ यदैन किया करते थे।

64. लैस रह॰ कहते हैं कि इब्ने उमर रज़ि॰, सईद बिन जुबैर, ताऊस रह॰ और इनके शागिर्द सारे रुकूअ के वक़्त रफ़अ यदैन किया करते थे।

65. आसिम कहते हैं कि हज़रत अनस रज़ि॰ को देखा कि जब नमाज़ शुरू करते तो रफ़अ यदैन करते और जब रुकूअ करते और रुकूअ से सर उठाते तो भी रफ़अ यदैन करते।

(٦٦) حدثنا خليفة بن خياط ثنا يزيد بن زريع ثنا سعيد عن قتادة ان نصر بن عاصم حدثهم عن مالك بن الحويرث رضى الله تعالى عنه قال : رأيت النبي ﷺ يرفع يديه اذا ركع واذا رفع رأسه من الركوع حتى يحاذى بهما فروع اذنيه .

(٦٧) وقال عبدالرحمن بن مهدى عن الربيع بن صبيح قال : رأيت محمدا والحسن وابا نضرة والقاسم بن محمد وعطاء وطاؤسا ومجاهدا والحسن بن مسلم ونافعا و ابن ابى نجيح اذا افتتحوا الصلاة رفعوا ايديهم واذا ركعوا واذا رفعوا رؤسهم من الركوع

قال البخارى : وهؤلاء اهل مكة واهل المدينة واهل اليمن واهل العراق قدتواطؤا على رفع الأيدى .

(٦٨) وقال وكيع عن الربيع قال رأيت الحسن ومجاهدا وعطاء وطاؤس وقيس بن سعد والحسن بن مسلم يرفعون ايديهم اذا ركعوا واذا سجدوا وقال عبدالرحمن بن مهدى هذا من السنة

66. मालिक बिन हुवैरिस कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल॰ को देखा रुकूअ करते वक़्त और रुकूअ से उठते वक़्त कानों तक रफ़अ यदैन किया करते थे।

67. रबीअ बिन सबीह कहते हैं कि मैंने मुहम्मद (इब्ने सीरीन) रह॰, हसन बसरी रह॰, अबू नज़रह, क़ासिम बिन मुहम्मद, अता, ताऊस, मुजाहिद, हसन बिन मुस्लिम, नाफ़ेअ और इब्ने अबी नुजैह रह॰ को देखा ये सब नमाज़ के शुरु में और रुकूअ जाते वक़्त और रुकूअ से उठते वक़्त रफ़अ यदैन किया करते थे।

इमाम बुख़ारी रह॰ कहते हैं कि ये सब मक्का, मदीना, यमन, और इराक़ वाले सब रफ़अ यदैन के मसले पर एक मत हैं।

68. वकीअ रह॰ कहते हैं रबीअ ने कहा कि मैंने देखा हसन रह॰, मुजाहिद रह॰, अता रह॰ क़ैस बिन सअद रह॰ और हसन बिन मुस्लिम रह॰ सारे रफ़अ यदैन करते थे जब रुकूअ में जाते और जब रुकूअ से उठ कर सज्दे को जाते।

(٦٩) وقال عمر بن يونس حدثنا عكرمة بن عمار قال رأيت القاسم وطاؤس ومكحولا وعبدالله بن دينار وسالماً يرفعون ايديهم اذا استقبل احدهم الصلاة وعند الركوع والسجود

(٧٠) وقال وكيع عن الاعمش عن ابراهيم انه ذكر له حديث وائل بن حجر رضى الله تعالى عنه عن النبي صلى الله تعالى عليه وسلم كان يرفع يديه اذا ركع وإذا اسجد قال ابراهيم : ولعله كان فعله مرة . وهذا ظن منه لقوله فعله مرة مع ان وائلا ذكرانه رأى النبى صلى الله تعالى عليه وسلم واصحابه غير مرة يرفعون ايديهم ولا يحتاج وائل الى الظنون لأن معاينته أكثر من حسبان غيره

(٧١) قال البخارى : قد بينه زائدة : فقال حدثنا عاصم ثنا ابى ان وائل بن حجر أخبره قال قلت : لأنظرن الى صلاة رسول الله

अब्दुर्रहमान बिन महदी कहते हैं कि यह सुन्नत है।

69. उमर बिन यूनुस कहते हैं कि इकरमह बिन अम्मार ने कहा मैंने देखा क़ासिम, ताऊस, मकहूल, अब्दुल्लाह बिन अब्बास, दीनार और सालिम रह॰ सारे रफ़अ यदैन करते थे नमाज़ के शुरू में भी और रुकूअ और सज्दे के शुरू में भी।

70. वकीअ कहते हैं कि आमश ने इबराहीम से वाइल बिन हिज्र की हदीस बयान की कि अल्लाह के रसूल सल्ल॰ रुकूअ और सज्दे के वक़्त रफ़अ यदैन करते थे तो इबराहीम ने कहा शायद एक बार किया हो लेकिन यह इबराहीम का ख़याल है वास्तिविक्ता नहीं। क्योंकि हज़रत वाइल कहते हैं कि मैंने आपको और आपके सहाबा को कई बार देखा कि वे रफ़अ यदैन करते थे। और हज़रत वाइल का कई बार देखना सिर्फ़ ख़याल और गुमान से नहीं टाला जा सकता।

71. इमाम बुख़ारी रह॰ फ़रमाते हैं कि ज़ाइदह के वास्ते से मरवी है कि वाइल बिन हिज्र कहते हैं मैं यह देखूँगा कि आप सल्ल॰ नमाज़ किस

ﷺ كيف يصلى فكبر ورفع يديه فلما ركع رفع يديه فلما رفع رأسه رفع يديه بمثلها ثم رأيتهم بعد ذلك فى زمان فيه برد فرأيت الناس عليهم جل الثياب تحرك ايديهم تحت الثياب فهذا وائل بين فى حديثه انه رأى النبى ﷺ واصحابه يرفعون ايديهم مرة بعد مرة

(٧٢) حدثنا عبدالله بن محمد ثنا ابن ادريس ثنا عاصم بن كليب عن ابيه انه سمعه يقول سمعت وائل بن حجر رضى الله تعالى عنه يقول قدمت المدينة لأنظرن الى صلاة رسول الله ﷺ فافتتح الصلاة فكبر ورفع يديه فلما رفع رأسه رفع يديه .

(٧٣) حدثنا اسماعيل بن ابى اويس ثنا مالك عن نافع ان عبدالله بن عمر رضى الله تعالى عنهما كان اذا افتتح الصلاة رفع يديه واذا رفع راسه من الركوع .

(٧٤) حدثنا عياش ثنا عبد الاعلى ثنا حميد عن انس رضى الله تعالى عنه انه كان يرفع يديه عندالركوع .

तरह पढ़ते हैं तो आपने तकबीर कही और रफ़अ यदैन किया फिर जब रुकूअ किया तो भी रफ़अ यदैन किया और जब रुकूअ से सर उठाया तो भी इसी तरह रफ़अ यदैन किया फिर जब बाद में ठंडक के मौसम में गया तो उन्होंने कपड़े ओढ़े हुए थे तो वह कपड़ों के नीचे से रफ़अ यदैन करते थे। तो हज़रत वाइल तो कह रहे हैं कि मैंने आप सल्ल. को और आप सल्ल. के सहाबा को रफ़अ यदैन करते कई बार देखा।

72. दूसरी सनद से वाइल बिन हिज्र रज़ि. कहते हैं कि मैं मदीना आया ही सिर्फ़ आप की नमाज़ देखने के लिए था तो नमाज़ शुरू करते हुए तकबीर के साथ रफ़अ यदैन किया और रुकूअ से उठ कर भी रफ़अ यदैन किया।

73. नाफ़ेअ कहते हैं कि इब्ने उमर रज़ि. नमाज़ शुरू करते वक़्त भी रफ़अ यदैन करते और रुकूअ से उठ कर भी रफ़अ यदैन करते।

74. हज़रत अनस रज़ि. भी रुकूअ में रफ़अ यदैन करते थे।

(٧٥) حدثنا آدم ثنا شعبة ثنا الحكم بن عتيبة قال رأيت طاؤسا يرفع يديه اذا كبر واذا رفع راسه من الركوع .

قال البخارى : من زعم ان رفع الأيدى بدعة فقد طعن فى اصحاب النبى ﷺ والسلف ومن بعدهم واهل الحجاز واهل المدينة واهل مكة وعدة من اهل عراق واهل الشام واهل اليمن وعلماء اهل خراسان منهم ابن المبارك حتى شيوخنا عيسى بن موسى وابو احمد وكعب بن سعيد والحسن بن جعفر و محمد بن سلام الا اهل الراى منهم وعلى بن الحسن وعبدالله بن عثمان ويحيى بن يحيى وصدقة واسحاق وعامة اصحاب ابن المبارك وكان الثورى ووكيع وبعض الكوفيين لايرفعون ايديهم .

وقد رووا فى ذلك احاديث كثيرة ولم يعتبوا على من رفع يديه ولو لاانها حق مارووا ذلك الاحاديث لانه ليس لأحد ان يقول على رسول الله ﷺ مالم يقل ولم يفعل

75. हकम बिन अतीबा कहते हैं कि मैंने ताऊस को रुकूअ में रफ़अ यदैन करते देखा।

इमाम बुख़री फ़रमाते हैं कि जो आदमी यह कहता कि रफ़अ यदैन बिदअत है तो उसने सहाबा किराम को गाली दी और हिजाज़ वालों ने सारे मक्का और मदीना वालों को गाली दी और बहुत से इराक़ी, शामी, यमनी और ख़ुरासानी उलमा को गाली दी जिनमें अब्दुल्लाह बिन मुबारक और हमारे शिक्षक ईसा बिन मूसा, अबू अहमद, कअब बिन सईद, हसन बिन जाफ़र और मुहम्मद बिन सलाम हैं सिवाए राय वाले लोगों के और बदनाम बुज़ुर्गों में से अली बिन हसन, अब्दुल्लाह बिन उस्मान, यहया बिन यहया, सदक़ा, इस्हाक़ और बहुत से अब्दुल्लाह बिन मुबारक के शागिर्द भी हैं।

सौरी, वकीअ और कुछ कूफ़ा के लोग रफ़अ यदैन नहीं करते थे हालाँकि वे ख़ुद रफ़अ यदैन की हदीसों को रिवायत करते हैं और फिर रफ़अ यदैन करने वालों को बुरा भी नहीं कहते। यदि रफ़अ यदैन करना

٧٦- لقول النبي ﷺ : من تقول على مالم اقل فليتبوأ مقعده من النار

ولم يثبت عن احد من اصحاب النبي ﷺ انه لايرفع يديه وليس اسانيده اصح من رفع الآيدى

(٧٧) حدثنا محمد بن ابي بكر المقدمى ثنا معتمر عن عبيدالله ابن عمر عن ابن شهاب عن سالم بن عبدالله عن ابيه عن النبي ﷺ انه كان يرفع يديه اذا دخل فى الصلاة واذا اراد ان يركع ورفع رأسه واذا قام من الركعتين يرفع يديه فى ذلك كله وكان عبدالله يفعله .

(٧٨) حدثنا قتيبة ثنا هشيم عن الزهرى عن سالم عن ابيه قال: كان رسول الله ﷺ يرفع يديه اذا استفتح واذا ركع رفع يديه واذا رفع رأسه من الركوع .

सही न होता तो उन हदीसों को क्यों रिवायत करते। क्योंकि यह तो किसी को हक़ नहीं कि अल्लाह के रसूल पर वह बात कहे जो आप सल्ल॰ ने न कही हो। क्योंकि–

76. आप सल्ल॰ ने फ़रमाया है जो मुझ पर वह चीज़ कहे जो मैंने न कही हो तो उसका ठिकाना जहन्नम है।

और यह भी एक सच है कि सही सनद से किसी एक सहाबी से यह भी साबित नहीं है कि वह रफ़अ यदैन न करता हो।

77. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल॰ हमेशा रफ़अ यदैन करते जब भी नमाज़ शुरू करते और जब भी रुकूअ करते और जब रुकूअ से सर उठाते और जब दो रकअतों से खड़े होते। इन सब जगहों में रफ़अ यदैन करते।

और इन जगहों में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ भी रफ़अ यदैन करते।

78. और सनद से इब्ने उमर रज़ि॰ से इसी तरह हदीस है।

(٧٩) حدثنا عبدالله بن صالح حدثنى الليث عن عقيل عن ابن شهاب قال اخبرنى سالم بن عبدالله ان عبدالله بن عمر رضى الله تعالى عنهما . قال: كان رسول الله ﷺ إذا افتتح الصلاة رفع يديه حتى يحاذى بهما منكبيه وإذا أراد أن يركع وبعد ما رفع رأسه من الركوع .

(٨٠) حدثنا محمد بن عبدالله بن حوشب ثنا عبدالوهاب ثنا عبيدالله عن نافع عن ابن عمر رضى الله عنهما انه كان يرفع يديه إذا دخل فى الصلاة وإذا ركع وإذا قال سمع الله لمن حمده وإذا قام من الركعتين يرفعهما .

(٨١) وعن الزهرى عن سالم عن عبدالله بن عمر رضى الله تعالى عنهما مثله .

(٨٢) وزاد وكيع عن العمرى عن نافع عن ابن عمر رضى الله تعالى عنهما عن النبي ﷺ انه كان يرفع إذا ركع وإذا سجد .

(٨٣) قال البخارى : المحفوظ ما روى عبيدالله وايوب ومالك وابن جويج والليث وعدة من أهل الحجاز وأهل العراق عن نافع(١) عن ابن

---

79. एक और सनद से इब्ने उमर रज़ि॰ से हदीस मरवी है।

80. हज़रत नाफ़ेअ रह॰ के वास्ते से भी इब्ने उमर रज़ि॰ से हदीस इसी तरह है।

81. और ज़ुहरी से सालिम के वास्ते से भी इसी तरह है।

82. और वकीअ से कुछ शब्द बढ़े हुए हैं कि रफ़अ यदैन करते जब रुकूअ करते और जब सज्दा करते।

83. इमाम बुख़ारी रह॰ फ़रमाते हैं (सज्दों में रफ़अ यदैन करने के शब्द महफ़ूज़ नहीं हैं बल्कि) महफ़ूज़ वही शब्द हैं जिनको उबैदुल्लाह, अय्यूब, इमाम मालिक, इब्ने जुरैज, लैस और अन्य हिजाज़ और इराक़

---

1. अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ की हदीस उनसे उनके बेटे 1. सालिम, उनके सेवक 2. नाफ़ेअ, 3. अबुज़्ज़ुबैर, 4. मुहारिब बिन दसार, 5. ताऊस और 6. लैस ने बयान की है।

सालिम के वास्ते से हदीस मुतवातिर है और उनसे इमाम ज़ुहरी रह. ने बयान किया है जिनके तेरह शागिर्द उनसे बयान कर रहे हैं।

1. इमाम मालिक रह. के वास्ते से बुख़ारी, जुज़ बुख़ारी, मोत्ता इमाम मालिक, मुस्नद अहमद, मोत्ता इमाम मुहम्मद, इस्तिज़्कार इब्ने अब्दुल बर्र, नसाई, शरहुस्सुन्नह लिल बग़वी, इब्ने हिब्बान, दारमी, बैहक़ी और मुस्नद अबु उवानह में आती है।

2. यूनुस के वास्ते से सही बुख़ारी, जुज़ बुख़ारी, मुस्लिम, नसाई, मुस्नद अबू उवानह, और बैहक़ी में है।

3. शुऐब के वास्ते से जुज़ बुख़ारी, बैहक़ी, दारे क़ुत्नी और नसाई में है।

4. इब्ने जुरैज के वास्ते से मुस्लिम, इब्ने ख़ुज़ैमह, दारे क़ुत्नी, मुस्नद अबू उवानह, मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ और बैहक़ी में है।

5. सुफ़ियान बिन उययनह के वास्ते से जुज़ बुख़ारी, मुस्लिम, नसाई, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, बैहक़ी और मुसन्नफ़ इब्ने अबी शीबा में आती है।

6. अक़ील के वास्ते से जुज़ बुख़ारी, मुस्लिम, दारे क़ुत्नी, बैहक़ी और मुस्नद अबू उवानह में है।

7. ज़ुबैदी के वास्ते से अबू दाऊद, बैहक़ी, दारे क़ुत्नी, मुस्नद अबू उवानह और शरहुस्सुन्नह बग़वी में आती है।

8. अब्दुल्लाह के वास्ते से मुस्नद अबू उवानह और मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ में है।

9. इब्ने अख़ी अज़्ज़ुहरी के वास्ते से मुस्नद अहमद और दारे क़ुत्नी में है।

10. मअमर के वास्ते से मुस्नद अहमद, अब्दुर्रज़्ज़ाक़, दारे क़ुत्नी और अबू उवानह में है।

11. अबू हमज़ह के वास्ते से बैहक़ी में आती है।

12. मुहम्मद बिन अबी हफ़्सा के वास्ते से मुस्नद अबू उवानह में है। 13. हैसम के वास्ते से जुज़ बुख़ारी और इब्ने अबी शीबा में है।

इमाम बुख़ारी का मक़सद यह है कि किसी तरह भी वकीअ के

عمر رضی‌الله تعالی عنهما فی رفع الأیدی عند الرکوع وإذا رفع رأسه من الرکوع ولو صح حدیث العمری عن نافع عن ابن عمر رضی‌الله تعالی عنهما لم یکن مخالفا للاول لأن اولئك قالوا إذا رفع رأسه من الرکوع فلو ثبت لاستعملنا کلیهما ، ولیس هذا من الخلاف الذی یخالف بعضهم بعضا لأن هذه زیادة فی الفعل والزیادة مقبولة إذا ثبت

(٨٤) قال وکیع عن ابن ابی لیلی عن نافع عن ابن عمر رضی‌الله تعالی عنهما .

(٨٥) وعن ابن ابی لیلی عن الحکم عن مقسم عن ابن عباس رضی الله تعالی عنهما عن النبی ﷺ قال: لا ترفع الأیدی الا فی سبعة مواطن فی افتتاح الصلاة واستقبال القبلة وعلی الصفا والمروة وبعرفات وبجمع وفی المقامین وعند الجمرتین

(٨٦) وقال علی بن مسهر والمحاربی : عن ابن ابی لیلی عن الحکم

वालों ने बयान किया जो नाफ़ेअ की हदीस इब्ने उमर से है रफ़अ यदैन करते जब रुकूअ करते और जब रुकूअ से सर उठाते।

और अगर हम वकीअ की अल उमरी अन नाफ़ेअ वाली हदीस को सही मान लें तो भी यह मुख़ालिफ़ नहीं पड़ती। क्योंकि उनमें कहा है कि "जब रुकूअ से सर उठाते" (यानी रुकूअ के बाद ही रफ़अ यदैन किया जाता है फिर सज्दा किया जाता है) इस सूरत में एक-दूसरे के मुख़ालिफ़ नहीं होगा। क्योंकि यह ज़्यादा करना भी रफ़अ यदैन करने में ही है और अगर वास्तव में ज़्यादा करना साबित हो तो फिर वह मक़बूल होती है।

84. वकीअ ने यह शब्द इब्ने अबी लैला अन नाफ़ेअ अन इब्ने उमर से बयान किए हैं।

85. और इब्ने अबी लैला ने हकम से अन मक़्सिम अब्दुल्लाह बिन अब्बास की हदीस बयान की है कि न हाथ उठाए जाएँ मगर सात

शब्द की ताईद नहीं है।

عن مقسم عن ابن عباس ﷺ عن النبي ﷺ ، وقال شعبة : ان الحكم لم يسمع من مقسم إلا أربعة أحاديث ليس فيها هذا الحديث ، وليس هذا من المحفوظ[1] عن النبي ﷺ

لأن أصحاب نافع خالفوا وحديث الحكم عن مقسم مرسل وقد روى طاؤس وابو جمرة وعطاء انهم رأوا ابن عباس رضى الله تعالى عنهما رفع يديه عند الركوع وإذارفع رأسه من الركوع، معان حديث ابن ابى ليلى لوصح يرفع يديه فى سبعة مواطن لم يقل فى حديث وكيع لا يرفع الا فى هذه المواطن ، فترفع فى هذه المواطن وعند الركوع وإذا رفع رأسه حتى يستعمل هذه الأحاديث كلها وليس هذا من التضاد ، وقد

जगहों में 1. नमाज़ के शुरू में, 2. सफ़ा, 3. मरवा पर काबा की तरफ़ होकर, 4. अरफ़ात में, 5. मुज़्दलिफ़ा में, 6. मक़ामैन में, 7. जमरून पर।

86. अली बिन मुसहिर रह. और मुहारबी ने भी इब्ने अब्बास रज़ि. की रिवायत बयान की है।

हज़रत शुअबा कहते हैं कि हकम ने मिक़सम से सिर्फ़ चार हदीस सुनी हैं उन चार में यह हदीस नहीं है और न ही यह अल्लाह के रसूल सल्ल. तक पहुँचती है। क्योंकि नाफ़ेअ रह. के शागिर्दों ने इसकी मुख़ालिफ़त की है और हकम की हदीस मिक़सम से मुरसल है।

और ताऊस, अबू जमरह और अता बयान करते हैं कि उन्होंने अब्दुल्लाह बिन अब्बास को रफ़अ यदैन करते देखा है रुकूअ में जाते समय भी और रुकूअ से उठते समय भी।

और अगर इब्ने अबी लैला की हदीस को सही भी मान लिया जाए तो उसके शब्द हैं "सात जगहों पर हाथ उठाए जाएँ"। क्योंकि वकीअ के शब्द यह नहीं हैं कि उन सात जगहों के अलावा हाथ न उठाए जाएँ तो फिर उन जगहों में भी हाथ उठाए जाएंगे और रुकूअ में जाते और उठते समय भी हाथ उठाए जाएंगे तो किसी तरह का तज़ाद नहीं रहता।

---

1. इमाम साहब रह. का मक़सद यह है कि सबसे पहले तो यह हदीस पूरे तौर पर साबित ही नहीं होती और जो शब्द सही हैं वह हस्र के कलिमे से नहीं हैं बल्कि ये शब्द हैं कि उन जगहों पर हाथ उठाए

قال هؤلاء ان الأيدى ترفع فى تكبيرات العيدين الفطر والأضحى وهى أربع عشرة تكبيرة فى قولهم وليس هذا فى حديث ابن ابى ليلى وقد قال بعض الكوفيين ترفع يديه فى تكبيرة الجنازة وهى أربع تكبيرات وهذا كلها زيادة على [حديث] ابن ابى ليلى ، وقد روى عن النبى ﷺ من غير وجه فى سوى هذه السبعة .

(٨٧) حدثنا موسى بن اسماعيل ثنا مسدد ثنا حماد بن سلمة عن ثابت عن انس ﷺ ان النبى ﷺ كان يرفع يديه فى الاستسقاء .

(٨٨) حدثنا مسدد ثنا ابو عوانة عن سماك بن حرب عن عكرمة عن عائشة[1] رضى الله تعالى عنها زعم انه سمع منها. انها رأت النبى ﷺ يدعوا رافعا يديه يقول انما انا بشر فلا تعاقبنى أيما رجل من المؤمنين آذيته أوشتمته فلا تعاقبنى فيه

(٨٩) حدثنا على ثنا سفيان عن ابن ابى الزناد عن الاعرج عن ابى هريرة ﷺ قال استقبل رسول الله ﷺ القبلة وتهيأ ورفع يديه وقال اللهم اهد دوسا وأت بهم .

फिर ये लोग यह भी कहते हैं कि ईदैन की तकबीरें ईदुल फ़ित्र व अज़्हा में भी हाथ उठाए जाएं और यह उनके नज़दीक चौदह तकबीरें हैं जिनका ज़िक्र इब्ने अबी लैला की रिवायत में नहीं है।

कुछ कूफ़ी कहते हैं कि जनाज़ह की तकबीरों में भी हाथ उठाए जाएं और वह भी चार तकबीरें हैं यह भी इब्ने अबी लैला की रिवायत से ज़्यादा हैं।

इसके अलावा भी अल्लाह के रसूल सल्ल. से हाथ उठाने की हदीसें साबित हैं।

87. हज़रत अनस कहते हैं कि आपने नमाज़े इस्तिस्क़ा में हाथ उठाए।

88. हज़रत आइशा रज़ि. कहती हैं उन्होंने आप सल्ल. को देखा

जाएँ यानी जिस तरह और जगहों में हाथ उठाए जाते हैं उन सात जगहों में भी उठाए जाएँ। क्योंकि इस हस्र को अहनाफ़ भी नहीं जानते जैसा

(٩٠) حدثنا ابوالنعمان ثنا حماد بن زيد ثنا الحجاج الصواف عن ابى الزبير بن جابر عن عبد الله رضى الله عنهما ان الطفيل بن عمرو قال للنبى ﷺ : هل لك فى حصن ومنعة حصن دوس فابى رسول الله ﷺ "لما ذخر الله للانصار وهاجر الطفيل وهاجر معه رجل من قومه فمرض فجاء الى قرن فاخذ مشقصا فقطع ورجه فمات فرأه الطفيل فى المنام فقال : ما فعل الله بك ؟ قال غفرلى بهجرتى الى النبى ﷺ ، قال : ما شأن يدك ؟ قال : قيل اذا لن نصلح منك ما افسدت من نفسك فقصها الطفيل على النبى ﷺ وقال : ليديه فقال : اللهم وليديه فاغفر فرفع يديه

(٩١) حدثنا قتيبة عن عبدالعزيز بن محمد عن علقمة بن ابى علقمة عن امه* عن عائشة رضى الله تعالى عنها انها قالت خرج رسول الله ﷺ ذات ليلة فارسلت بريرة فى اثره لتنظر أين يذهب فسلك نحو البقيع الغرقد فوقف موقف فى ادنى البقيع ثم رفع يديه ثم انصرف فرجعت

आप हाथ उठा कर दुआ फ़रमा रहे थे–"ऐ अल्लाह मैं एक इन्सान हूँ अगर किसी को मैंने तकलीफ़ दी या बद दुआ दी तू उसे अज़ाब न करना।"

89. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ कहते हैं कि आपने काबा की तरफ़ होकर हाथ उठा कर दुआ की "ऐ अल्लाह दौस को हिदायत दे और उन्हें मेरे पास ले आ।"

90. हज़रत जाबिर बयान करते हैं कि तुफ़ैल बिन अम्र रज़ि. ने कहा हज़रत आपको दौस के महल की ज़रूरत है? तो आपने फ़रमाया नहीं फिर अन्सार का ज़िक्र किया। तुफ़ैल ने भी हिजरत की इसके बाद एक और आदमी ने भी हिजरत की। वह आदमी बीमार हो गया तो उसने तीर के फल से अपने बाज़ू की रग काट ली और मर गया। तो हज़रत तुफ़ैल ने ख़्वाब में देखा और पूछा अल्लाह ने तेरे साथ क्या सुलूक किया? उसने कहा मेरी हिजरत की वहज से मुझे माफ़ कर दिया फिर इसके बाज़ू को देखा तो वह बेकार था। इस लिए उसे हम ठीक

कि मुक़द्दमह में बयान हुआ है। और यह कि रुकूअ के समय रफ़अ

بريرة فأخبرنى فلما اصبحت سألته فقلت يا رسول الله أين خرجت الليلة؟ قال : بعثت الى أهل البقيع لأصلى عليهم .

(٩٢) حدثنا مسلم ثنا شعبة عن عبد ربه بن سعيد عن محمد بن ابراهيم التيمى قال أخبرنى من رأى النبى ﷺ يدعوا عند احجار الزيت باسطا كفيه .

(٩٣) حدثنا يحي بن موسى ثنا عبد الحميد ثنا اسماعيل هو ابن عبد الملك عن ابن ابى مليكة عن عائشة رضى الله تعالى عنها قالت : رأيت رسول الله ﷺ رافعا يديه حتى بدأ ضبعيه يدعو فرد عثمان رضي الله عنه .

(٩٤) حدثنا ابو نعيم ثنا الفضيل بن مرزوق عن عدى بن ثابت عن ابى حازم عن ابى هريرة رضي الله عنه قال : ذكر النبى ﷺ الرجل يطيل السفر اشعث اغبر يمد يديه إلى الله عز وجل يا رب يا رب ومطعمه حرام ومشربه حرام وملبسه حرام وغذى بالحرام فانى يستجاب لذلك .

(٩٥) اخبرنا مسلم انبأ عبدالله بن داؤد عن نعيم بن حكيم عن ابى مريم عن على رضي الله عنه قال رأيت امرأة الوليد جاءت إلى النبى ﷺ تشكو

नहीं करेंगे तो अल्लाह के रसूल सल्ल॰ ने हाथ उठा कर दुआ की– "अल्लाह इस हाथ को माफ़ कर दे।"

91. हज़रत आइशा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि एक रात आप निकले तो मैंने बरीरह को आपके पीछे भेजा ताकि देखे कि आप कहां जाते हैं। आप बक़ीअ क़ब्रिस्तान के निकट जाकर खड़े हो गए और हाथ उठाकर दुआ की फिर वापस आ गए और बरीरह भी वापस आ गई। सुबह मैंने पूछा हज़रत रात कहां गए थे तो फ़रमाया बक़ीअ वालों के लिए दुआ करने गया था।

92. एक सहाबी ने देखा कि आप अहजारे ज़ैत के निकट हाथ उठा कर दुआ कर रहे थे।

93. हज़रत आइशा बयान करती हैं मैंने आप सल्ल॰ को हाथ उठा कर दुआ करते देखा यहाँ तक कि आपके दोनों बाज़ू ज़ाहिर हो गए यहाँ

यदैन के इब्ने अब्बास और इब्ने उमर ख़ुद भी करने और कहने वाले हैं

اليه زوجها يضربها فقال لها : اذهبي فقولي له كيت وكيت . فذهبت ثم رجعت فقالت له عاد يضربني ، فقال لها : اذهبي فقولي له ان النبي ﷺ يقول لك ، فذهبت ثم عادت فقالت انه يضربني، فقال اذهبي فتقولي له كيت وكيت ، فقالت له : يضربني فرفع رسول الله ﷺ يده وقال : اللهم عليك بالوليد .

(٩٦) حدثنا محمد بن سلام ثنا اسماعيل بن جعفر عن حميد عن انس رضي الله عنه قال قحط المطر عاما فقام بعض المسلمين إلى النبي ﷺ يوم الجمعة فقال يا رسول الله قحط المطر واجدبت الأرض وهلك المال فرفع يديه ومارأى فى السماء سحابة فمد يديه حتى رأيت بياض ابطيه يستسقى الله عز وجل فما صلينا الجمعة حتى اهم الشاب الدار بالرجوع إلى أهله فدامت جمعة حتى كانت الجمعة التى تليها قال يا رسول الله تهدمت البيوت وجلس الركبان، فتبسم لعله لسرعة ملالة ابن آدم وقال بيده : اللهم حوالينا ولا علينا ، فتكشطت عن المدينة .

(٩٧) حدثنا مسدد ثنا يحى بن سعيد عن جعفر حدثنى ابو عثمان قال

तक दुआ की कि हज़रत उस्मान रज़ि॰ वापस आ गए।

94. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ बयान करते हैं कि आप सल्ल॰ के सामने एक आदमी का ज़िक्र किया गया है जो लम्बी यात्रा करके बिखरे बाल और मिटटी में भरा हुआ अपने रब के सामने हाथ उठाता है और या रब या रब कहता है। इसकी दुआ कैसे क़बूल हो जबकि उसका खाना-पीना और पहनना हराम माल से हो।

95. हज़रत अली रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि वलीद की बीवी आपके पास आई और शिकायत की कि वह हमेशा बहुत मारता है आप सल्ल॰ ने फ़रमाया उसे जाकर इस तरह कहो, वह फिर आई और शिकायत की आप सल्ल॰ ने फ़रमाया उसे कहना कि आप सल्ल॰ ने इस तरह कहा है, वह फिर आई और कहा कि वह इससे रुक नहीं रहा है तो आपने हाथ उठा कर उसके लिए बद दुआ की।

इस लिए भी हस्र सही नहीं है।

كنا نحن وعمر يؤم الناس ثم يقنت بنا عند الركوع يرفع يديه حتى يبدو كفاه ويخرج ضبعيه .

(٩٨) حدثنا قبيصة ثنا سفيان عن ابى على هو جعفر بن ميمون بياع للانماط قال سمعت ابا عثمان قال كان عمر يرفع يديه فى القنوت

(٩٩) حدثنا عبدالرحيم المحاذى ثنا زائدة عن ليث عن عبدالرحمن عن الاسود عن ابيه عن عبدالله انه كان يقرأ فى آخر ركعة من الوتر قل هو الله ثم يرفع يديه فيقنت قبل الركعة

قال البخارى: وهذه الأحاديث كلها صحيحة عن رسول الله ﷺ واصحابه لا يخالف بعضها بعضا وليس فيها تضاد لأنها فى مواطن مختلفة .

---

96. हज़रत अनस रज़ि॰ कहते हैं कि बारिश बन्द हो गई तो शुक्रवार के दिन किसी ने कहा ऐ हज़रत बारिश नहीं हो रही ज़मीन सूखी है, जानवर मर रहे हैं तो आप सल्ल॰ ने दुआ के लिए हाथ उठा दिए उस वक़्त आसमान पर कोई बादल नहीं था आपने इतने हाथ उठाए कि बग़लों की सफ़ेदी ज़ाहिर हो गई। आप अल्लाह से बारिश मांगते रहे तो हमने अभी जुमआ की नमाज़ पूरी भी नहीं की थी कि इतनी बारिश हुई कि जो नज़दीक घर वाला जवान भी घर न पहुंच सका यहाँ तक कि आने वाले जुमा तक बारिश होती रही। फिर उसने कहा कि अब तो मकान गिर रहे हैं और जानवरों के लिए भी जगह नहीं रही तो आप हँस पड़े कि आदम के बेटे कितनी जल्दी उकता जाता है और आपने दुआ की या अल्लाह अब बारिश को दूर लेजा हम पर न बरसा तो आसमान खुल गया।

97. अबू उस्मान कहते हैं हम और हज़रत उमर रज़ि॰ लोगों को नमाज़ पढ़ाते थे फिर रुकूअ के बाद हाथ उठा कर क़ुनूत पढ़ते थे यहाँ तक कि पहलू ज़ाहिर हो जाते।

98. यही वाक़िआ एक और सनद से भी है।

99. हज़रत अब्दुल्लाह वित्र की आख़िरी रकअत में सूरह इख़्लास पढ़ते और रुकूअ से पहले हाथ उठा कर क़ुनूत पढ़ते।

(١٠٠) قال ثابت عن انس ؓ ما رأيت النبى ﷺ يرفع يديه فى الدعاء إلا فى الاستسقاء فاخبر انس ؓ بما كان عنده ما رأى من النبى ﷺ وليس هذا بمخالف لرفع الأيدى فى اول تكبيرة ، وقد ذكر انس ؓ أيضا ان النبى ﷺ كان يرفع يديه إذا كبر وإذا رفع، وقوله فى الدعاء سوى الصلاة وسوى رفع الأيدى فى القنوت

(١٠١) حدثنا محمد بن بشار عن يحى بن سعيد عن حميد عن انس ؓ انه كان يرفع يديه عند الركوع .

(١٠٢) حدثنا آدم بن ابى اياس ثنا شعبة ثنا قتادة عن نصر بن عاصم عن مالك بن الحويرث ؓ قال : كان النبى ﷺ يرفع يديه اذا كبر وإذا رفع رأسه من الركوع حذأ اذنيه .

इमाम बुख़ारी फ़रमाते हैं कि ये सारी हदीसें अल्लाह के रसूल सल्ल॰ और सहाबा से साबित हैं, न इनमें मतभेद है, न टकराव। क्योंकि ये भिन्न-भिन्न अवसर हैं।

100. हज़रत अनस रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल॰ को कभी हाथ उठा कर दुआ करते नहीं देखा सिवाए इस्तिस्क़ा के। यह हदीस हज़रत अनस रज़ि॰ की है जो उन्होंने देखा बयान कर दिया है। इसका यह अर्थ नहीं कि नमाज़ में पहली बार भी हाथ नहीं उठाए। हालाँकि हज़रत अनस रज़ि॰ से ही पहले गुज़र चुका है कि शुरू नमाज़ में भी और रुकूअ के समय में भी हाथ उठाते और नमाज़ के अलावा दुआ में भी हाथ उठाते। और इसके अलावा क़ुनूत में भी हाथ उठाते।

101. हज़रत अनस रज़ि॰ से ही रिवायत है कि आप रुकूअ में भी हाथ उठाते।

102. हज़रत मालिक बिन हुवैरिस कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल॰ शुरू नमाज़ में और रुकूअ में जाते और उठते समय हाथ उठाते।

इमाम बुख़ारी फ़रमाते हैं कि जो व्यक्ति यह कहे कि सिर्फ़ रुकूअ

قال البخارى: والذى يقول كان النبى ﷺ يرفع يديه عند الركوع وإذا رفع رأسه من الركوع وما زاد على ذلك ابو حميد فى عشرة من أصحاب النبى ﷺ كان يرفع يديه اذا قام من السجدتين كله صحيح لانهم لم يحكوا صلاة واحدة فيختلفوا فى تلك الصلاة بعينها مع انه لا اختلاف فى ذلك انما زاد بعضهم على بعض والزيادة مقبولة من اهل العلم.

والذى قال ابو بكر بن عياش عن حصين عن مجاهد قال ما رأيت ابن عمر رضى الله تعالى عنهما يرفع يديه فى شئ من الصلاة الا فى التكبيرة الأولى فقد خولف فى ذلك عن مجاهد ، قال وكيع عن الربيع بن صبيح قال رأيت مجاهدا يرفع يديه [وقال عبد الرحمن بن مهدى، عن الربيع رأيت مجاهدا يرفع يديه] إذا ركع وإذا رفع رأسه من الركوع وقال جرير عن مجاهد انه كان يرفع يديه ، وهذا احفظ عند أهل العلم .

में जाते और उठते ही रफ़अ यदैन है इसके अलावा नहीं (तो यह भी ग़लत है) क्योंकि अबू हुमैद ने दस सहाबा की जमाअत में नमाज़ पढ़ी और दो रकअत से उठ कर भी रफ़अ यदैन किया (और दस सहाबा ने उनको सच माना) और ये सब चीज़ें सही सनद से साबित हैं, उन (की सेहत) में कोई मतभेद नहीं अलबत्ता कुछ लोगों ने रिवायत के शब्द में कमी- बेशी से बयान किया है और इस तरह से ज़्यादा करना इल्म वाले के नज़दीक मक़बूल होती है।

और जो अबू बक्र बिन अय्याश रह॰ ने हुसैन और मुजाहिद के वास्ते से नक़्ल किया है कि इब्ने उमर रज़ि॰ नमाज़ में सिर्फ़ पहली बार हाथ उठाते। तो उसकी ख़ुद मुजाहिद ने मुख़ालिफ़त की है। क्योंकि वकीअ कहते हैं कि रबीअ कहता है कि मुजाहिद रह॰ ख़ुद रुकूअ में जाते और उठते समय रफ़अ यदैन करते थे। और जरीर लैस के वास्ते से बयान करते हैं कि मुजाहिद रह॰ रफ़अ यदैन करते थे और यही बात

قال صدقة ان الذی یروی حدیث مجاهد عن ابن عمر رضی الله تعالی عنهما انه لم یرفع یدیه إلا فی اول التکبیرة کان صاحبه قد تغیر بآخره والذی رواه الربیع ولیث أولی مع ان طاؤسا وسالما وابا الزبیر ومحارب بن دثار وغیرهم قالوا رأینا ابن عمر یرفع یدیه إذا کبر وإذا رکع .

(۱۰۳) قال مبشر بن اسماعیل ثنا تمام بن نجیح قال نزل عمر بن عبدالعزیز علی باب خلف فقالوا انطلقوا بنا نشهد الصلاة مع امیرالمؤمنین فصلی بنا الظهر والعصر ورأیته رفع یدیه حین رکع .

(۱۰٤) حدثنا محمد بن مقاتل (انبأ عبدالله) ثنا یونس عن الزهری ثنا سالم عن عبدالله بن عمر رضی الله تعالی عنهما قال رأیت رسول الله ﷺ إذا قام فی الصلاة رفع یدیه حتی یکونا حذو منکبیه وکان یفعل ذلك إذا رفع رأسه من الرکوع فیقول سمع الله لمن حمده ولا یفعل ذلك فی السجود .

इल्म वालों के नज़दीक सही है।

सदक़ह कहते हैं इस रिवायत के बारे में कि मुजाहिद रह. ने कहा इब्ने उमर रज़ि. ने न हाथ उठाए मगर पहली बार, तो अस्ल वजह यह है कि उसके साथी का आख़िरी उम्र में हाफ़िज़ा कमज़ोर हो गया था। इस लिए रबीअ रह. और लैस रह. के शब्द सही हैं।

और यह कि इब्ने उमर के शागिर्द ताऊस, सालिम, नाफ़ेअ, अबुज़्ज़ुबैर और मुहारिब बिन दसार वग़ैरह बयान करते हैं कि हमने उन्हें रफ़अ यदैन करते देखा है। नमाज़ के शुरू में भी और रुकूअ के वक़्त भी।

103. तमाम बिन नजीअ कहते हैं कि उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह. बाबे ख़ल्फ़ में उतरे तो हमने कहा चलो अमीरुल मोमिनीन के साथ नमाज़ अदा करें। इस तरह हमने ज़ुहर और अस्र की नमाज़ें उनके साथ पढ़ीं वह रुकूअ में रफ़अ यदैन करते थे।

104. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. फ़रमाते हैं कि अल्लाह के

(۱۰۵) حدثنا موسی بن اسماعیل ثنا حماد بن سلمة عن یحیی بن ابی اسحاق قال رأیت انس بن مالك ﷺ یرفع یدیه بین السجدتین.

قال البخاری : وحدیث النبی ﷺ أولی .

(۱۰٦) حدثنا علی بن عبدالله ثنا سفیان ثنا عمرو بن دینار عن سالم بن عبدالله قال سنة رسول الله ﷺ احق ان یتبع

(۱۰۷) حدثنا قتیبة ثنا سفیان عن عبدالکریم عن مجاهد قال لیس احد بعد النبی ﷺ الا یؤخذ من قوله ویترك الا النبی ﷺ

(۱۰۸) حدثنا فدیك. بن سلیمان ابو عیسی قال سألت الاوزاعی قلت یا ابا عمرو ما تقول فی رفع الأیدی مع کل تکبیرة وهو قائم فی الصلاة قال ذلك الامر الاول .

रसूल सल्ल. जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो भी कन्धों तक हाथ उठाते और रुकूअ से उठ कर भी करते और समिअल्लाहु लिमन हमिदह कहते और सज्दों में न करते।

105. यहया कहते हैं कि मैंने हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि. को देखा वह सज्दों के बीच भी रफ़अ यदैन करते थे। इमाम बुख़ारी रह. फ़रमाते हैं (किसी के कार्य के मुक़ाबले में) हदीस ज़्यादा हक़ रखती है कि उस पर अमल किया जाए।

106. हज़रत सालिम बिन अब्दुल्लाह कहते हैं रसूल सल्ल. की सुन्नत ज़्यादा हक़ रखती है कि उसकी पैरवी की जाए।

107. मुजाहिद रह. कहते हैं कि नबी सल्ल. के अलावा कोई ऐसी शख़्सियत नहीं कि हर किसी की बात मानी जाती है कोई छोड़ दी जाती है सिवाए नबी सल्ल. के।

108. फ़ुदैक बिन सुलैमान ने इमाम औज़ाई रह. से पूछा हर

1. इमाम साहब रह. का मक़सद यह है कि सहाबा किराम का अगरचे मक़ाम बहुत आला और ऊँचा है लेकिन सुन्नत के मुक़ाबले में किसी सहाबी के काम की कोई अहमियत नहीं है। और फिर हज़रत अनस रज़ि. से सही हदीस मरवी है जिसमें रुकूअ के वक़्त रफ़अ यदैन का ज़िक्र है और सज्दों का ज़िक्र नहीं है।

وسئل الاوزاعی عن الایمان وانا اسمع فقال : الایمان یزید وینقص فمن زعم ان الایمان لا یزید ولا ینقص فهو صاحب بدعة فاحذروه .

तकबीर के साथ रफ़अ यदैन है? तो उन्होंने कहा पहले इसी तरह था।

इमाम औज़ाई से ईमान के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा ईमान कम और ज़्यादा होता है जिसका यह ख़याल हो कि ईमान कम या

1. इमाम साहब रह॰ का मक़सद यह है कि हर उम्मती की सारी बातें बग़ैर तहक़ीक़ के क़बूल करने लायक़ नहीं होती, सिर्फ़ अल्लाह तआला का फ़रमान बग़ैर किसी दलील और तर्क के मान लेना चाहिए या फिर वह नबी सल्ल॰ का इर्शाद जो साबित हो जाए कि सच मुच आप सल्ल॰ का इर्शादे गिरामी है उसे किसी दलील और तर्क के मान लेना चाहिए। अल्लाह और रसूल के अलावा किसी उम्मती की वह बात क़बूल करने योग्य होगी जो ख़ुदा और रसूल के मुताबिक़ होगी।

इमाम साहब रह॰ ने इसमें इल्ज़ामी जवाब दिया है कि अगर इमाम औज़ाई रह॰ कहते हैं कि रफ़अ यदैन रुकूअ के वक़्त न करना चाहिए। जोकि उनके असर से साबित नहीं होता तो फिर उनके दूसरे क़ौल पर भी अमल करना चाहिए। क्योंकि उन्होंने फ़रमाया है कि जो शख़्स कहे कि ईमान में कमी और ज़्यादती नहीं होती वह बिदअती है और बिदअती की बात सुनने से बचो। यानी आज चूँकि अहनाफ़ का यही ख़याल होता है तो इस तरह तो फिर अल्लामा औज़ाई के कहने के मुताबिक़ उनकी कोई बात भी क़बूल करने योग्य नहीं होगी।

(۱۰۹) حدثنا محمد بن عرعرة ثنا جریر بن حازم قال سمعت نافعا قال کان ابن عمر رضی الله تعالی عنهما إذا کبر علی الجنازة رفع یدیه

(۱۱۰) حدثنا علی بن عبدالله ثنا عبدالله بن ادریس قال سمعت عبیدالله عن نافع عن ابن عمر رضی الله تعالی عنهما انه قال برفع یدیه فی کل تکبیرة علی الجنازة واذا قام من الرکعتین .

(۱۱۱) قال احمد بن یونس حدثنا زهیر ثنا یحیی بن سعید ان نافعا اخبره ان عبدالله بن عمر رضی الله تعالی عنهما کان اذا صلی علی الجنازة رفع یدیه

(۱۱۲) حدثنا ابو الولید ثنا عمر بن ابی زائدة قال رأیت قیس ابن ابی حازم کبر علی جنازة فرفع یدیه فی کل تکبیرة

(۱۱۳) حدثنا محمد بن ابی بکرالمقدمی ثنا ابو معشر یوسف البراء عن موسی بن دهقان قال رأیت ابان بن عثمان یصلی علی الجنازة برفع یدیه فی اول التکبیرة .

(۱۱٤) حدثنا علی بن عبدالله وابراهیم بن المنذر قالا ثنا معن بن

ज़्यादा नहीं होता वह बिदअती है उससे बचो।

109. नाफ़ेअ कहते हैं कि इब्ने उमर जनाज़ा पर तकबीरें कहते और रफ़अ यदैन भी करते।

110. दूसरी सनद कि इब्ने उमर रज़ि॰ जनाज़ा की हर तकबीर पर रफ़अ यदैन करते और दो रकअतों से उठ कर भी।

111. तीसरी सनद कि इब्ने उमर रज़ि॰ जनाज़े की नमाज़ में भी रफ़अ यदैन करते।

112. उमर बिन अबी ज़ाइदा कहते हैं मैंने क़ैस बिन अबी हाज़िम को देखा जनाज़ा की हर तकबीर पर रफ़अ यदैन किया।

113. मूसा बिन दुहक़ान कहते हैं मैंने अबान बिन उस्मान को देखा जानाज़े की पहली तकबीर पर रफ़अ यदैन किया।

114. अबुल ग़ुस्न कहते हैं मैंने नाफ़ेअ को देखा जनाज़े की हर

عيسى ثنا ابوالغصن قال رأيت نافع بن جبير يرفع يديه فى كل تكبيرة على الجنازة .

(١١٥) حدثنا محمد بن المثنى ثنا الوليد بن مسلم قال سمعت الاوزاعى عن غيلان بن انس قال رأيت عمر بن عبدالعزيز يرفع يديه مع كل تكبيرة يعنى على الجنازة .

(١١٦) حدثنا على بن عبدالله ثنا زيد بن الحباب ثنا عبدالله بن العلاء قال رأيت مكحولا يصلى على الجنازة يكبر عليها اربعا ويرفع يديه مع كل تكبيرة .

(١١٧) حدثنا على بن عبدالله ثنا ابو مصعب صالح بن عبيد قال رأيت وهب بن منبه يمشى مع جنازة فكبر اربعا يرفع يديه مع كل تكبيرة.

(١١٨) حدثنا على بن عبدالله ثنا عبدالرزاق انا معمر عن الزهرى انه كان يرفع مع كل تكبيرة على الجنازة .

(١١٩) قال وكيع عن سفيان عن حماد سألت ابراهيم فقال: يرفع يديه مع اول تكبيرة .

(١٢٠) وخالفه محمد بن جابر عن حماد عن ابراهيم عن علقمة عن عبدالله ان ابا بكر وعمر رضى الله عنهما

तकबीर पर रफ़अ यदैन करते।

115. ग़ैलान बिन अनस कहते हैं मैंने उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह॰ को देखा जनाज़े की चार तकबीरों पर रफ़अ यदैन करते।

116. अब्दुल्लाह बिन अला कहते हैं मैंने मकहूल रह॰ को देखा जनाज़े की चार तकबीरों पर रफ़अ यदैन करते।

117. सालेह बिन उबैद कहते हैं मैंने वहब बिन मुनब्बह को जनाज़े के साथ चलते देखा उन्होंने चार तकबीरें कहीं और हर एक के साथ रफ़अ यदैन किया।

118. हज़रत ज़ुहरी रह॰ भी जनाज़े की तकबीरों के साथ रफ़अ यदैन करते थे।

119. वकीअ से मरवी है कि हम्माद ने इबराहीम से पूछा तो

قال البخارى : وحديث الثورى اصح عند أهل العلم مع انه قد روى عن عمر ﷺ عن النبى ﷺ من غير وجه انه رفع .

(١٢١) حدثنا محمد بن يحيى قال[قال] على ما رأيت من مشيختنا الا يرفع يديه فى الصلاة .

قال البخارى قلت له : سفيان كان يرفع يديه ؟ قال : نعم .

قال البخارى : قال احمد بن حنبل : رأيت معتمرا ويحيى بن سعيد وعبدالرحمن واسماعيل يرفعون أيديهم عند الركوع وإذا رفعوا روسهم

(١٢٢) حدثنا على بن عبدالله ثنا ابن ابى عدى عن الاشعث قال: كان الحسن يرفع يديه فى كل تكبيرة على الجنازة .

उन्होंने कहा नमाज़ में पहली तकबीर के साथ रफ़अ यदैन कर ले।

120. और मुहम्मद बिन जाबिर से मुख़ालिफ़ रिवायत है अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि॰ कहते हैं कि अबू बक्र और उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा सिर्फ़ पहली बार नमाज़ में रफ़अ यदैन करते।

इमाम बुख़ारी रह॰ फ़रमाते हैं कि सौरी की हदीस इल्म वालों के नज़दीक ज़्यादा सही है और यह कि हज़रत उमर रज़ि॰ से भी हदीस मरवी है कि आप रफ़अ यदैन किया करते थे।

121. अली बिन मदीनी कहते हैं कि हमारे उस्तादों में से कोई भी ऐसा न था जो रफ़अ यदैन न करता हो।

इमाम बुख़ारी रह॰ फ़रमाते हैं मैंने पूछा सुफ़ियान बिन उययनह भी रफ़अ यदैन करते थे फ़रमाया हाँ।

इमाम बुख़ारी रह॰ फ़रमाते हैं मैंने देखा मअमर, यहया बिन सईद, अब्दुर्रहमान और इस्माईल रुकूअ जाते और उठते वक़्त रफ़अ यदैन करते थे।

122. अशअस रह॰ कहते हैं हसन बसरी रह॰ भी जनाज़े की हर तकबीर के साथ रफ़अ यदैन करते थे।

بسم الله الرحمن الرحيم

جزء رفع اليدين للسبكي

للشيخ تقي الدين سبكي المتوفى ٧٥٦

١ : عن ابن عمر رضي الله عنهما أن رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم كان يرفع يديه حذو منكبيه إذا افتتح الصلاة وإذا كبر للركوع وإذا رفع رأسه من الركوع رفعهما كذلك رواه البخاري ومسلم

٢ : وفي رواية البيهقي (فما زالت تلك صلاته حتى لقي الله)

٣ : عن أبي قلابة أنه رأى مالك بن الحويرث (إذا صلى كبر ورفع يديه إذا أراد أن يركع رفع يديه وإذا أراد رفع رأسه من الركوع رفع يديه وحدث أن رسول الله صلى الله عليه وسلم صنع هكذا) رواه البخاري ومسلم ؞

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

1. इब्ने उमर रज़ि. से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल. उठाया करते थे अपने दोनों हाथों को अपने कन्धों तक जब नमाज़ शुरू करते और जब रुकूअ के लिए तकबीर कहते और जब अपना सर रुकूअ से उठाते तब भी इसी तरह दोनों हाथ उठाते। बुख़ारी और मुस्लिम ने इसकी रिवायत की है।

2. और बैहक़ी की रिवायत में है हमेशा रही इसी तरह नमाज़ आपकी जब तब कि अल्लाह तआला से मुलाक़ात की।

3. अबू क़लाबह से रिवायत है उन्होंने मालिक बिन हुवैरिस रज़ि. को देखा जब नमाज़ पढ़ते तकबीर कहते और अपने दोनों हाथों को उठाते जब इरादा करते रुकूअ करने का, अपने दोनों हाथों को उठाते और जब चाहते रुकूअ से सर उठाने का, अपने दोनों हाथ उठाते और

٤ : وفيه في سنن أبي داود عن مالك بن الحويرث قال رأيت رسول الله صلى الله عليه وسلم يرفع يديه إذا كبر وإذا ركع وإذا رفع رأسه من الركوع ؞

٥ : عن وائل بن حجر رضي الله عنه وهو من أولاد الملوك (أنه رأى رسول الله صلى الله عليه وسلم رفع يديه حين دخل في الصلوة كبر وصفهما حيال أذنيه ثم التحف بثوبه ثم وضع يده اليمنى على اليسرى فلما أراد أن يركع أخرج يديه من الثوب ثم رفعهما ثم كبر فركع فلما قال سمع الله لمن حمده رفع يديه) رواه مسلم في صحيحه ورواه البخاري في كتاب رفع اليدين ؞

हदीस बयान करते थे कि अल्लाह के रसूल सल्ल. भी इसी तरह किया करते थे। इसको बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।

4. और इस बारे में सुनने अबू दाऊद में मालिक बिन हुवैरिस से रिवायत है कहा मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल. को अपने दोनों हाथ उठाते देखा जब तकबीर कहते और जब रुकूअ करते और जब रुकूअ से अपना सर उठाते।

5. वाइल बिन हिज्र रज़ि. से रिवायल है जो एक शाहज़ादे हैं उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्ल. को देखा अपने हाथ उठाते जब नमाज़ में दाख़िल होते और तकबीर कहते कहा कि कानों तक उठाते थे फिर लपेट लेते थे अपने कपड़े में फिर दाहिना हाथ बाएँ पर रखते थे। फिर जब रुकूअ करना चाहते थे तो निकालते थे अपने हाथों को कपड़े से फिर उन दोनों को उठाते फिर तकबीर कहते और रुकूअ करते फिर जब समिअल्लाहु लिमन हमिदह कहते तो अपने दोनों हाथ उठाते। इसको मुस्लिम ने अपनी सहीह में और बुख़ारी ने किताबु रफ़इल यदैन में रिवायत किया है।

٦ : وعن ابي حميد الساعدي رضي الله عنه في عشرة من اصحاب رسول الله صلى الله عليه واله وسلم منهم قتادة وابو اسيد وسهل بن سعد ومحمد بن مسلمة (قال كان رسول الله صلى الله عليه واله وسلم اذا قام الى الصلوة استقبل القبلة ورفع يديه ثم ركع ورفع يديه ثم رفع راسه ورفع يديه) رواه جماعة منهم ابو داؤد والبخاري في كتاب رفع اليدين وغيرهما باسانيد صحيحة واصله في البخاري ۔

٧ : عن انس رضي الله عنه ان رسول الله صلى الله عليه وسلم كان يرفع يديه اذا دخل في الصلوة واذا ركع واذا رفع راسه من الركوع) رواه ابن ماجة مرفوعا والبخاري في كتاب رفع اليدين موقوفا والبيهقي مرفوعا بعضهم يزيد على بعض وسنده صحيح ۔

6. अबू हुमैद साइदी रज़ि॰ जो अल्लाह के रसूल सल्ल॰ के उन दस सहाबियों में से हैं कहते हैं उनमें क़तादा, अबू उसैद, सहल बिन सअद और मुहम्मद बिन मुसलमह रज़ियल्लाहु अन्हुम कि नबी सल्ल॰ जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो अपना रुख काबा की तरफ़ करते और अपने दोनों हाथ उठाते फिर अपना सर उठाते (रुकूअ के लिए) तो दोनों हाथ उठाते फिर अपना सर उठाते (रुकूअ से) उठाते अपने दोनों हाथों को। इसको एक जमाअत ने रिवायत किया है इनमें से अबू दाऊद और बुख़ारी जुज़ रफ़उल यदैन में और इनके अलावा औरों ने भी सही सनदों के साथ और इसकी अस्ल बुख़ारी में है।

7. रिवायत है अनस रज़ि॰ से कि अल्लाह के रसूल सल्ल॰ रफ़अ यदैन करते थे जब नमाज़ में दाख़िल होते और जब रुकूअ करते और रुकूअ से अपना सर उठाते। इसको इब्ने माजा ने मरफ़ूअन और बुख़ारी ने किताबु रफ़इल यदैन में मौक़ूफ़न और बैहक़ी ने मरफ़ूअन रिवायत किया है। शब्द किसी-किसी में ज़्यादा हैं और इसकी सनद सही है।

٨ : عن ابي هريرة رضي الله عنه قال رايت رسول الله صلى الله عليه وسلم يرفع يديه في الصلاة حذو منكبيه حين يفتتح الصلاة وحين يركع واذا رفع للسجود ، رواه ابو داؤد والبخاري في كتاب رفع اليدين ۔

٩ : عن جابر بن عبد الله رضي الله عنهما قال (كان رسول الله صلى الله عليه وسلم في صلوة الظهر يرفع يديه اذا كبر واذا رفع راسه من الركوع) رواه ابن ماجه والبيهقي واللفظ له ۔

١٠ : عن ابي موسى رضي الله عنه قال هل اريكم صلوة رسول الله صلى الله عليه وسلم فكبر ورفع يديه للركوع ثم قال سمع الله لمن حمده ورفع يديه ثم قال هكذا فاصنعوا) رواه الدارمي ۔

8. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ से रिवायत है कि कहा देखो मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल॰ को अपने हाथों को नमाज़ में बराबर अपने मूंढों तक उठाते देखा जब नमाज़ शुरू करते और जब रुकूअ करते और जब उठते सज्दे के लिए। इसको अबू दाऊद ने और बुख़ारी ने किताबु रफ़इल यदैन में रिवायत किया है।

9. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि॰ से रिवायत है कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल॰ ज़ुहर की नमाज़ में अपने हाथों को उठाते थे जब तकबीर कहते और जब रुकूअ से अपने सर उठाते थे। इसको इब्ने माजा और बैहक़ी ने रिवायत किया है और शब्द बैहक़ी के हैं।

10. अबू मूसा रज़ि॰ ने कहा क्या मैं तुम्हें अल्लाह के रसूल की नमाज़ दिखाऊँ?फिर तकबीर कही और अपने दोनों हाथ रुकूअ के लिए उठाए फिर कहा समिअल्लाहु लिमन हमिदह और अपने दोनों हाथ उठाए फिर फ़रमाया इसी तरह किया करो। इसको दारमी ने रिवायत किया है।

11. अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि॰ से रिवायत है कि उन्होंने लोगों की

١١ : عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ الزُّبَيْرِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا (أَنَّهُ صَلَّى بِهِمْ يُشِيْرُ بِكَفَّيْهِ حِيْنَ يَقُوْمُ وَحِيْنَ يَرْكَعُ وَحِيْنَ يَسْجُدُ وَحِيْنَ يَنْهَضُ قَالَ مَيْمُوْنٌ فَانْطَلَقْتُ إِلَى ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا فَقَالَ إِنْ أَحْبَبْتَ أَنْ تَنْظُرَ إِلَى صَلَاةِ رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاقْتَدُوْا بِصَلَاةِ ابْنِ الزُّبَيْرِ) رَوَاهُ أَبُوْ دَاوُدَ ؁

١٢ : عَنْ أَبِيْ بَكْرِ الصِّدِّيْقِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ كَانَ يُصَلِّيْ هٰكَذَا (يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوْعِ وَقَالَ صَلَّيْتُ خَلْفَ رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ فَكَانَ يَفْعَلُ مِثْلَ ذٰلِكَ) رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ وَقَالَ رُوَاتُهُ ثِقَاتٌ ؁

١٣ : عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ (رَأَيْتُ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا كَبَّرَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوْعِ) رَوَاهُ الدَّارَقُطْنِيُّ ؁

इमामत की अपने दोनों हाथों को क़याम के वक़्त भी उठाया और रुकूअ के वक़्त भी उठाया और रुकूअ से उठते वक़्त भी और (दो रकअतों से) खड़े होने के वक़्त भी।

12. मैमून ने कहा कि मैं इब्ने अब्बास के पास गया उन्होंने कहा अगर अल्लाह के रसूल सल्ल॰ को महबूब रखते हो तो तुम इब्ने ज़ुबैर की नमाज़ की पैरवी करो। इसको अबू दाऊद ने रिवायत किया है।

13. अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ से रिवायत है कि वह इसी तरह नमाज़ पढ़ते थे यानी जब नमाज़ शुरू करते तो अपने हाथों को उठाते और जब रुकूअ से अपना सर उठाते। और फ़रमाया मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल॰ के पीछे नमाज़ पढ़ी तो आप इसी तरह पढ़ा करते थे। इसको बैहक़ी ने रिवायत किया है और कहा है कि इसके सारे रावी भरोसेमंद हैं।

14. उमर बिन ख़त्ताब रज़ि॰ से रिवायत है कि उन्होंने कहा कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल॰ को देखा अपने दोनों हाथों को उठाते जब तकबीर कहते और और जब रुकूअ से अपना सर उठाते। इसको दारे क़ुली ने रिवायत किया है।

١٤ : عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِيْ طَالِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ (أَنَّهُ كَانَ إِذَا قَامَ إِلَى الصَّلٰوةِ الْمَكْتُوْبَةِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ وَيَصْنَعُ مِثْلَ ذٰلِكَ إِذَا قَضٰى قِرَاءَتَهُ وَأَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ وَيَصْنَعُهُ إِذَا رَفَعَ مِنَ الرُّكُوْعِ) رَوَاهُ أَبُوْ دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارَقُطْنِيُّ وَالطَّحَاوِيُّ وَالْبُخَارِيُّ فِيْ كِتَابِ رَفْعِ الْيَدَيْنِ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ حَسَنٌ صَحِيْحٌ ؁ وَسُئِلَ أَحْمَدُ عَنْهُ فَقَالَ صَحِيْحٌ ؁

١٥ : عَنْ عُمَرَ اللَّيْثِيِّ قَالَ (كَانَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ مَعَ كُلِّ تَكْبِيْرَةٍ فِي الصَّلَاةِ الْمَكْتُوْبَةِ) رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ ؁

١٦ : عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ (قَالَ رَأَيْتُ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ رَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا أَرَادَ أَنْ

हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि॰ से रिवायत है कि वह जब फ़र्ज़ नमाज़ के लिए खड़े होते तकबीर कहते और अपने दोनों हाथ कन्धों तक उठाते और इसी तरह करते जब अपनी क़िरअत पूरी करते और रुकूअ करने का इरादा करते और जब रुकूअ से उठते तो इसी तरह करते। इसको अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, नसाई, इब्ने माजा, दारे क़ुली, तहावी और बुख़ारी ने किताबु रफ़इल यदैन में रिवायत किया है और तिर्मिज़ी ने हसन सहीह कहा है। और इमाम अहमद रह॰ से इसके बारे में पूछा गया तो उन्होंने फ़रमाया यह सही है।

उमर लैसी से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल॰ अपने दोनों हाथों को उठाते थे हर तकबीर के साथ फ़र्ज़ नमाज़ों में। इसको इब्ने माजा ने रिवायत किया है।

बरा बिन आज़िब रज़ि॰ से रिवायत है कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल॰ को देखा जब नमाज़ शुरू करते तो अपने हाथ उठाते और जब

يركع وإذا رفع رأسه من الركوع ، رواه الحاكم ثم البيهقي ؛

١٧ ، عن النضر بن كثير ، قال صلى إلى جنبي ابن طاؤس فكان
إذا سجد السجدة الأولى فرفع رأسه منه رفع يديه تلقاء وجهه
فقال ابن طاؤس رأيت أبي يصنعه وقال إني رأيت ابن عباس
رضي الله عنهما يصنعه ولا أعلم إلا أنه قال كان النبي صلى الله عليه
وآله وصحبه وسلم يصنعه ، رواه أبو داؤد والنسائي ؛

١٨ ، عن حميد بن هلال قال حدثني من سمع الأعرابي يقول رأيت
رسول الله صلى الله عليه وآله وصحبه وسلم وهو يصلي يرفع
رواه أبو نعيم الفضل بن دكين حديث مرسل ؛

١٩ ، عن قتادة أن رسول الله صلى الله عليه وآله وصحبه و

चाहते रुकूअ करना और जब अपना सर रुकूअ से उठाते। इसको हाकिम और बैहक़ी ने रिवायत किया है।

नज्र बिन कसीर से रिवायत है कहते हैं कि मेरे पास खड़े होकर ताऊस ने नमाज़ पढ़ी, जब वह पहला सज्दा करके सर उठाते थे तो अपने हाथ मुंह तक उठाते थे। इब्ने ताऊस कहते हैं कि मैंने अपने बाप को इसी तरह करते देखा, वह कहते थे मैंने इब्ने अब्बास रज़ि. को इसी तरह करते देखा और मैं जानता हूँ उन्होंने कहा अल्लाह के रसूल इसे करते थे। इसको अबू दाऊद और नसाई ने रिवायत किया है।

हुमैद बिन हिलाल से रिवायत है कि मुझ से उसने कहा जिसने देहाती से सुना कहते थे मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल. को देखा कि आप नमाज़ पढ़ने में रफ़अ यदैन किया करते थे। इसको अबू नईम फ़ज़्ल बिन दुकैन ने रिवायत किया है, यह हदीस मुरसल है।

क़तादा रज़ि. से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल. अपने हाथों को उठाते थे जब रुकूअ करते और रुकूअ से सर उठाते। इसे अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने अपनी जामेअ में रिवायत किया है।

سلم كان يرفع يديه إذا ركع وإذا رفع ، رواه عبد الرزاق
في جامعه ؛

٢٠ ، حديث آخر مرسل عن الحسن أن النبي صلى الله عليه
وآله وسلم كان إذا أراد أن يكبر رفع يديه لا يجاوز أذنيه
وإذا رفع رأسه من الركوع رفع يديه لا يجاوز أذنيه ، رواه
أبو نعيم الفضل بن دكين في كتاب الصلاة ؛

٢١ ، حديث عن سليمان ، أن رسول الله صلى الله عليه
وآله وصحبه وسلم كان يرفع يديه في الصلوة ، رواه
مالك في الموطا ؛

عدة الصحابة الذين نقل عنهم رواية عن النبي صلى
الله عليه وسلم أبو بكر وعمر وعثمان وعلي وطلحة

दूसरी हदीस मुरसल हसन रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्ल. जब तकबीर करने का इरादा करते थे तो अपने हाथ उठाते और इसे कानों से ज़्यादा ऊँचा न करते और जब रुकूअ से अपने सर उठाते तो कानों से ज़्यादा ऊपर न ले जाते। इसे अबू नईम फ़ज़्ल बिन दुकैन ने किताबु स्सलात में रिवायत किया है।

सुलैमान से एक हदीस मरवी है कि अल्लाह के रसूल सल्ल. नमाज़ में रफ़अ यदैन किया करते थे। इसको मालिक ने मोत्ता में रिवायत किया है।

चारों ख़लीफ़ा और वे दस सहाबा जिनको दुनिया में जन्नत की ख़ुशख़बरी दी गई थी और अन्य सहाबा कुल 43 हैं जिनसे आप सल्ल. का रफ़अ यदैन करना मरवी है।

1. अबू बक्र, 2. उमर, 3. उस्मान, 4. अली, 5. तलहा, 6. ज़ुबैर, 7. सअद, 8. सईद, 9. अब्दुर्रहमान बिन औफ़, 10. अबू उबैदह बिन

والزبير وسعد وسعيد وعبد الرحمن ابن عوف وأبو
عبيدة بن الجراح ومالك بن الحويرث وزيد بن ثابت و
أبي بن كعب وابن مسعود وأبو موسى وابن عباس والحسين
بن علي والبراء بن عازب وزياد ابن الحارث وسهل بن سعد
وأبو سعيد الخدري وأبو قتادة وسليمان وعمرو بن العاص
وعقبة بن عامر وبريدة وأبو هريرة وعمار بن ياسر و
صدي ابن عجلان وعمير الليثي وأبو مسعود الأنصاري
وعائشة وأبو الدرداء وابن عمر وابن الزبير وأنس ووائل
بن حجر وأبو حميد وأبو أسيد ومحمد بن مسلمة وجابر و
عبد الله بن جابر البياضي وأعرابي صحابي فهؤلاء ثلثة وأربعون
صحابيا رضي الله عنهم رواة منهم الخلفاء الراشدون
والعشرة المبشرة المشهود لهم بالجنة ۞
العلماء القائلون برفع اليدين الصحابة لم يستثن منهم

जर्राह, 11. मालिक बिन हुवैरिस, 12. ज़ैद बिन साबित, 13. उबई बिन कअब, 14. इब्ने मसऊद, 15. अबू मूसा, 16. इब्ने अब्बास, 17. हुसैन बिन अली, 18. बरा बिन आज़िब, 19. ज़ियाद बिन हारिस, 20. सहल बिन सअद, 21. अबू सईद ख़ुदरी, 22. अबू क़तादा, 23. सुलैमान, 24. अम्र बिन आस, 25. उक़्बा बिन आमिर, 26. बरीरह, 27. अबू हुरैरह, 28. अम्मार बिन यासिर, 29. अदी बिन अजलान, 30. उमर लैसी, 31. अबू मसऊद अन्सारी, 32. आइशा, 33. अबू दरदा, 34. इब्ने उमर, 35. इब्ने ज़ुबैर, 36. अनस, 37. वाइल बिन हिज्र, 38. अबू हुमैद, 39. अबू उसैद, 40. मुहम्मद बिन मुसलमा, 41. जाबिर, 42. अब्दुल्लाह बिन जाबिर अल बयाज़ी, 43. एक देहाती ये कुल 43 सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम हैं इन रावियों में ख़ुलफ़ाए राशिदीन भी हैं और वे दस सहाबा

واحد ولم يصح عن أحد منهم تركه ۞
ومن التابعين فمن بعدهم علماء أهل مكة و
المدينة والحجاز واليمن والشام وأكثر أهل العراق
والبصرة وأكثر أهل خراسان منهم سعيد بن جبير وعطاء
ابن رباح ومجاهد والقاسم بن محمد وسالم بن عبد العزيز
والنعمان ابن أبي عباس والحسن البصري وابن سيرين و
طاوس ومكحول وعبد الله بن دينار ونافع والحسن بن
مسلم وقيس بن سعد وابن المبارك وعامة أصحابه ۞
ومحدثوا أهل بخارى منهم عيسى ابن موسى وكعب بن سعيد
ومحمد بن سلام وعبد الله ابن محمد المسندي والأوزاعي

जिन्हें जन्नत की ख़ुशख़बरी दी गई है वे भी हैं। और वे उलमा जो रफ़अ यदैन करने के कहने वाले हैं।

रफ़अ यदैन पर सहाबा का इज्माअ

जो सहाबा हैं उनमें से एक भी बाक़ी नहीं। उनमें से किसी से रफ़अ यदैन न करना सही नहीं।

रफ़अ यदैन के कहने वाले ताबईन और अइम्मए दीन ताबईन रह. और उनके बाद के मक्का के उलमा

मदीना, हिजाज़, यमन, शाम और ज़्यादा तर इराक़ वाले और बसरा वाले और अक्सर ख़ुरासान वाले रफ़अ यदैन के कहने वाले हैं जैसे सईद बिन जुबैर रह., अता बिन अबी रबाह रह., मुजाहिद रह., क़ासिम बिन मुहम्मद रह., सालिम बिन अब्दुल अज़ीज़ रह., नोमान बिन अबू अब्बास रह., हसन बसरी रह., इब्ने सीरीन रह., ताऊस रह., मकहूल रह., अब्दुल्लाह बिन दीनार रह., नाफ़ेअ रह., हसन बिन मुस्लिम रह., क़ैस बिन सअद रह., इब्ने मुबारक रह., और उनके आम शागिर्द और बुख़ारी के मुहद्दिस जैसे ईसा बिन मूसा रह., कअब बिन सईद रह., मुहम्मद बिन

وَمَالِكُ ابْنُ أَنَسٍ فِي مَشْهُوْرِ قَوْلِهِ وَالشَّافِعِيُّ وَأَحْمَدُ وَإِسْحٰقُ وَيَعْقُوْبُ وَالْحُمَيْدِيُّ وَابْنُ الْمَدِيْنِيِّ وَابْنُ مَعِيْنٍ وَأَهْلُ الظَّاهِرِ ؛

وَذَهَبَ الْأَوْزَاعِيُّ وَالْحُمَيْدِيُّ وَجَمَاعَةٌ غَيْرُهُمَا إِلَى أَنَّهُ وَاجِبٌ وَأَنَّهُ يُفْسِدُ الصَّلَاةَ بِتَرْكِهِ وَمِنَ الدَّلِيْلِ لِوُجُوْبِهِ أَنَّ مَالِكَ بْنَ الْحُوَيْرِثِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ رَأَى النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَصَحْبِهِ وَسَلَّمَ يَفْعَلُهُ فِي الصَّلَاةِ وَقَالَ لَهُ وَلِأَصْحَابِهِ ، صَلُّوْا كَمَا رَأَيْتُمُوْنِيْ أُصَلِّيْ وَالْأَمْرُ لِلْوُجُوْبِ

وَ... رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا إِذَا رَأَى رَجُلًا لَا يَرْفَعُ يَدَيْ... ...صَى ؛

सलाम रह॰, अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी रह॰, इमाम अहमद रह॰, इस्हाक़ याक़ूब रह॰, हुमैदी इब्ने मदीनी रह॰, इब्ने मईन और अहले ज़ाहिर।

रफ़अ यदैन वाजिब है

और औज़ाई रह॰, हुमैदी रह॰ और उनके अलावा एक जमाअत का मसलक यह है कि रफ़अ यदैन वाजिब है और नमाज़ में इसको छोड़ देने से नमाज़ फ़ासिद हो जाती है। इसके वाजिब होने पर एक दलील यह भी है कि मालिक बिन हुवैरिस रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी सल्ल॰ को नमाज़ में रफ़अ यदैन करते देखा और आप सल्ल॰ ने उनसे और उनके साथियों से फ़रमाया। इसी तरह नमाज़ पढ़ा करो जिस तरह तुमने मुझे नमाज़ पढ़ते देखा और हुक्म देना वाजिब होने के लिए आता है।

रफ़अ यदैन न करने वालों की सज़ा

इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा जब किसी आदमी को देखते कि वह रफ़अ यदैन नहीं करता तो उसे कंकरियाँ मारते।

والله سبحانه و تعالیٰ اعلم بالصواب واليه المرجع والمآب۔

(तमाम प्रशंसा अल्लाह के लिए यह किताब पूरी हुई)